खाली घर



कथा संग्रह

नारायण यादव

खाली घर

नारायण यादव



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-88421-84-3

दाम : ₹ 200/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

KHALI GHAR
Collection of Short Stories by Sh. Narayan Yadav



परमपूज्य मामा स्व. बिशेश्वर सल्हैता, ममियौत श्री सच्चिदानंद सल्हैता, अग्रज श्री जय प्रकाश यादव आओर समस्त मैथिली भाषीकेँ चरण कमलमे सादर, सस्नेह समर्पित...

नारायण यादव

दू शब्द

नारायण यादवजी साहित्यक जिज्ञासु कथाकार छैथ। रचनाधर्मीक जिज्ञासासँ मन भरल-पूरल छैन मुदा नोकरी पेशामे रहने समयाभावक चलैत जेतेक चाहि रहला अछि ओतेक लिखैक संयोग नहि बनि रहल छैन। ओना, आब सेवानिवृत्त भऽ गेला मुदा पसरल जिनगी रहने समैयक अभाव किछु-ने-किछु बाधा उपस्थित करिते छैन।

सोलह कथाक 'खाली घर' संग्रह छैन। जइमे गामक परिवेशकेँ नीक-सँ-नीक उजागर केने छैथ।

आशा अछि ताजिनगी अहिना लिखैत रहता।

जगदीश प्रसाद मण्डल

जगदीश प्रसाद मंडल
4/11/2018

बेरमा

4 नवम्बर 2018

पोथीक मादे

मैथिली साहित्य जगतमे पैघ-पैघ रचनाकार सभ दिन होइत रहला जे अपना लेखनीसँ समाजकेँ प्रकाश देखेबाक प्रयास केलैन। कहल गेल अछि जे साहित्य समाजक दर्पण छी। ऐ बातक सार्थकता कथाकार श्री नारायण यादवजी अपन रचित कथा संग्रह 'खाली घर'मे कथाक माध्यमसँ सिद्ध केला हेन।

श्री नारायण बाबू बहुमुखी प्रतिभाक धनी बेकती छैथ। ओ एकटा सफल कथाकार, कवि एवम् समालोचकक रूपमे सेहो मैथिली साहित्याकाशमे अपन स्थान बनौलैन अछि।

'खाली घर' हिनक दोसर कथा छी। संग्रह ऐ पोथीमे कुल सोलह गोट कथा अपन-अपन स्थान लेने अछि। कथा सभ समाजिक परिवेशपर आधारित अछि। ओना, किछु लोक कथा सेहो आएल अछि जेकरा श्री यादवजी लिपिवद्ध केलैन अछि। ओना, बेसी कथा कथाकारक मूल रचना छी जे रोचक अछि।

'प्रेमक नोर' संग्रहक पहिल कथा छी। अखन जेकरा दूटा-तीनटा बेटी भऽ जाइ छैन ओ बड़ दुखी भऽ जाइ छैथ। सबहक आकांक्षा रहैत अछि जे कम-सँ-कम एकटा बेटो हुअए। 'प्रेमक नोर' कथाक माध्यमसँ कथाकारक कहब छैन जे, जँ बेटीकेँ पढ़ा-लिखा कऽ योग्य बना देल जाए

तँ ओ बेटोसँ बढ़ि कऽ भऽ जाएत। कथाकार कहै छैथ जे बेटी देख झखू जुनि बल्कि ओकरा पढ़ा-लिखा कऽ योग्य बनाऊ।

'गिफ्ट' कथामे माइक त्याग बेटाक लेल दर्शौल गेल अछि। जखन भोलाक दिलमे हजारो छेद भऽ जाइत अछि आ ओ भयंकर रूपसँ बीमार भऽ जाइत अछि तँ एक दिन ओ अपना माए- लालकाकीसँ पुछैत अछि 'माए तों हमरा अगिला जनम दिनपर कोन तरहक गिफ्ट देबही।'

तैपर लालकाकी कहलखिन- बेटा, तोरा हम अठारहवाँ जनम दिनपर ओ गिफ्ट देबह जे गिफ्ट आइ धरि कियो माए अपना बेटाकेँ नै देने हेतैक।'

जखन भोला खूब बीमार भऽ जाइत अछि तँ ब्रह्मानन्द काका आ लालकाकी ओकरा लऽ डॉक्टर ओतए जाइत अछि। डॉक्टर साहैब भोलाक शरीरसँ दिल निकालि ओइ जगहपर लालकाकीक शरीरसँ दिल निकालि कऽ प्रत्यारोपण करैत छथिन। जेकर किछुए दिनक बाद लालकाकी मरि जाइ छैथ।

कथा- 'हृदय परिवर्त्तन' सेहो माए बेटापर आधारित कथा अछि। एकटा बेटा जे शिक्षक पिताक मरलाक बाद हरदम माएकेँ गारि-फज्झैत करैत रहै छल। जखन माएकेँ पेंशन स्वीकृत कराबए पटना गेला आ दूटा सज्जन जे महालेखाकार कार्यालय पटनामे कर्मचारी छला, ओ बुढ़ीकेँ बड़ सम्मान केलखिन आ बुढ़ीक बनौल बटखर्चा सेहो खेलखिन। ओ दुनू सज्जन बुढ़ीसँ कागज लऽ ऑफिस जा काज करा दइ छथिन आ बुढ़ीसँ कहै छथिन- मायजी, अहाँक बेटा बड़ भाग्यशाली अछि जे अहाँसन माय ओकरा भेटलै।'

ओइ सज्जनकेँ अपन माए मोन पड़ि जाइ छैन आ हुनका आँखिसँ टप-टप नोर गिरए लगै छइ। ई देख कऽ बेटाक हृदय परिवर्त्तन भऽ जाइत अछि आ ओ माइक पैरपर गिर क्षमा मांगैत अछि।

‘खाली घर’ ऐ संग्रहक केन्द्रीय कथा छी। माए-बाप केतेक अरमानसँ बेटाकेँ पालि-पोसि पढ़बैत-लिखबैत अछि। मुदा बेटाकेँ जखन [illegible] अबै छै तँ वएह बेटा माए-बापकेँ प्रताड़ित करैत [illegible]।

प्रस्तुत कथामे केशब बाबू चटिया सभकेँ ट्यूशन पढ़ा अर्जित पाइसँ अपन बेगरताकेँ पूरा करैत एकटा नीक मकान बना लइ छैथ। जखन केशब बाबूकेँ पुतोहु एलैन तँ कहए लगलैन जे अहाँ सभ घर खाली कऽ दियअ, हमरा रहएमे दिक्कत होइत अछि। मुदा केशब बाबू पुतोहुक बातपर कोनो धियान नै दऽ रहल छला। संयोगसँ एक दिन कोनो बातपर केशब बाबू अपना पोताकेँ एक थापर मारलखिन। पोता खूब जोरसँ कनैत अपना माए लग गेल। बेटाक कानबसँ माए यानी केशब बाबूक पुतोहु2 केशब बाबूकेँ गारि-फज्झैत करैत घर खाली करए लेल कहलकैन। तखैन केशब बाबूक बेटा सुरेश गामपर नै छल। जखन सुरेश घरपर आएल तँ पत्नी ओकरा कानि-कानि कहलक जे आइ बुढ़बा बौआकेँ बड़ मारलक हेन। बौआ हुचैक-हुचैक कनैत छल। जखन हम बुढ़बासँ कहलिऐ जे बौआकेँ किए मारलिऐ तँ ओ हमरेसँ झगड़ा करए लगला आ हमरा बड़ गारि फज्झैत देलैन। ई कहि ओ कानए लगली।

पत्नीक कानबसँ सुरेश आगिबबूला भऽ गेला आ केशब बाबूसँ कहलकैन- ‘अहाँ जल्दीसँ घर खाली कऽ दियअ। हमरा सभकेँ बड़ दिक्कत होइए।’

बेटाक बातसँ केशब बाबूकेँ बड़ चोट लगलैन। आ ओ दुनू परानी फँसरी लगा कऽ आत्महत्या कऽ लेलैन। ऐ तरहेँ केशब बाबू सदा-सदाक लेल घर खाली कऽ देलखिन।

प्रस्तुत कथामे कथाकार- श्री नारायण यादवजी एक तरहक समाजक चित्रण करबामे पूर्ण सफल भेला हेन जे हुनक विद्वताक

परिचायक अछि।

संग्रहक आनो-आन कथा जेना ‘नसीहत, ‘भाय-बहिन, ‘परिवारक महत्व, ‘मित्र हेतु वरदान’ आ ‘प्रेम विवाह’ सभ रोचक आ शिक्षाप्रद अछि।

ऐ लेल कथाकार श्री नारायण बाबूकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

नन्द विलास राय

भपटियाही सखुआ

15 नवम्बर 2018

प्राकथन

भाषा विज्ञानक विधामे गद्य आ पद्य दू फराक-फराक विधा अछि। भाषागत प्रकृति यद्यपि अलग-अलग अछि। भाषायी प्रवाह आ संम्प्रेषणीयतामे अन्तर छैक। मुदा विद्वानक मत अछि कि 'गद्यं कवीनां निकर्ष बदन्ति' यानी गद्य पद्यक कसौटी अछि।

कथा कहानी पढ़ब, सुनब हमर आदत छल। जखन वाल्यावस्थामे छलहुँ तखनेसँ नाना-नानी, दादा-दादी, चाचा-चाची आ बुर्जुगसँ किस्सा कहानी सुनैत छलहुँ। दादी नानी जखन लोरी गाबि-गाबि किस्सा सुनबैत अछि, तखन बच्चा मंत्र मुग्ध भय भावनाक सागरमे गोता लगबय-लगैत अछि। एकर असर बच्चापर पड़ैत अछि आ अपना परिवारक बड़-बुर्जुगपर भावनात्मक लगाव बढ़ि जाइत अछि। आऔर वैह भाव बच्चाकैं संबेदनशील नागरिकक रूपमे परिणत करैत अछि। संयुक्त परिवारपर आधारित किछु किस्सा लिखल गेल अछि। जाहिमे बालपनहिसँ बच्चामे सहयोगक भावना जागृत होइत अछि। एहि पोथीमे छोट-पैघ सोलह गोट कथा लिखल गेल अछि। जे सोलहो श्रृगांरसँ भरल-पुरल रहबाक प्रयास कैल गेल अछि। किछु कथा बचपनमे नानी-दादी आ बुर्जुगक मुहसँ सुनल छल जे मौखिके छल। तेकरो लिपिवद्ध कय रहल छी। सोलहो कथा किनकोपर आक्षेप कय नहि लिखल गेल अछि आ जँ किनको बुझाइन जे घटना हमरहिपर आधारित अछि तँ हुनकासँ क्षमा याचना करैत छी। युगक परिवर्त्तन भय गेल अछि। लोक अपन पेट

काटि कऽ बाल-बच्चा लेल आशियाना बनबैत छथि। अपना लेल बेड रूप, जाहिमे बच्चा पढ़ैत अछि डाइनिंग रूप, बाथ रूम आ किचेन रूप बनबैत अछि। मुदा माय-बापक लेल पैरेन्टस रूम नहि बनबैत छथि। जखन कि वास्तविकता यैह अछि जे यैह पैरेन्टस रूममे अहाँक भविष्य सुरक्षित अछि। कारण अहाँक बच्चा जखन नमहर होयत, तखन अहाँक बेड रूम ओ कब्जा कय लेत। अहाँ बुढ़ाड़ी अवस्थामे कतय जायव। तखन अहाँक आवास बाहर बहरघारामे बनबऽ पड़त, जे अहाँक लेल कष्टप्रद होयत। एहिपर आधारित 'खाली घर' पोथी अहाँ लोकनिक समक्ष प्रस्तुत कय रहल छी।

हम ई पोथी 'स्वान्त: सुखाय'क हेतु लिख रहल छी। अन्त:करणक सुख हेतु। कोनो साहित्यकारक रचना अपन सन्तान सदृश्य होइत अछि। जेना सन्तानक हेतु माता-पिताकेँ पालन-पोषण-शिक्षा-दीक्षा हेतु कोन-कोन बेलना ने बेलय पड़ैत अछि। तहिना अपना रचनाक हेतु चाहे गद्य हुअए अथबा पद्य वा कोनो प्रकारक रचना हुअए, अपन सन्तान सदृश्य शब्द आ वाक्यक मेल जे करय पड़ैत अछि। रचना रूपी सन्तान प्राय: बेटीए होइत अछि। जेना बेटीक पालन-पोषण, पढ़ाइ-लिखाइ कयलाक बादो सभ किछु लय कऽ चल जाइत अछि। तहिना पोथी लिखू, छपाऊ ओहिपर धन खर्च करू। आ छपलाक बाद लोक सभमे पढ़बाक हेतु बाँटि दियौक। किछु दय कऽ नहि जाइत, तहिना बेटी होइत अछि ओ जायत तँ लैये कऽ जायत।

कुमारिल भट्टक ओ पाँति मोन पड़ैत अछि जाहिमे ओ लिखने छथि-

'गच्छत: स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादत:

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समाद्धति सज्जना:'

जे चलै छै वैह गिरै छै। जे चलबे नहि करत ओ गिरत केना।

गिरलासँ दुर्जन हँसैत अछि आ सज्जन (ज्ञानी) ओकरा उठा कऽ सान्त्वना दैत छथि। पुन: स्व. कविवर सीता राम झाजीक ओ पाँति याद अबैत अछि-

'चलनिहार संयोगवस पथपर पिछड़ि खसैछ।

सुजन संभारथि हाथ धय, दुर्जन देखि हसैछ।।'

"खाली घर" पोथी अपने लोकनिक आगाँ परोसि रहल छी। अपने एकरा पढ़ब आ एकर नीक बेजायक बारेमे जरूर मार्ग निर्देशित करब।

प्रसिद्ध साहित्यकार आलोक भारती (हिन्दी) कमलकान्त झा,, प्रो. शिवकुमार 'निखिलेश', मो. सदरे आलम गौहर, जगदीश प्रसाद मण्डल, उमेश मण्डल धन्यवादक पात्र छथि जे कथा आ कविता लिखऽमे हमरा उत्साह वर्द्धित करैत रहलाह। पोथी छपयबामे उमेश मण्डलजीक सहयोगकेँ हम बिसैर नहि सकै छी। नन्द विलास रायकेँ हृदयक असीम गहराईसँ धन्यवाद दैत छियैन जे पोथीक पाण्डुलिपिकेँ पढ़ि भुलल-भटकल वाक्य वा शब्दकेँ सुसज्जित करबामे सहयोग कयलथि।

एहि पोथीकेँ सृजन करबामे हमर दुहिता देवता कुमारी, पत्नी सुमित्रा देवी, पौत्र जीवितेश कुमार, भातिज संजय कुमार, पौत्री हिमाक्षी कुमारी आ शिष्य रविशेखर 'सुमन'क सहयोग भेटल, अत: सभकेँ हृदयसँ धन्यवाद दय रहल छी।

पुन: पाठक लोकनिकेँ कोटिश: अभिनन्दन, वन्दन आ नमन करैत छी, जे असल मूल्यांकन कयनिहार तँ अहीं छी।

विद्वतजनक चरणानुरागी

नारायण यादव

पूर्व प्रधानाचार्य

+2 उ.वि. जयनगर

कथाक सत्तैर-

प्रेमक नोर

बात ओहि समयक थिक। जखन रामू काकाकेँ तेसर बेटीक जन्म भेल छलैन्ह। हमरा भोरमे टहलबाक आदत अछि। भोरे उठि जखन दू-तीन किलोमीटरसँ टहलि वापस भेल रही तँ देखै छी जे रामू काका माथपर हाथ नेने, मुँह लटकौने बैसल छथि। हम तँ पहिने बड़ आश्चर्यचकित भेलहुँ। जे रामू काका एकटा हसमुख चेहरा आ मजकियल लोक छलाह। गाम भरिक लोक सभ हुनकासँ खुश रहै छल किएक तँ ओ केहनो आफद-विपत आ मुसिबतमे पड़ल लोककेँ हँसबैत रहैत छलाह। से आई मनहुस कियैक भेल छथि? हम हिनकर चिंताकेँ भाँपि नहि सकलहुँ। मुदा एकाएक पुछि देबैक सेहो नीक नहि बुझना जाइत छल। कियैक तँ जखन ओ भेटैत छलाह तँ कहैत छलाह जे मॉरनिंग-वाकसँ आबि गेलहुँ।

कहु तँ स्टेशन कय डेग भेल। स्टेशनकेँ नपबाक भार रामू काका हमरेपर छै जे अहाँ कहै छी।

तँ ककरापर छैक भोरे उठि स्टेशनपर चक्कर अहाँ दैत छी आ नपबाक भार हमरापर रहत।

भोरमे टहलबाक मजा दोसर छैक रामू काका। आ हमहींटा थोरे टहलै छी। हमर मित्र लोकनि अपन घरबालीक संग टहलैत छथि। आर जे अकेले रहैत छथि हमरा संग जाइत छथि, जेना सत्य नारायण बाबू, जय नारायण बाबू, राजवीर बाबू, बड़ा बाबू, लाइब्रेरियन साहेब,

दीपकजी, विजय बाबू, युगेश्वर बाबू। सुबहक मौरनिंग वाक्सँ बड़ लाभ होयत छैक। रामू काका जकरा कोनो तरहक ब्लड प्रेसर छैक, मधुमेह , थाइराइड छैक, डिप्रेशन छैक, आदि-आदि सभ बीमारीक दवाई छैक माॅंरनिंग वाक। आ जकरा कोनो बीमारी नहि छैक तकरा लेल तँ सोनामे सुगन्ध भय जाइत छैक। ओहि आदमीकेँ जाबत टहलैत रहत तावत् कोनो बीमारी भैये नहि सकैत अछि।

रामू काका जखन भेटि जाइत छलाह तँ एहि प्रकारक गप्प-सप हंसी-मजाक होइत छल। मुदा आजुक माहौल अजीव छल। रामू काकाक चिन्तित मुद्रा देखि हम हुनका नजदीकमे बैसि रहलहुँ आ कहलहुँ-

“रामू काका कने तम्बाकू खुऔ।”

रामू काका चुन-तम्बाकू दैत बजलाह-

“हौ तो तँ तम्बाकू नहि खाइत छलह। कहियासँ खाय लगलह?”

हिनक चिन्तित मुद्रा भंग भेल। हम बजलहुँ-

“रामू काका से तँ ठीके कहलहुं। हम तँ तम्वाकू नहि खाइत छी। मुदा अहाँक उदास मुद्रा देखि, हमहु चिंतित भय गेल छलहुँ। अहाँक चितिंत आ उदासी मुद्रा देखि ओहि मुद्राकेँ भंग करबाक हेतु चुन-तम्बाकूसँ बात शुरू कयलहुँ।”

हम चुनौटीसँ तम्बाकू निकालि ओहिमे चुन दय लगवय लगलहुं। आ रामू काकाकेँ दैत बजलहुँ-

“रामू काका, सभ ठीक-ठाक अछि की नहि?”

“की ठीक रहत कपार फेर बेटिये भेल।”

हमरा हंसी लाइग गेल आ हम खूब जोरसँ हँसैत बजलहुँ-

“रामू काका, अहाँ बड़ भाग्यशाली लोक छी। जे तीनटा बेटी

भेल। साक्षात लक्ष्मी-सरस्वती आ पार्वतीक जन्म अहाँ ओहिठाम भेल अछि। हम एहि अवसरपर अहाँकेँ मुबारक दैत छी। एहिमे दुःखी होयबाक कोनो प्रश्ने नहि अछि। बेटी एहेन सुख थिक, जकरापर ईश्वर मेहरवान छथि, ओकरे बेटी होइत अछि।"

बेटी स्त्री अछि, बेटी नारी अछि, बेटी फुलवारी अछि, बेटी दर्पण आ दर्शन अछि। बेटी सीता अछि, बेटी सावित्री अछि, बेटी माता अछि, बेटी बलिदानक गाथा अछि, बेटी श्रीमद् भागवत गीता अछि, बेटी अछि तँ संसारमे सभ सुख भेटत। माय-बापक जे सेवा बेटी करत ओ बेटा कथमपि नहि करत। तेँ, बेटी भेल ताहि लेल अपने एतेक दुखी छी?

रामू काका हमरापर खौझाइत बजलाह-

"यौ मास्टर साहेब, अहूँ हमरासँ मजाक करैत छी, हमरा खौझा रहल छी। अहाँकेँ होइत अछि की हम बेटी जनमावऽ बला मशीन छी। देखू मंगलाकेँ ओ केहेन मरियल अछि आ ओकरा दू-दूटा बेटे छैक। हमर ई तेसर बेटी अछि। सभ हमर मजाक उड़बैत होयत। आब हम एहि समाजमे मुँह देखयबाक योग्य नहि रहि सकलहुँ। हमरा बेटीसँ बड़ नफरत भय गेल अछि। आओर हमरा तीन-तीनटा बेटिये अछि।"

रामू काका अहाँकेँ बेटीसँ कियैक एतेक नफरत भय गेल अछि। बेटी नहि रहत तँ एहि संसारक श्रृष्टि कोना होयत। यदि बेटीसँ नफरत अछि तँ बियाह कियैक कयलहुँ। बेटीसँ नफरत अछि तँ मायक कोखसँ जनम कियैक लेलहुँ, माएओ तँ बेटीक रूप थिक। रामू काका, ओ आब युग-जमाना नहि अछि जे बेटी समाजक कोढ़ बनत। बेटीक उँचाई आब बेटासँ बेसी छैक। कोन एहेन विधा अछि जाहिमे बेटी, बेटासँ कम छैक से देखू तँ बेटा जखन जबान होयत तँ की करत की नहि से कियो नहि जानैत अछि। जुआरी, शराबी, व्यभिचारी, लूच्चा, लम्पट आदि भय सकैत अछि। बेटी कहियो शराबी, जुआरी, चोर, डकैत नहि भय सकैत

अछि। देखू जे डकैती, लूट, अपहरण बेटे नहि करैत अछि। पैघ-पैघ लोकक जेना- पैघ हाकीम, मंत्री, विधायक आ सांसदक बेटा लूट, डकैती, अपहरणक अंजाम दय रहल अछि। तँ बेटीकेँ पोसू-पालू आ शिक्षित बनाउ। एकटा बेटी शिक्षित होयत तँ दूटा परिवार शिक्षित होयत। आ एकटा बेटा शिक्षित होयत तँ मात्र एकटा पुरुष शिक्षित होयत। रामू काका, अहाँ अपन चिन्ताकेँ त्यागू आ बेटा-बेटीमे फर्क नहि राखू। देखैत नहि छिऐक जे शशिकान्त बाबूक बेटी यू.पी.एस.सी. परीक्षामे तेसर स्थान प्राप्त कयलक अछि। हे यौ रामू काका, अपना गाममे बेटाक कमी छैक कहाँ ककरो बेटा एहेन पद प्राप्त कयलक अछि।

रामू काका जे मनहूस छलाह से आब मन हुलसगर भेलैन्ह। ओ मनोयोगसँ तीनू बेटीक लालन-पालन आ समुचित शिक्षाक व्यवस्था केलैन्ह।

किछु दिनक उपरान्त तीनू बेटीक पढ़ाई-लिखाई चलय लागल। तीनू बेटीक नाम सीता, गीता आ सावित्री छल। पढ़य-लिखयमे तीनों एकपर एक छल। पहिल बेटी सीता वी.पी.एस.सी. कम्पलिट कयलैन्ह। दोसर बेटी- गीता डॉक्टर भेलीह आ तेसर बड्ड पैघ बैज्ञानिक भय देशक सेवा करय लगलीह। तीनू बेटीक बियाह योग्य बरसँ विनु दान-दहेजेक भय गेल।

रामू काकाक तीनू बेटीक शादीमे हम गेल छलहुँ। आई रामू काकाक खुशी देखि हम कहलियैन्ह-

“रामू काका, जाहि दिन तेसर बेटीक जन्म भेल छल ताहि दिन अहाँ कतेक उदास रही। आब कहू जे बेटा पैघ आकि बेटी? आई एहि परोपट्टामे अहाँक परचम फहरा रहल अछि कि नहि? माय-बाप, बाल-बच्चाकेँ जन्म दैत छैक। मुदा भाग्यक निर्माण ओकर कर्त्तव्य करैत छैक।”

राम‍ू काका हमरा आगाँ हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ बजलाह-

“बौआ तोरे बोल भरोसपर हम जिंदा छी, एहिमे तोहर बड़ पैघ योगदान छह।”

राम‍ू काकाक आँखिसँ प्रेमक नोर बहै लगलैन्ह। ❑

नसीहत

राधा अपन बेटाक बियाह बड़ धूम-धामसँ भेल छल। राधाक छोट बेटा मनीष पढ़ऽ–लिखऽमे बड़ तेज छल। मैट्रीकक परीक्षामे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयने छल। क्रमागत इन्टर, बैचलरमे सेहो नीक स्थान प्राप्त कयलैन्ह। मनीषकेँ नीक नौकरी भेट गेलैन्ह। आब हुनक माय राधा देवी ब्याकुल रहय लगलीह। जे कखन मनीषक शादी करावी। मनीषक बियाह समीपेक गामक गिरधारी बाबूक बेटीसँ भेल। गिरधारी बाबू शहरमे रहैत छलाह। गिरधारी बाबूक पत्नी सुमित्रा देवी पैघ विचारवान महिला छलीह। कहियो सुमित्राक वाणीसँ केकरो कष्ट नहि भेल हेतन्हि। हिनक सिद्धान्त छलैन्ह जे कम खाऊ, गम खाऊ, कम बाजू, जे बाजू नापि-तौलि कऽ बाजू। हिनका कवीर साहेबक ओ वाणी हमेशा दिमागमे नचैत रहैत छल जे 'ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।'

सुमित्राजीक कथन छल जे खुशी बाटनैसँ दू गुना वापस अबैत अछि आओर कनेक त्याग कयलासँ बहुकेँ पूरा घरपर राज भय जाइत अछि। एहि प्रकारक विचार सदिखन सुमित्राक मानस पटलपर नचैत रहैत छल। तेँ मुहल्लावासीपर ओकर राज चलैत छल। सभक विचारी सुमित्रे छली। सुमित्रा देवीकेँ एकटा बेटी छल। जेकर नाम रूपम छलैक। रूपम सभ दिन शहरे-बाजारमे रहल कियैक तँ हुनक पिताजी शहरेमे नौकरी करैत छल। रूपम पढऽ–लिखऽमे तेज छलीह। शहरक हवा-पानि

लागल छल। मुदा मायक नसीहतकेँ सदिखन याद रखने छल।

रूपम जखन 20-22 वर्षक भेलीह तखन सुमित्रा देवीकेँ बियाहक लेल उड़ी-बिरी लागि गेलैन्ह। जखन तखन रूपमक बापकेँ खोधियबै लगलीह। लड़काबला सभ लड़की देखबाक लेल आबय लागल। बियाह धरि कतेको लड़काबला लड़की देखय बास्ते आयल। कतेककेँ लड़की नहि पसिन भेलैन्ह तँ कतेककेँ घर नहि पसिन भेलैन्ह। एक-दू साल बहुतो खोज-बीन कैल गेल। तखन एकटा संभ्रान्त परिवारक लड़का जे सरकारी नौकरी करैत छल। तकरा संग बियाह ठीक भेल आ बियाह शहरेमे भेल। बारातीबला गामक छल। बियाह राधाक बेटा मनीषक संग सम्पन्न भेल। रूपम जे शहरक बाताबरणमे पलल-पोसल छल। रूपम जे कॉलेजमे नाना प्रकारक प्रतियोगितामे भाग लैत छल आ प्राइज प्राप्त करैत छल। अखबारक कूपन काटि ओकरा पेपरक फार्मेटपर साटि, अखबारबलाकेँ दैत छल। अहूमे ओकरा सर्व श्रेष्ट पुरस्कार भेटलैक। आब ओ सोचय लागल जे एहेने-एहने कम्पेटिशनमे प्राइज जितलहुँ। अभिनय कय पुरस्कार हासिल कयलहुँ। जे शहरमे रहय बाली ओ आब गाम-घरक आबो हवामे रहय लगलीह।

रूपम धीरे-धीरे अपनाकेँ गामक रंगमे धुलवय लगलीह। ओकरा अपन मायक नसीहत याद छलैक जे ‘खुशी वॉटि तँ दुगुना वापस होइत अछि’ आ जँ सासुरमे कनेक त्याग करी तँ पूरे घरपर राज कय ली। ओ सोचैत छलीह जे जेहेन बहय बयार पीठ ओम्हरे ओरी। तेँ ने बियाहमे 51 पल्ला साड़ी जे मैकेमे भेटल छल। ताहिमेसँ नीक-नीक साड़ी आधासँ अधिक सासु, ननदि निकालि लेलक मुदा ओ किछु नहि बजलीह। कियैक तँ ओकर माय सुमित्रा देवी ओकरा बाजऽसँ रोकलक। ससुरारिक रंगमे रंगा गेल। से आब ओकरो एहि बातक पता नहि चलल।

रूपमक तुरियाक एकटा ओकर ननदि रहथिन्ह। जकर शादी-बियाह नहि भेल छल। ओकरा संग हंसी-मजाक करैत, घरक सभ काम

करैत समय गुजैर रहल छल। ननदि सेहो भाउजकेँ सभ काममे भरपूर मददमे लागल रहैत छलीह। सासुक सेवा सर्वोपरि छल। सासु राधा अपन काम-धाममे मग्न रहैत छलीह। परिवारक बाताबरण स्वर्गोसँ बढ़ि कऽ भय गेलैक। परिवारक हालत एहेन भय गेल जे कोन काज कोना भय जाइत छल से ककरो पता नहि लगैत छल। राधा देवी बेटी आ पुतोहुक संग खूब नीक जकाँ घुलि मिली गेल छलीह। ओकरा सभक संग ओहो दैत छलीह। सभ कियो खूब हँसि मजाक करैत रहैत छल आ खूब जोर-जोरसँ ठहक्का दय हँसैत छलीह। रूपमक ससुर पुरान विचारधाराक छलाह। तेँ ठहाका सुनि दरबाजापर सँ खराम पटपटबैत आंगन अबैत छलाह। तँ सभ ठहाका बन्द भय जाइत छल। अंगना अबैत देरी दुनू ननदि-भौजाई नि:शब्द भय जाइत छलीह। ओ ससुरकेँ अबितहि देरी रूपम माथापर नुआ लय चटदय पैर छूबि गोर लागि लैत छलथिन्ह। एहिपर ससुर महराजक तामस, सहानुभूतिमे बदैल जाइत छल। आ पुन: चाह पीब दरबाजापर आबि जाइत छलाह। घरमे पुतोहु अयलापर हरसठे आंगन जायव उचित नहि बुझना जाइत छल। बुढ़-पुरानकेँ दिक्कत भय जाइत छैक। गप्पो-शप्पो करत तँ ककरा संग जँ पत्नी जीबित रहैत छन्हि तँ ओकरा संग सुख-दुख बाँटि लैत छथि। जिनका पत्नी नहि छन्हि ओकर जीवन तँ पहाड़ भय जाइत छैक। सासु अपन बेटी-पुतोहु संग जीवन नीक जकाँ विता लैत छथि। मुदा बुड़हाक जीवन पहाड़ भय जाइत अछि। जँ बेसी घर-आंगन कयलक तँ नाना प्रकारक अवलट लागय लगैत छैक।

एहि प्रकारे रूपम अपन व्यवहारसँ पूरा परिवारकेँ अपना कब्जामे कय लेलक। किछु दिनक बाद रूपमक पति जे सरकारी नौकरी शहरमे करैत छलाह, ओ रूपमकेँ शहर लय जेबाक जोगारमे छलाह। घरक सभ परिवारकेँ एहि बातक जानकारी भय गेलैक। सासु माँ राधा देवी, ननदि पिंकी आ प्रिया सेहो उदास भय गेलीह। रूपम ओकरा सभकेँ उदास देखि

ओकरो सभकेँ अपना साथ चलबाक आग्रह केलकन्हि। सभक मन भीतरसँ छेबे छल। सभ कियो शहर आबि गेलीह। मनीष समयसँ ऑफिस जाइत छलाह आ ऑफिससँ समयपर अबैत छलाह। आब हुनका ने कोनो खाइक चिन्ता आ ने टिफिनक चिन्ता रहैत छलैन्ह। समयसँ सभ किछु भेटि जाइत छलैन्ह। मनीषकेँ ऑफिस जेबाक बाद सासु-बहु आ ननद-भौजाईक प्रेम देखि अरोसिया-परोसिया आश्चर्य चकित रहैत छलीह। अरोस-परोसक महिला सभ रूपमक खूब प्रसंशा करय लागल। रूपम अपन प्रशंसा सुनि आर अधिक प्रेमसँ सासु-ननदिकेँ मान-दान करय लगैत छलीह। रूपमकेँ अपन मायक नसीहत हर हमेशा याद रहैत छल जे खुशी बाँटलासँ दुगुना वापस भय जाइत अछि आ कनेक त्याग कयलासँ पूरा घरपर राज भय जाइत अछि। तेँ कोनो ड्रेस जे रूपमक ननदिकेँ पहिरा दैत छलथिन्ह या खरीद दैत छलथिन्ह। सासु माँकेँ अपन नीक साड़ी पहिरऽ लेल दैत छलथिन्ह आ बाजार घुमा दैत छलथिन्ह। सासु, ननद अति प्रसन्न रहैत छलथिन्ह। सासु-ननदिक मन मुताविक स्वादिष्ट भोजन बनबैत छलीह। बिना-सासुसँ पुछने ओ कोनो काज नहि करैत छलीह। कहियो कहियो रूपमक प्रति मनीष अपन माय आ बहिनकेँ चिढ़बैत बाजैत छलाह कि माय ई रूपम जादूगरनी छौ। तोरो सभपर जादू ने कऽ दौ से सम्हरि कऽ रहियै। जादूक चक्करमे नहि पड़ि जइयैह। ई कहैत सभ कियो हँसै लगैत छल। एहि तरहेँ रूपम सभक दिल जीति नेने छल। एहि प्रकारे सभक दिन खुशी पूर्वक बितय लागल।

आब रूपमक ननदिक बियाहक चर्चा होमय लागल। पिंकीक शादी एकटा संभ्रान्त परिवारमे ठीक भेल। दुलहा कोनो नीक पदपर पदस्थापित छलाह। पिंकीक शादीमे रूपमक भूमिका बढ़िया रहल। राधा देवी रूपमकेँ अपना गलासँ लगबैत बजलीह जे बेटी भगवानक घरमे पूर्व जन्ममे नीक कर्म कयने छलहुँ जाहि कारणे अहाँ सन पुतोहु भेटल। ईश्वर सभकेँ एहेने बहु देथिन्ह। एतबे कहलासँ रूपमकेँ होइत छलैन्ह जे हमरा

पूरा सम्राज्य भेट गेल आ सासुक पैर घुबि रूपम बाजैत छलीह जे माय अहाँ सन सासु सभ बहुकेँ भेटै से हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी।

पिंकीक विदाईक समय रूपम बहुत कानल आ ओकरा आर्शीवाद देलक कि भगवान करै जे तोरो सासु एहेने होतहुन। पिंकीक बियाहक बाद रूपमकेँ मन नहि लागय लगलैक तँ दिनमे कैक बेर फोनसँ हाल-चाल पुछैत रहैत छलीह। शुरू-शुरूमे तँ सभ किछु ठीक-ठाक रहल। शुरूमे पिंकी सासु, ननद आ परिवारक सभ सदस्यक तारीफ करैत रहैत छल। किछु दिनक बाद जखन रूपम, पिंकीसँ बात करथि तँ पिंकीक नजरिया बदलल देखलक। पिंकी ससुरालक सभ सदस्यक शिकायत करैत रहल। पिंकीक माय यानी रूपमक सासु पिंकीकेँ मोबाइलपर फुटानीबला बात सिखबैत रहैत छलीह। जाहिसँ ओकर स्वभाव बिगरि गेल छल। परिवारमे एक दोसरासँ ताल मेल, सामजस्य नहि रहल। परिवारमे धीरे-धीरे कलहक पदार्पण भय परिवार टूटि गेल। रूपम जखन पिंकीसँ सम्वाद करथि तँ पिंकीक भाषा बिगरले जकाँ बुझाइन। पिंकी बाजथि-

“भाभी, सभ अहीं जकाँ नहि भय सकैत अछि।”

पिंकी घमंडी भय गेलीह। ओकरा हाकिमक घरबाली होयबाक घमंड छल। रूपम अपन माय बाली बात नसीहत पिंकीकेँ कहैत छल-

“पिंकी, खुशी बाँटलासँ दुगुना होइत छैक आ थोरेक त्याग कयलासँ बहुकेँ पूरे घरपर राज भय जाइत छैक। तँ अहाँ एहि मूल मंत्रसँ परिवारकेँ एक कय चलू।”

मुदा पिंकीक माय ओकरा पृथक-पृथक ढंगसँ घर फुटयबाक मंत्र दैत छलथिन्ह तँ पिंकीक नीयतमे खोंट आबि गेल छल। तेँ घर नरक बनि गेल छलैक।

एक दिन रूपम चाह लय सासु राधा देवीकेँ देबाक हेतु जा रहल छलीह। जेना बुझना गेलैन्ह जे सासु माँ फोनसँ गप्प कय रहल अछि।

रूपम दरबाजाक ओटमे ठाढ़ भय सभ बात सुनय लगलीह। शायद सासुकेँ पिंकीसँ बात भय रहल छल। राधा देवी अपना बेटी पिंकीकेँ सिखबैत छलीह जे तों अपन सासुकेँ बाहर घुमयबाक हेतु नहि लऽ जैहे। जखन तूँ आ जमाय बाबू एक साथ रहि एक-दोसराकेँ समझ। ननदि आकि सासुकेँ ने अपना संग कतौ लय जो आ ने ओकरा अपना संग बैसा कऽ खाइक लेल दही। तोहर भाभी तँ सुधगर महिला छौक ओकरा सन नहि बनबाक प्रयास करिहेँ।

रूपम चाहक ट्रे लय मने-मन सोचैत छली जे हमर सासु हमरा बेवकूफ आ सुधगर बुझैत अछि। रूपम चाहक ट्रेसँ चाह सासु-माँकेँ दैत बाजलि-

"किनकासँ गप्प करैत छलखिन्ह?"

राधा मिरमिराइत बाजलि-

"पिंकीसँ।"

रूपम अपन सासुक किरदानी देख नेने छल। साँझू पहर जखन रूपमक घरबला मनीषजी घर पर अयलाह, तखन सभ बात हुनका कहलथिन्ह। दुनू प्राणी विचार कयलैन्ह जे रवि दिन पिंकीक घर जा कय सभ परिवारकेँ मिला-जुला दियैक आ सासु-माँकेँ सेहो सभझा बुझा दियैक। राधाकेँ मनीष बहुत बुझौलक आ ओकरा अपना गलतीक एहसास करौलक।

रबि दिन रूपम आ मनीष पिंकीक घरपर पहुँचल। मनीष रूपमक नसीहतकेँ दोहराबैत पिंकीकेँ समझौलक जे खुशी बाँटलासँ दुगुना होइत छैक आ कनेक त्याग कयलासँ पूरा परिवारपर राज भय जाइत छैक। एहि सिद्धान्तपर चलबाक नसीहत दय परिवारक सभ सदस्यकेँ मिला देलैन्ह। सभक बीच जे दू बोला छल से समाप्त करा पुन: पिंकीकेँ अपन मायक नसीहतक पालन करबाक आग्रह करैत घर आबि गेल। ❑

ईमानदार चोर

चोर-चोर मसियौत भाय। दूटा चोर एक पैघ व्यापारीक घरमे चोरी करबाक हेतु पहुँचल। दुनू चोरक नाम पनमा आओर मखना छल। दुनू चोरी करबाक कलामे निपुण छल। कतबो सतर्क घरक मालिक कियैक नहि होथि मुदा जखन पनमा, मखनाक विचार ओहि मालिकक घरमे चोरी करबाक हेतैक तँ चोरी कइये लैत छल।

ओहि इलाकाक सबसँ पैघ व्यापारी छल। ओकर नाम करोड़ीमल छलैक। पनमा, मखना करोड़ीमलक घरमे चोरी करबाक लेल पहुँचल। जखन करोड़ीमलक पहरेदार सुति रहल तखन निशा भाग रातिमे पनमा मखना व्यापारीक घरमे सेंध काटय लागल, सेंध काटल भय गेल। तखन मखना सेंघमे अपन दुनू पैर दय सेंघक जाँच कयलक। पैरसँ सेंघक अगिला भागक जाँच कय, पुन: पैर बाहर कयलक। जखन ई बुझना गेलैक जे आब घरमे पैइसवामे कोनो बाधा नहि होयत। तखन ओ सेंघक वाटे घरमे पैइसबाक प्रयास करय लागल। जखन ओ पूरा सिर सेंघमे देलक आकि देबाल नीचा धसि गेल। मखना देबालक तरमे दवा कय मरि गेल। पनमा कतबो प्रयास कयलक जे मखनाकेँ खिंची ली से नहि भय सकल। अन्तमे भोर भय गेल। पनमा दोसर दिन राजाक ओतय जा कय नालिश कयलक, राजाक ओतय फर्द वयान ई देलक जे राति हम सभ करोड़ीमलक घरमे चोरी करबाक हेतु गेल रही। हमर संगी सेंघ कटलक आ ओहिमे प्रवेश करबाक हेतु घुसल आकि देबाल धसि गेल आ हमर

निर्दोष संगी मारल गेल। मालिक करोड़ीमलक कमजोर देबालक कारणेँ हमर संगी मारल गेल। हम सभ जाबत चोरी नहि कयलहुँ ताबत तक तँ निर्दोषे छलहुँ।

चोरोक एक अजीब दुनिया होइत छैक। राजाक बुद्धिसँ चोरक बुद्धि पैघ होइत अछि।

राजा पनमाक फर्द वयान (नालिशी) केँ स्वीकार कयलक। राजा चोरक नालिशीकेँ सुनवाई शुरू करय लगलैन्ह। राजा सिपाहीकेँ हुकुम देलैन्ह जे ओहि व्यापारीकेँ एतए उपस्थित करू।

राजाक आदेशानुसार ओहि व्यापारीकेँ न्यायालयमे बजाओल गेल। राजा व्यापारीसँ पुछलथिन्ह-

"सेठजी, अहाँक मकानक दिवाल कमजोर कियैक छल जे एकटा निर्दोष चोर सेंघमे दवा कय मरि गेल?"

व्यापारी बाजल-

"सरकार, चोर निर्दोष कोना छल?"

ताहिपर राजा बजलाह-

"जाबत चोर चोरि नहि कयने छल ताबत तँ ओ निर्दोषे छल। चोरीक वादे ने ओ दोषी होइताह। चोर मरि गेल अहाँक दिवालक कमजोरक कारणेँ तेँ हेतु अहाँकेँ फाँसीक सजा भेट रहल अछि।"

व्यापारी बजलाह-

"सरकार, एहिमे हम कोना दोषी भेलहुँ। हम तँ अपने मकान नहि बनौने छलहुँ। मकान तँ राजमिस्त्री बनौने छल।"

राजा बजलाह-

"हँ, अहाँ दोषी नहि छी, एहिमे राजमिस्त्री दोषी अछि। सिपाहीकेँ आदेश देलैन्ह जे व्यापारीकेँ छोड़ि दियौक आ ओकरा बदलामे राज

मिस्त्रीकेँ फाँसी दय देल जाए।"

राजाक हुकुम सुनि सिपाही व्यापारीकेँ बरी कय देलक। आ राजमिस्त्रीकेँ पकड़ि राजाक दरबारमे उपस्थित कयलक। राजा बजलाह-

"राज मिस्त्री अहाँ केहेने दिवाल जोड़लहुँ जे एकटा निर्दोष चोर दिवालमे दबि मरि गेल। दिवाल कमजोर जोड़लाक जूर्ममे अहाँकेँ फाँसी भेटल।"

राजमिस्त्री बजलाह-

"सरकार एहिमे हमर कोन दोष। हम तँ राजमिस्त्री थिकहुँ। गारा (मशाला) बनेनाई काम तँ हमर नहि अछि। हमर लेवर जे मशाला बना कय हमरा देत तकरेसँ हम जोड़ब। मशाला कमजोर बना कऽ दयलक तेँ दिवाल कमजोर भऽ गेल। एहिमे तँ हम निर्दोष छी। सरकार हमरा सन निर्दोष लोककेँ फाँसी दय कोन लाभ। फाँसी तँ दोषीकेँ देबाक चाही।"

राजा बजलाह-

"ई राजमिस्त्री ठीके कहैत छथि। राजमिस्त्रीकेँ छोईर दहक आ ओहि मजदूरकेँ फाँसी पड़बाक चाही।"

सिपाही लोकनि राजमिस्त्रीकेँ छोइड़ देलक आ ओहि मजदूरकेँ पकड़ि अनलक। राजा, मजदूरकेँ सामने बजौलक। राजा राजमिस्त्रीक बदला ओहि मजदूरकेँ फाँसीक सजा सुनौलक।

मजदूर अपन सफाईमे बाजल-

"सरकार, एहिमे हमर कोनो दोष नहि, कियैक तँ जखन हम मशाला (गारा) सिमेंट-वालु) मे पानि मिला रहल छलहुँ तखन हमरा पाछाँमे एकटा हाथी भरकि हमरा तरफ दौगल तँ पानि गाड़ा (मशाला)मे अधिक पड़ि गेल। तेँ मशाला गीला भय गेल आ तेँ दिवाल कमजोर भय गेल।"

राजा मजदुरक बात सुनि हाथीक महाउथकैं बजाबक आदेश देलैन्ह। तुरंत सिपाही हाथीक महाउथकैं बजौलक। आ आदेश पारित कयलक जे मजदूरकैं माँफ कय हाथीक महाउथकैं फाँसी देल जाए। हाथीक महाउथकैं अपन सफाई देबाक लेल कहल गेल। हाथीक महाउथ अपन सफाईमे बाजल-

“सरकार एहिमे हमर कोन दोष। हम हाथी लय कऽ आबि रहल छलहुँ ताहि बीच एकटा महिला झुनझूनाबला जेबर पहिर हाथीक बगलमे आयल। हाथी कंगनक आवाज सुनि भरकि गेल तँ एहिमे हम कतय दोषी भेलहुँ।”

राजाकैं महाउथक बात ठीक बुझैल। महाउथ निर्दोष साबित भेल। आब महाउथक बदला ओहि महिलाकैं दोषी मानलक। ओहि महिलाकैं सिपाही राजाक दरबारमे उपस्थित कयलक। महिलासँ अपन सफाई देबाक आदेश भेल। महिला बाजलि-

“सरकार, एहिमे हमर कोन दोष। हम जे गहना पहिरने छलहुँ से तँ अपने नहि बनौने छलहुँ। ओ तँ हम बाजारक सोनारसँ खरीदने छलहुँ। ई गलती तँ सोनारक छैक जे एहेन झुनझुनाबला गहना कियैक बनौलक। जे हम ओकरासँ खरीद कय पहिरलहुँ। ओ एहेन गहना नहि बनौतथि तँ हम झुनझुनाबला गहना नहि खरीदतहुँ आ नहि पहिरितहुँ। जँ ई गहना हम नहि पहिरतहुँ तँ हाथी नहि भरिकैत ने गाड़ामे अधिक पानि पड़ितैक आ ने सेठजीक दिवाल कमजोर होइतैक।”

राजा ओहि महिलाक बयानसँ सन्तुष्ट भेलाह। सैनिककैं आदेश देलथिन्ह जे एहि महिलाकैं बरी कय देल जाय आ एकरा बदलामे गहना बनौनिहार सोनारकैं फाँसी देल जाय।

तुरत सैनिक सोनारक खोजमे लागि गेल। सोनारकैं पकड़ि लौलक। राजाक सामने हाजिर केलक।

सोनारसँ राजा सफाई देबाक लेल कहलक।

सोनारकेँ अपन बचावमे कोनो जवाब नहि फुरैलैन्ह। राजाक सामने सोनार दोषी साबित भेल। राजा सोनारकेँ फाँसिक सजा सुना देलैन्ह।

एहि तरहे जल्लादकेँ सूचित कयल गेल जे सोनारकेँ फाँसीपर लटका दियौक। राजाक आदेश छल जे हत्याक बदला हत्यासँ लेल जाय। जल्लाद सोनारकेँ लय फाँसीक फन्दा ओकरा गर्दनमे लगौलक आ रस्सीकेँ ऊपर तरफ खिचिलक। संयोग नीक छल जे बेर-बेर फाँसीक फन्दा सोनारक गर्दनमे लगाओल जाय आ जहाँ ऊपर खिंचल जाय तँ फाँसीक फन्दा सोनारक गर्दनमे सँ निकलि जाय।

किछु देर ई सिलसिला जारी रहल मुदा सोनारक गर्दनमे फाँसीक फन्दा नहि टिकल। जल्लाद राजाक समीप पहुँचल तँ कहलक-

“सरकार, एहि सोनारक गर्दनमे फाँसीक फन्दा काम नहि करैत अछि। राजाक आदेश भेल मोट गरदैनबलाकेँ पकड़ि ला आ ओकरा फाँसी दय दहिन।”

आब दू गोट सिपाही मोटका गर्दनबलाकेँ खोजमे लागि गेल। किछु दूर गयलाक बाद एकटा मन्दिरपर बाबाजी चेला जकर गर्दन बड़ मोट छल तकरा पकड़ि लय गेल। बाबाजी चेला आ चेला गुरु किछु दिन पूर्वमे ओहि मन्दिरपर दोसर देशसँ आएल छल। चेलाक कथन छलैक ओ अपन गुरुकेँ कहलथिन्ह जे अपना सभ बर्त्तमान मन्दिरपर चलू कियैक तँ ओहि राजमे टके सेर भाँजी आ टके सेर खाजा छैक। सस्ता मधुर खरीद ओ दुनू गुरु-चेला खाय लागल। यद्यपि गुरुजी ओहि मन्दिरपर जयबासँ रोकलक। मुदा चेलाक जिद्दपर ओहो राजी भय गेल छलाह। आब गुरुजी एकटा तरकीब सोचलक। ओ चेलाकेँ कानमे किछु कहलैन्ह। कहलैन्ह-

“जखन तोहरा गर्दनमे फाँसीक फंदा लगौतुन्ह तखन हम तोहरा

गर्दनसँ फाँसीक फन्दा अपना गर्दनमे लगा लेव। जखन हम फाँसीक फन्दा लगवय लागव तखन हमरा गर्दनमे सँ फाँसीक फन्दा निकालि अपना गर्दनमे लगा लिहअ। ई शिलशिला ताबत धरि चलय दिहक जाबत राजा नहि पहुँच जाथि।"

राजाक सिपाही गुरुजीक चेलाकेँ पकड़ि राजाक दरबारमे उपस्थित कयलक। चेलाक संग गुरु सेहो दरबारमे उपस्थित भेलाह। राजाक हुक्मक आधारपर चेला जकर गर्दन वड़ मोट छल फाँसीक तख्तपर लय गेल आ फाँसीक फन्दा ओकरा गर्दनमे लगाओल गेल। एक, दू, तीनक आवाजक संग रस्सी खिंचत आकि गुरु दौड़ि कऽ ओहि तख्तपर पहुँच गेलाह। चेलाक गर्दनसँ फाँसीक फन्दा अपना गर्दनमे लगा लेलक आ सिपाहीकेँ कहलक हमरा फाँसी दिअ, एकरा छोड़र दियौ। सिपाही सैह करय लागल। मुदा पूर्व नियोजित कार्यक्रमक अनुसार गुरु-चेला बेरा-बेरी गुरुक गर्दनिसँ चेला आ चेलाक गर्दनिसँ गुरु फाँसीक फन्दा अपना गर्दनिमे लगावक हेतु प्रयासरत रहय लगलाह। एहि बातक सूचना सिपाही राजाकेँ देलैन्ह। राजा स्वयं आबि एहि गुरु-चेलाक कारनामाकेँ देखलैन्ह। ओ सिपाहीकेँ आदेश देलैन्ह जे फाँसीक प्रक्रिया ताबत बन्द करू जाबत हम अगिला आदेश पारित नहि करी। राजा ओहि दुनू गरु-चेलाकेँ अपना लग बजौलैन्ह। आ गुरुसँ पुछलैन्ह जे अहाँ दुनू व्यक्ति एना कियैक फाँसीपर झुलबाक हेतु तत्पर छी। गुरु राजाकेँ कानमे कहलक जे सरकार अखन एहेन मुहूर्त छैक जे फाँसीक फन्दापर झूलि जाइत ओ इन्द्र लोकक राजा होयत तेँ हम चाहैत छी जे हम फाँसीपर झूलि आ जाहिसँ इन्द्रलोकक राजा बनी औ चेला एहि मर्मकेँ जानैत छथि तेँ ओ इन्द्र लोकक राजा बनबाक आकांक्षा करैत छैथ। तेँ अपने निर्णय कय दीअ जे के इन्द्र लोकक राजा वनबाक योग्यता रखैत छथि?

राजा सोचलक जे एहि छोट-छीन राज्यक राजसँ बढ़िया जे हमहीं ने कियैक इन्द्र लोकक राजा बनी। ओ सिपाहीकेँ आदेश देलैन्ह जे एहि

दुनू गुरु-चेलाकेँ छोड़ि एहि नीक मुहूर्तमे हमरे फाँसीक फन्दापर झुला दे। सिपाही एहि दुनू गुरु-चेलाकेँ बकसि देलक आ राजाकेँ फाँसीक फन्दापर झुला देलक। गुरु-चेला राम-राम करैत अपना देश भागि कऽ चलि अयलाह। ❑

भाय-बहिन

मगध देशक राजा बरुणदेव छलाह। ओ महान प्रतापी, योद्धा, वीर, नीति-निपुण, कुशल प्रशासक आ प्रजा पालक राजा छलाह। बरुणदेवक न्याय प्रियता आ कला कौशलक प्रसंशा दूर-दूर तक फैलल छल। राजाक बियाह महान विदुषी आ सुन्नरि राजकुमारीक संग भेल छल। राजकुमारी दोसर देशक राजा अरुणदेवक जेष्ठपुत्री छलथिन्ह। रूप-रंग आहार-व्यवहार एतेक नीक छल जे राजा-पत्नीक प्रति समर्पित छलाह। बियाहो बड़ धू-धामसँ भेल छल। बहुत दिन धरि दाम्पत्य जीवनक निर्वहन करैत एगो बेटा आ एगो बेटीक प्राप्ति भेलैन्ह। पुत्रक नाम शिवधर आ पुत्रीक नाम गायत्री छल। शिवधर जेठ आ गायत्री छोट छलीह। राजा बरुणदेवक लार-प्यार आ मायक वात्सल्य प्रेमसँ शिवधर आ गायत्री परिपालित होइत रहलीह।

राजा दुनू सन्तानकेँ शिक्षा ग्रहण करयबाक हेतु योग्य शिक्षकक सानिध्यमे दय देने छलथिन्ह। समयक गति ससरैत रहल। राजा किछु आवश्यक कार्यार्थ राज्यसँ बाहर गेल छलाह। रानी अपन रनिवासमे पलंगपर सुतल छलीह। तावत् देखैत छथि जे मकानक भोन्टिलेटरपर जे खाली जगह छलैक, ओहिपर एकटा बगड़ा आ बगरनी खोंता लगाकय सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करै छल। दुनू पति-पत्नीमे बड़ प्रेम छल। बगरनी गर्भवती छलीह। दू-चारि दिनक बाद ओ अंडा देलक। अंडा जुएलाक बाद बच्चा सेहो भेलैक। बगरा आ बगरनी अपना बच्चाकेँ

चोंचसँ खाना खुआबैत छल। कोनो दुर्घटना बस बगरनीक निधन भय गेलैक। आब बगरा दोसर शादी कय दोसर बगरनीकेँ अपना घर (खोंता)मे अनलक। बगरनी जखन नव घरमे अयलीह तँ पूर्वसँ पालित बच्चाकेँ देखलक। बच्चाकेँ देखिते बगरनी ईर्ष्यासँ जरय लगलीह। एकान्त पाबि ओ बगराक बच्चाकेँ चोंचसँ नींचा गिरा देलक। ई दृश्य देखि रानी व्याकुल रहय लगलीह। बड़ चिंतित रहय लगलीह। सदिखन मनमे सोचथि जे एहि जिनगीक कोनो ठेकान नहि। जँ कहीं हमरो निधन भय जाए तँ हमरो बाल-बच्चाक संग एहि प्रकारक घटना न घटित भऽ जाए। एहि हालतमे रानी सोचलक जे ई बात राजाकेँ कहि राजासँ प्रतिज्ञा करावी जे हमरा मुइलाक बाद ओ दोसर बियाह नहि करथि।

राजाकेँ बाहरसँ अयलाक बाद रानी सभ बात राजासँ कहि सुनौलैन्ह। आ ओहो राजासँ प्रतिज्ञा करौलैन्ह जे जँ हमरा किछु भय जाय तँ अहाँ दोसर बियाह नहि करब।

राजा रानीक बात सुनि अचंभित भय गेलाह। राजा बजलाह-

“अहाँ ई अशुभ बात कियैक बजैत छी।”

रानी बजलीह-

“एहि जिनगीक कोन ठेकान।”

कालक्रमे समय बितैत गेल। समयक प्रवाहमे बहुतो परिवर्तन भेल। रानी महामारीक प्रकोपमे पड़ि गेलीह। डाक्टर इलाज करय लगलाह। मुदा ईश्वरक मर्जीक आगा ककरो किछु नहि चलैत अछि। ईश्वरक मर्जीक बगैर एकटा पत्तो नहि हिलैत अछि। आ रानी तेहेन रूसान ने रूसलीह जे बौसब कठिन भय गेल। श्राद्ध कर्म सम्पन्न भेल। राजा अपन प्रतिज्ञाक अनुसारे विवाह करब मनसँ निकालि देने छलाह। साल-दू-सालक बाद कुटुम्ब, महामंत्री आ शुभ चिन्तकक आग्रह पर राजा विवाह करबाक हेतु विचार करय लगलाह। लोक सभक कथन छल जे

राजाक राजपाट बिना रानीक चलौनाइ असम्भव अछि। राजाक मन डोलि गेलैन्ह आ ओ शादी कय लेलैथ। व्याहीसँ सगही वेशी दुलारू होइत अछि। राजाक सगही कनिया रानीक रिक्त पदकेँ भरलैथ। रानी अपन काम काज सम्हारलैन्ह। बियाही कनियाँक बाल-बच्चाक प्रति मनहि मन ईर्ष्याक भाव राखय लगलैन्हि। राजा बुद्धिमान छलाह। ओ अपन पुत्र शिवधरकेँ शिक्षा प्रदान करबाक लेल कोनो नीक स्कूलक छात्रावासमे रखबा देने छलथिन्ह। संयोगसँ विद्यालय किछु दिनक लेल बन्द भेल छल। तेँ शिवधर छात्रावाससँ घर आबि गेल छल।

एक दिनक बात छलैक। शिवधर गेन्द खेलाइत छल। गेन्द उछलि कऽ राजाक आंगनमे रानीक गोदमे आबि खसल। शिवधर दौगल अयलाह आ अपन सौतेली माँक गोदसँ गेन्द लय पड़ेलाह।

रानी नौकरानीसँ पुछलथिन्ह जे ई बालक के छल जेकरा ऐतेक हिम्मत भेलैक जे हमरा गोदीसँ गेन्द लय लेल। नौकरानी बाजलि-

“मालकिन ई बच्चा अहिंक सौतेला बेटा अछि आ एकटा बेटी सेहो अछि।”

रानी ईर्ष्यासँ अभिभूत भय दु:खी रहय लगलीह। हमेशा यैह सोचथि जे राजा अपना बाद एकरे राज पाट देथिन्ह। हमरासँ जनमल पुत्रकेँ राजा नहि बनौथिन्ह। ई धृतराष्ट्र जकाँ पुत्र मोहमे पड़ि गेलीह। दिनानुदिन रानी रूग्न रहय लगलीह। कतेक डॉक्टर-बैद्य आबय लगलाह आ इलाज करय लगलाह। मुदा दवाईक कोनो प्रभाव रानीपर नहि पड़लैन्ह। राजा सेहो दु:खी रहय लगलाह। राजा आब अधिक समय रानीपर देमय लगलथिन्ह। रानीकेँ कोनो रोग रहत तखन ने दवा-दारूसँ ठीक हेतैन्ह। राजा रानीसँ बार-बार पुछथिन्ह जे अहाँ कोना ठीक होयब। रानी राजासँ प्रतिज्ञा करौलैन्ह तकर बाद कहलैन्ह जे हमरा शिवधरक कोढ़-कलेजी आनि दिअ। तखन बीमारी ठीक होयत। राजा प्रतिज्ञा कय

चुकल छलाह। तें विवश भय जल्लादकें आदेश देलैन्ह जे शिवधरकें जंगलमे घुमयबाक हेतु लऽ जाऊ आ ओकरा मारि ओकर कोढ़-कलेजी नेने आऊ।

एमहर शिवधरक बहिन अपन सौतेली माँक मनोदशाकें भापि चुकल छलीह। गायत्री राजा-रानीक सम्वादसँ अवगत छलीह तँ ओ मायक गहना-जेबर आ किछु रूपया-पैसा लय जल्लादक पाछू-पाछू जंगल पहुँचलीह। शिवधरक बहिन कहय लगलथिन्ह जे यौ जल्लाद भाई लोकनि हमर माय अहाँ सभकें कतेक मानैत छलीह। अहाँ लोकनि जे धन सम्पति लेब से लीअ आ हमरा भाईकें छोड़ि दीऔन्ह। हमरा सौतेली मायकें कोनो बीमारी नहि छैक। आओर हमरा भाईकें मरेबाक प्लान अछि। तँ अहाँ लोकनि कोनो जानवरक कोढ़-कलेजी लय लीअ आ हमरा सौतली मायकें दय देबैन्ह आ कहबैन्ह जे ई शिवधरक कोढ़-कलेजी अछि।

गायत्रीक बात सुनि पहिने तँ जल्लाद लोकनि नाकर-कुकर केलैन्ह। मुदा बादमे धनक लोभसँ लोभित भय शिवधरकें एहि शर्तपर छोड़बाक हेतु तत्पर भेलाह जे ई कहियो अपना देश घुमि कऽ नहि आबथि।

शिवधर दुनू भाए-बहिनकें ई शर्त मानय पड़लैन्ह। आ गहना-जेबर रूपया पैसा लय शिवधरक जान बकैस देल गेल। शिवधर अपन देशकें छोड़ि दोसर देश चल गेलाह। आ शिवधरक बहिन गायत्री घुमि कऽ राज दरबारमे आबि रहय लगलीह। एमहर चांडाल लोकनि कोनो जानवरकें मारि, ओकर कोढ़-कलेजी लय रानीकें दय देलनि। रानी बड़ खुश भेलीह।

ओमहर शिवधर अपन देश छोड़ि दोसर देश चल गेलाह। राजदरबारमे जा राजा सेवा-सुश्रुषामे रहय लगलाह। राजा बेटा छलाहे

बड़ पैघ संस्कारी सेहो छलाह। राजा नि:सन्तान छलाह। तेँ शिवधरकेँ अपना बेटा जकाँ मानय लगलाह। शिवधरकेँ उच्च शिक्षा देबाक व्यवस्था कयलैन्ह। किछुए दिनमे शिवधर सर्वगुण सम्पन्न भय गेलाह। राजा सेहो वृद्ध भय गेलाह। शिवधरमे राज्योचित गुण देखि राजा हुनका अपन उत्तराधिकारी नियुक्त कय संयास धारण कय लेलथि।

एमहर राजा बरुणदेव सगही पत्नीक संग मिलि राजपाट चलबय लगलाह। बरुणदेवक पत्नी राजाकेँ अपन परिणय लीलामे जकरने रहली। राजा हर हमेशा पत्नीक जी-हुजुरीमे लागल रहैत छलाह। गंगा दशहराक दिन छल। गंगा स्नानक बहाना बना कय अपन सौतेली बेटी गायत्रीकेँ संग लय गंगाकात अयलीह। दुनू माय-बेटी गंगामे स्नान करय लगलीह। रानीक नियतमे खोंट छल। ओकर गायत्रीक प्रति ईर्ष्याक भाव जागि उठल। आ रानी गंगाक तेज धारामे गायत्रीकें धकेल देलक। गायत्री गंगामे दहा गेलीह। रानी कानैत-खिझैत घर अयलीह। किछु दुरक बाद राजा शिवधरक राज्य पड़ैत छल। संयोग नीक छल। शिवधर किछु सैनिककेँ लय शिकार खेलबाक प्रयोजनार्थ गंगाक किनारमे आयल छलाह। शिवधर गंगामे भसियैत वच्चियाकेँ देखि सिपाहीकेँ आदेश कयलाह जे एकरा गंगासँ ऊपर करू।

सिपाही भसियाइत गायत्रीकेँ ऊपर कयलक। गायत्री निर्वस्त्र भय गेल छलीह। राजा ओहि निर्वस्त्र कन्याकेँ अपन चादर पहिरा अपना दरबारमे बहिकरनीक रूपमे राखि लेलथिन्ह। गायत्री अपना भाईकेँ पहचानि गेलथिन्ह। ओ सोचय लगलीह जे ई तँ हमर भाई शिवधर थिकाह। राजा शिवधरोकेँ गायत्रीक प्रति विशेष स्नेह रहैत छल।

एक समयक बात छल। राजा शिवधरक राज्यमे बड़ पैघ मेला लागल छल। राजा ओहि मेलामे भाग लेबाक हेतु चललाह। ओ बहिकरनी लग जाकय पुछलथिन्ह- “गै बहिकरनी, मेलासँ तोरा लेल की

नेने अयवौ से कह।"

वहिकरनी बजलीह- "मालिक, हमरा बास्ते एकटा काठक बनल हंस नेने आयब।"

राजा शिवधर अपना राज्यक सभसँ पैघ मेलाक उद्घाटन कय बहुतो रास रस-समान खरीद बहिकरनीक हेतु काठक बनल हंस सेहो खरीदलैन्ह। नहि जानि जे बहिकरनीक प्रति राजाक स्नेह अनायासे कियैक बढ़ि गेल छल। राजा गायत्रीमे अपन बहिनक रूप देखैत छल। आ अपन बहिनहुसँ अधिक ध्यान रखैत छलाह।

संध्याक समय जखन राजा शिवधर घर पहुँचलाह तखन किछु समानक संग काठक बनल हंस सेहो बहिकरनीकेँ देलथिन्ह। गायत्रीक शयन कक्ष बहरधारामे छल। जखन निशि भाग राति भय जाइत छल, सभ कियो सुति रहैत छल तखन बहिकरनी काठक बनल हंसकेँ अपना सामनेमे राखथि आ संगहि सूप आ वारहनि सेहो राखथि। सभ बस्तुकेँ सामने राखि बाजथि-

"हे हौ हंस, ई सूप वारहनि छियैक की नहि?"

हंस बाजथि-

"हँ तँ हँ।"

वहिकरनी बाजथि-

"ई राजा हमर भाई शिवधर थिकाह की नहि?"

काठक बनल हंस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी-

"हमरा भाईकेँ जल्लाद मारबाक हेतु जंगल लय गेल की नहि?"

हंस- "हँ तँ हँ।"

एहि प्रकारे बहिकरनी अपन व्यतीत घटना हंसकेँ सुनाबथि आ हंस सभ करूण कथामे हुँहकारी भरथि। नोकर-चाकर, सर-सिपाही आ खुपिया विभाग राजाकेँ कहलथिन्ह जे सरकार बहिकरनीकेँ अपने की खरीद देलयन्हि जे भरि राति हँ-मे-हँ करैत रहैत अछि। सभक निन्द हराम कय दैत अछि।

राजा प्रतापी आ संस्कारी छलाह। ओ एक राति जखन सभकियो गाढ़ी निद्रामे छल तखन अपना शयन कक्षसँ उठि बहिकरनीक बहर धाराक ओठमे आबि ठाढ़ भय गेलाह।

राजा शिवधर बहिकरनीक सभ बात सुनय लगलाह। वहिकरनी सूप, वारहनि काठक हंसक सामनेमे राखि बाजलि-

"हे हौ हंस, ई सूप वारहनि छिऐक की नहि?"

हंस बाजल-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी- "ई राजा शिवधर हमर भाई थिकैक की नहि?"

हंस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी-

"हम एक भाई आ एक बहिन थिकहुँ की नहि?"

हंस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी- "हमर अपन माय बचपनेमे मरि गेली की नहि?"

हंस- "हँ तँ हँ।"

बहिकरनी- "हमर बाबूजी दोसर बियाह कयलैन्ह की नहि?"

हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकनी-

“हमर भाई गेन्द खेलाइत छलाह की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“गेन्द उछलि कऽ हमरा सतमायक गोदीमे चल गेल की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“जल्लादक माध्यमे हमरा भायक कोढ़-कलेजी लेबाक लेल कहलक की नहि?”

हँस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“हमर भाई हमरा गंगासँ छानि बाहर लौलैन्ह की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

वहिकरनीक मुहसँ ई शब्द सुनि राज शिवधर विह्वल भय गायत्रीक गर्दनि पकड़ि कानय लगलाह आ गायत्री सेहो गलामे गला लगा कानय लगलीह।

राजा शिवधरक खुपिया विभागक पदाधिकारी जे राजाक पाछाँ

राजाक गति विधिपर नजरि रखबाक हेतु छिपल छलाह। ओ तुरत महामंत्रीकेँ बस्तु स्थितिसँ जानकारी करौलैन्ह। महामंत्री दौगल राजाक समीप आबि राजा आ गायत्रीकेँ बोल-भरोस दैत दुनूकेँ रनिवासमे लय गेलाह। ❑

गिफ्ट

ब्रह्मानन्द काकाक उमर ढलल जा रहल छल। बियाह भेला बहुतो दिन भय गेल छलैक। कोनो बाल बच्चा नहि भय रहल छल। कतेको बेर डॉक्टरसँ देखा चुकल छलाह। एतेक रास धन-सम्पतिक उपभोग के करत? ताहि सोचमे पड़ल रहैत छलाह ब्रह्मानन्द काका। बहुतो ओझा-बैद्यसँ सेहो आशीर्वाद लय चुकल छलाह। हिनक पत्नी सेहो बहुतो देवी-देवताकेँ कबुला-पाती कय चुकल छलीह। स्त्रीगणक विचारसँ कतेक धामीक हाथे कायल छलाह। सासु ननद सभ ओकरा पत्नीकेँ बड़ उपराग दैत कहैत छल जे ई मौगी अभागिन अछि, बाँझ अछि तेँ बाल-बच्चा नहि भय रहल छन्हि। दुनू पक्षसँ माने लड़का आ लड़की पक्षक स्त्रीगण बहुतो देवी-देवताकेँ कबुला पाती केयने छल। भगवानक महिमाकेँ कियो नहि जानि सकैत अछि। मरखना सन मुसहरकेँ सत्ता सोरे धिया-पुता छैक। सुभेश्वर मण्डलकें जेकरा ने रहैक लेल घर छै आ ने घराड़ी सरकारी जमीन यानि गैरमजरूआ जमीनमे घर बनेने अछि। राति खाइत अछि तँ दिन लय झखैत अछि आ दिन खाईत अछि तँ रातिक लेल चिन्ता लागल रहैत छन्हि। शुभेश्वर मण्डल ब्रह्मानन्द काकाक लगुआ जन अछि।

ब्रह्मानन्द काकाक हरबाही कय जे चारि सेर धान भेटै छलै ताहिसँ सभ बाल बच्चाक भोजन साजन चलैत छैक। शुभेश्वर मण्डल मिहनतिया जन अछि। ब्रह्मानन्द काकाक दू बिगहा खेत बटाई करैत छल। 25-30 मन धान सालमे बटैया खेतसँ आ धन-कटनी कय 10-20 मन धान कमा

लैत छल। ओहि धानसँ सालभरिक लत्ता-कपड़ा, तेल, साबुन आदिक व्यवस्था भय जाइत छलैन्ह। अधिक खर्चक लेल गिरहत मदद करबा लेल तैयार रहिते छन्हि। व्रह्मानन्द काका शुभेश्वर मण्डलकेँ बड़ मानैत छथि।

ब्रह्मानन्द काकाकेँ उदास देखि शुभेश्वर मण्डल सेहो चिन्तित रहैत छल। मण्डलजीक धिया-पुता भरि दिन ब्रह्मानन्द काकाक अँगना घरमे टहल-टिकोरा करैत रहैत अछि। मालिक ओकरा धियापुताकेँ बड़ मानैत छथि। कहियो-कहियो पैंट-शर्टक व्यवस्था सेहो कय दैत छथि। मण्डलोजी भगवानसँ गोहार लगबैत रहैत अछि। जे हमरा गिरहतकेँ बाल-बच्चा होइन्ह।

किछु दिनक पश्चात् ब्रह्मानन्द काकाक शुभचिन्तकक प्रार्थना भगवान सुनलैन्ह। व्रह्मानन्द काकाक पत्नी (लाल काकी) गर्भवती भेलीह।

ई शुभ समाचार सुनि सभ शुभचिन्तकक मन प्रफुलित भय गेलैन्ह। चारू तरफसँ शुभकामनाक संदेश आबय लागल। समय बितैत गेल। महिला डॉक्टरक संरक्षणमे लाल काकी रहय लगलीह। समयपर बच्चाक जन्म भेल। जच्चा-बच्चा सही सालामत रहल। घरमे खुशहाली आबि गेल। सासु-ननदिक उलहन-उपराग बन्द भय गेल। बच्चाक छठिहारमे हित-अपेक्षित आमंत्रित भेलाह। खूब नीक जकाँ भोज भात भेल। बच्चाकेँ ढेर रास उपहार भेटलैक। रातिमे सभ रश्म पूरा कय बच्चाक नाम भोला राखल गेल।

क्रमहि भोला किशोरावस्थामे पदार्पण कयलक। भोला बड़ संस्कारी बच्चा निकलल।

एक समयक बात छल। भोला बीमार भेल। व्रह्मानन्द काका आ लालकाकी ओकरा नीक डॉक्टर लग इलाजक हेतु लय गेलाह। डॉक्टर

साहेब सभ तरहक जाँच लिखलक। पैथोलॉजिस्टक जाँच रिपोर्ट आयल। डॉक्टर साहेब रिपोर्ट देखलैन। जाँचमे ई ज्ञात भेल कि दिलमे सहस्त्र छेद अछि। डॉक्टर साहेब कहलैन जे एकर दिल बदलऽ पड़त। किछु दिन ठीक रहत, तकर बाद भोलाकेँ दिक्कत होमय लागत।

व्रह्मानन्द काका आ लाल काकी खूब कनलैथ। लालकाकी मनहि मन निश्चय कयलक जे हम अपन कलेजा दय बेटाक जान बचायब।

दबाई लिखल गेल। दबाई चलऽ लागल। भोला पूर्वक स्थितिमे आबि गेल। डॉक्टर साहेबक सलाह छलैन्ह जे चारि-पाँच वर्ष धरि ठीक रहत। तकर बाद दिल बदलबा देबैक। चारि-पाँच वर्षक बाद जखन भोलाक उम्र सत्रह वर्षक छलैक तखन मायकेँ कहलैन जे माय हमरा अठारहम जन्म दिनपर कोन तरहक गिफ्ट देबही।

लाल काकी बजलीह-

“बौआ, तोहर अठारहम जन्म दिनपर जे गिफ्ट देबऽ से आलमारीमे राखल रहतऽ। तौ लयलीह।”

भोला जिज्ञासा कयलैन्ह-

“माय हमरा कहि दे जे की देमे।”

लाल काकी बजलीह-

“बेटा, आई धरि गिफ्ट कियो नहि देने हेतैक से तोरा देबह। अखन गिफ्टक नाम कहलासँ मजा किरकिरा भय जेतह।”

भोला चुप भऽ गेलाह। समय बितैत गेल। जहिया भोलाक अठारहम साल पुरितै, ताहिसँ किछु दिन पूर्वे ओ बीमार भऽ गेलाह। माय-बापक एकलौता सन्तान। सभक आँखिक तारा।

फेर ओकर माय-बाप भोलाकेँ पूर्वक डॉक्टर लग लय गेलाह। ओ डाक्टर साहेब भोलाकेँ पहचैन गेलाह। ओ हुनका अभिभावककेँ दिल

प्रत्यारोपणक सलाह जे पूर्बहिमे देने छल पुन: दोहरौलैथ। भोलाक माय अपन दिल देबाक लेल तैयार भेलीह। ऑपरेशनक तैयारी हेतु माय-बाप घर अयलाह। ऑपरेशनक फीसक व्यवस्था कयल गेल। भोलाक माय एकटा पत्र लिखि एकटा डिब्बामे बन्द कय आलमारीमे राखि देलक।

ऑपरेशन करयबाक हेतु भोलाक माय-बाबू डॉक्टर ओतय पहुँचलाह। भोलाक दिल निकालि, ओकर मायक हृदयमे आ मायक दिल भोलाक हृदयमे प्रत्यारोपित कयल गेल। माय-बेटा दुनू दुरुस्त छलाह। भोलाक स्वास्थ्य दिनानुदिन ठीक होमय लगलैक। आ भोला मायक स्वास्थ्य दिनानुदिन क्षीण होयम लगलैक। जहिया भोलाक जन्म दिन छल ताहिसँ 25-30 दिन पहिनहि भोलाक माय स्वर्गवासी भय गेलीह।

श्राद्ध कर्म नीक जकाँ सम्पादित भेल। भोलाक जन्म दिन खूब धूम-धामसँ मनाओल गेल। भोलाकेँ अपन मायक द्वारा देल गिफ्टक बात मन परलैन्ह। ओ आलमीराकेँ खोललैन्ह। तँ देखलक जे एकटा डिब्बापर लिखल छैक जे हैपी बर्थ डे टू यू बेटा। भोला डिब्बा खोललैन्ह। डिब्बामे एकटा पत्र लिखि राखल छल। भोला मोरल पत्रकेँ पसारि पढ़य लगलाह। पत्रमे लिखल छल-

“बेटा, हमर जिगरक टूकड़ा यदि तोँ एहि पत्रकेँ पढ़ि रहल छह तँ तूँ बिल्कुल ठीक भय जेबह। तोरा याद होयतह जे जखन तौं बीमार भेल छलह तखन हम तोरा डॉक्टर साहेबक पास लऽ गेल रही। डाक्टर साहेब बजलाह जे एकरा दिलमे बहुत रास छेद छैक। दवाईसँ ई ठीक नहि होयत, ओहि दिन हम बहुत कनलहुँ। आ निर्णय लेलहुँ जे बेटाकेँ हम अपन दिल दय ओकरा जीवन प्रदान करब। तोरा इहो याद हेतह जे एक दिन तूँ बाजल छलह जे माँ हमरा अपन 18म जन्म दिनपर कोन प्रकारक गिफ्ट देबही, से बेटा हम तोहरा गिफ्टक रूपमे अपन दिल दय रहल छीह। एकरा सम्हारि कऽ रखियह। हैपी बर्थ डे टू यू बेटा।” ❑

हृदय परिवर्तन

गिरधारी बाबू एक बहुमुखी प्रतिभाक धनी, मिलनसार, कर्त्तव्यनिष्ठ सरकारी विद्यालयक प्रधानाचार्य छलाह। सेवाकालक दरम्यान ओ बहुतोकेँ उपकार कयने छलाह। कोनो असम्भवसँ असम्भव काम आसानीसँ करा दैत छलाह। विद्यालयक हरेक गति-विधिपर हिनक ध्यान रहैत छलैन्ह। छात्रसँ लय शिक्षक धरि सभ कियो हिनकासँ खुश रहैत छल। हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ विद्यालयक आसो-पासक लोक सभ खुश रहैत छल। छात्र आ अभिभावकेँ जे कोनो विद्यालयक कार्य रहैत छल ओ अपन काम बुझि तुरंत करा दैत छलाह।

इलाका भरिमे हिनक यश फैलल छल। हिनक अवकाश प्राप्तिक उपरान्त विदाइ समारोहमे इलाका भरिक लोक आयल छलाह। प्रभारी पैघ आयोजन कयने छलाह। सेवा निवृतिक लाभ हेतु जिला पदाधिकारी कार्यलयक चक्कर लगबय लगलाह। बहुतो दिनक बाद जिला कार्यलयसँ हिनक कागजात महालेखाकार कार्यालय पहुँचल।

आब गिरधारी बाबू पटनाक चक्कर लगवय लगलाह। बड़ कठिनसँ पैंशन चालू भेलैन्ह। घर-परिवार नीक जकाँ चलय लगलैन्ह। दूटा बेटा आ दूटा बेटीक शादी-बियाह सेहो नीक परिवारमे भेल छल। सभ तरहेँ ठीक ठाक छल। किछु दिनक पश्चात ओ स्वर्गवासी भय गेलाह। पत्नी जीबित छलथिन्ह। बेटाक संग अपन गाँवमे रहैत छलीह। गिरधारी बाबूक देहांतक पश्चात सरकारी नियमानुसार हिनका पत्नीकेँ पेंशन भेटक

चाही। ताहि हेतु किछु आवश्यक फार्मपर हिनका पत्नीकेँ हस्ताक्षर करऽ पड़ितन्हि। एहि लेल दुनू मायपूत महालेखाकार कार्यलय पटना जयबाक हेतु विचार करय लगलाह।

आई धरि ने बेटा आ ने माय पटना गेल छल। कोनो शहरो सेहो नहि गेल छल। शहरक चहल-पहल विचित्र छल। माय बेटा सोचमे पड़ि गेल। कोना पटना जायव। पेंशनक आब ओ व्यवस्था नहि अछि। आब तँ सभ कार्य बैंकक माध्यमसँ भय जाइत अछि। बेटाक स्वभाव एहेन छल जे हरेक बातपर मायकेँ डँटैत रहैत छल। हर हमेशा मायसँ नाराजे रहैत छल।

जखन पेंशन हेतु पटना जयबाक लेल बेटाकेँ कहलैन तँ बेटा झुझलाइत मायकेँ डाँटय लगलाह। बेटा मायकेँ माय नहि बुझैत छल। हर हमेशा गारि-फजहैत सेहो करैत छल। माय बेटाक द्वारा देल कष्टकेँ सहन करैत रहलीह। माय बेटाक हर हमेशा खातीरदारीमे लागल रहैत छलीह। बेटा मायक महत्व नहि बुझि रहल छल। बेटा उदास रहय ओ मायकेँ नीक नहि लगैत अछि।

मायक नजरिमे जबानो बेटा बच्चे रहैत अछि। माय संसारमे सभसँ दुर्लभ बस्तु थिक। जकर तुलना संसारमे कोनो बस्तुसँ नहि कयल जा सकैत अछि। तेँ गिरधारी बाबूक पत्नी अपना बेटाकेँ नासमझ जानि ओकर सभ गलतीकेँ बिसैर जाइत छलीह। माय बजलीह-

“बेटा, पेंशने घर चलयबाक हेतु सहारा अछि। जँ एकरा चालू नहि करायव तँ गुजर कोना चलत। पटना तँ जेबाके छह।”

बेटाकेँ पटना जयवामे परेशानी बुझना जाइत छलैन्ह। मायक बात सुनि बेटा कर्कस स्वरमे बाजल-

“ओ कोनो गाम-घर छिऐ जे ककरो ओहिठाम रहि जाउ। ओ तँ शहर छैक। शहरक लोककेँ कामसँ फुर्सत कहाँ रहैत छैक। शहरमे एक

दोसरासँ ककरो मतलवे नहि रहैत छैक। शहरमे कियो मरि जाय कियो जी जाय, एतय सभ तेहले छैक। बहुत पढ़लो लिखलो लोक सभटा निठल्ले छैक। एक दोसराकेँ ठकै-फुसियवैमे लागल रहैत छैक।"

माय बजलीह-

"बेटा, ओतय धर्मशाला तँ छैक। होटल तँ छैक। ओतहि रहि जायव।"

मायक बात सुनि बेटा मायकेँ डँटैत कहलक-

"तू चुप रह। अनेरे दिमाग नहि खराव कर।"

माय चुप भऽ गेल। किछु सोचैत बाजलि-

"कोनहुना पुछैत-पाछैत पटना ए.जी. ऑफिस चलिये जायब।"

दोसर दिन गिरधारी बाबूक बेटा पटना जयबाक हेतु इन्टरसीटी ट्रेनक टिकट कटा अनलक तँ मायकेँ कहलक जे माय, टिकट भऽ गेल। माय बाजलि- बेटा, बटखर्चा किछु बना लीअ। बेटा फेर झुझलाकय बाजल ओतहि कोनो होटलमे खा-पीव लेब। माय फेर असथिर मनसँ प्रेमसँ बाजलि-

"बेटा, ओतय भोजन असिया-बसिया भेटत आ पैसा सेहो अधिक लागत।"

मायक बात सुनितहि बेटा जोरसँ बाजल-

"जो जे मन होइ छौ से कर।"

माय बटखर्चाक बास्ते पूरी, तरकारी, पेड़ा बनौलक। ऊपरसँ कनेक नून, हरियरका मीरचाई आ अचार सेहो एकटा झोरामे लय लेलक।

सुबह 6 बजे जयनगरसँ इन्टर सीटी ट्रेन जे डेढ़ बजे पटना पहुँचै छैक से ट्रेन पकरलक। रेल गाड़ी मधुबनीसँ साढ़े छह बजे खुजल। माय

बेटा ट्रेनमे चढ़ल। एहि इन्टर सीटीमे भीड़-भार कम रहैत छैक तँ दुनू माय बेटा मन पसन्द सीट खोजि कऽ वैसल। खिड़की लगक सीट बढ़िया बुझेलैक तँए दूनू आमने-सामने बैसल। गाड़ी द्रूत गतिसँ चलय लागल।

गाड़ीक बाहरक वाताबरण, प्रकृतिक सौन्दर्यताकेँ निहारए लागल। आई धरि माय बेटा एहेन दृश्य नहि देखने छल। इन्टर सीटी समस्तीपुर पहुँचल। इंजन आगूसँ काटि पाछामे जोड़ल गेल। मुजफ्फरपुर होइत डेढ़ बजे पटना पहुँचल। पटना स्टेशनसँ उतरि स्टेशनसँ बाहर आयल। दूनू माय बेटा महावीर मन्दिर पहुँचल। पैर-हाथ धोय बजरंग वलीक पूजा कयलैन्ह। प्रसाद चढ़ौलैन्ह। फेर दूनू माय बेटा सड़कपर आयल।

एकटा वटोही बाट धयने जा रहल छल। बेटा-बटोहीकेँ टोकलक-

“हमरा महा लेखाकार कार्यालय जयबाक अछि से कोना जायब रास्ता बता दीअ।”

बटोही बाजल-

“एहिठामसँ टेम्पू पकड़ि लीअ आ ओ टेम्पू आर. ब्लॉक चौराहासँ आगा मोड़पर उतारि देत आ अहाँ ओहिठामसँ दहिना बगलमे महा लेखाकार कार्यालय चलि जायव।”

दुनू गोटे टेम्पूपर चढ़ल आ किछुए देरमे महा लेखाकार ऑफिस पहुँचि गेल। ककरोसँ पूछि अन्दर जाय लागल। गेटपर बैसल सिपाही टोकलक-

“कहाँ जा रहे हैं? पहले परमिशन ले लें तव अन्दर जाऐंगे।”

बेटा दक्षिणवरिया रूममे गेल आ अपन सभ कागजात परमिशन देनिहार कर्मचारीकेँ देखा देलक।

कर्मचारी पेंशनबला कागज देखि एकटा परमिशनबला पूर्जा थमा देलनि। ओ पूर्जा लय सिपाही लग गेल। सिपाही पूर्जा देखि अन्दर जाइक लेल आदेश देलक। ताबत कर्मचारी लोकनिक टिफिन समाप्त भऽ गेल

छल। कैंनटीन खाली भऽ गेल छल। दुनू माय-पूतकेँ भूख बेसी लागि गेल छल। दुनू कैटिंगमे गेल। एकटा रूम खाली छल, कुर्सी, टेबुल सेहो लागल छलैक। ओतय पानि पीबाक नल सेहो लागल छल। दुनू माय-पूत ओहि कोठरीमे जा कय कुर्सीपर बैसि टेवुलपर झोलासँ पूरी सब्जी निकालि दू ठाम अखवार पर परोसा लगाइये रहल छल आकि दूटा सज्जन व्यक्ति ओहि कमरामे प्रवेश कयलैन्ह।

पहिने तँ दुनू माय-पूतकेँ डर भेलैन्ह। ओ दुनू सज्जन माय बेटाक मनोदशाकेँ भाँपि ओहिमे सँ एक सज्जन बजलाह-

“मायजी, पेंशनबला फारमपर साइन करक लेल आयल छी?”

मायजी बजलीह-

“हँ बेटा।”

फेर दोसर सज्जन बजलाह-

“माईजी घरसँ बटखर्चामे की सभ बना कऽ लौने छी। बहुत नसीवबलाकेँ मायक हाथक भोजन भेटैत अछि।”

ई बात सुनैत माय बजलीह-

“बौआ, जखन हमरा अहाँ माय कहलहुँ तखन हमरा हाथक बनौल पूरी, सब्जी, पेरा जरूर खा लीअ।”

मायजी ओहो दुनू आदमीकेँ पूरी, सब्जी, पेड़ा पेपरपर परोसि आगाँ बढ़ा देलक।

दुनू सज्जन नलपर सँ हाथ धोइ, खाय लागल। खयलाक बाद भोजनक प्रसंशा करैत बाजल-

“मायजी, मजा आबि गेल। एतेक स्वादिष्ट भोजन जीवनमे पहिल बेर खयलहुँ।”

सज्जन बजलाह-

“मायजी, अहाँक बेटा बड़ भाग्यशाली अछि जे अहाँ सन माय ओकरा भेटलैक। आई हमरो अपन मायक स्मरण आबि गेल।”

आ ओहि सज्जनक आँखिसँ नोर टपकय लागल।

दूनू सज्जनक बात सुनि गिरधारी बाबूक बेटा जे हर हमेशा अपन मायपर तमसाइले रहैत छल। मनहि मन सोचय लागल जे ई दुनू सज्जन जे अनजान छथि, ओ हमरा मायकेँ एतेक सम्मान देलक आ हम समीपमे रहितहुँ मायक ममताकेँ नहि बुझि सकलहुँ।

बेटाक मन ग्लानिसँ भरि गेल। ओ मनहि-मन पश्चाताप करय लगलाह। ओहि सज्जनमे सँ एक सज्जन बजलाह-

“माँजी कनेक काल ठहरू। हम तुरंत ऑफिससँ आबि रहल छी। अहाँक काज करा देब। कोनो कष्ट नहि होमय देब।”

ओ सज्जन कनेकालक बाद एकटा फारम हाथमे नेने माय लग अयलाह आ बजलाह-

“माय अहाँ लग जे कागज अछि ओ लाऊ।”

ओहि फारमकेँ पेंशनबला कागजसँ सभ मिलान कऽ सभ फारममे देल व्यौराकेँ भरलक। कागज हाथमे लय मायकेँ संग कय ऑफिस पहुँचल। मायसँ ऑफिसरक सामनेमे हस्ताक्षर करा कागज (फार्म) जमा कय देलथिन्ह। दस मिनटमे सभ काज करा माय सहित ओ सज्जन बाहर अयलाह। बेटाक लेल ई काम बड़ कठिन बुझना जाइत छल। माय आ बेटा बड़ खुश छल। माय ओहि दुनू सज्जनकेँ हृदयसँ आशीर्वाद देलैन्ह। बेटा सोचय लागल जे मायक नूनमे एतेक शक्ति छैक जे चुटकीमे हमर काज भऽ गेल। माय ओहि दुनू सज्जनकेँ आशीर्वाद दैत बजलीह-

“बेटा, अहाँ लोकनिक उपकारकेँ हम जीवन भरि नहि भूइल सकै छी।”

एहिपर दुनू सज्जन बाजल- “माय, हम अहाँक नमक जे खयलहुँ।

हम सभ अहाँक बेटा समान छी।”

ई बात सुनैत बेटाकेँ शर्मसँ माथ झूकि गेलैक। बेटाकेँ ई एहसास भेलैक जे माय ओकरा जन्म देलक, पोसलक, पाललक आ हाथ पकड़ि चलेनाइ सिखौलक। अपन दूध पिआ हमरा एतेकटा बनौलक। आ हम ओहि मायकेँ तिरस्कार करैत छलहुँ। हमरासँ बढ़ि एहि संसारमे कियो पापी नहि अछि। ओ दुनू सज्जन मायसँ विदा लैत अपन काजपर चलि गेल।

ओ दुनू सज्जन गिरधारी बाबूक नामपर मायक सभ काम करा देलक। कियैक तँ ओ दुनू सज्जन गिरधारी बाबूक शिष्य छल। ओ सज्जन लोकनि गिरधारी बाबूक पत्नीकेँ चिन्हैत छल। मुदा अपन परिचय नहि देलक।

आब गिरधारी बाबूक बेटा जे मायकेँ हमेशा तिरस्कृत करैत छल तेकर हृदय परिवर्तन भय गेलैन्ह। आ मनहि-मन शपथ खयलैन्ह जे मायकेँ जीवन भरि सेवा करब। मायक पैरपर खसि पड़लाह आ हबो ढकार भय कानय लगलाह। बजलाह-

“माय, हमरासँ बड़ पैघ गलती भेल। हमरा जे दण्ड देबाक छौ से दय दे।”

माय बेटाकेँ हाथ पकड़ि उठौलक आ कलेजासँ लगा लेलक। बेटाक हृदय परिवर्तन भय गेल। ❑

खाली घर

शरद ऋृतुक पूनम राति छल। मिथिलांचलमे एहि पूर्णिमाक रातिमे मैथिल लोकनि नव विवाहिता बेटीक कोजगरा मनाबैत छैथ। बेटी पक्षसँ अपन जमायक लेल सामर्थ्यक अनुसार दही, केरा, पान, मखान, मिठाई आदि सभक भार अबैय। पचमेर मधुर आवश्यक छैक संगहि जमाय बास्ते आ जमायक पूरा परिवारक महिला एवम् पुरुषक बास्ते नीक कपड़ा-लत्ता लय भारमे सेहो अनैत अछि। ओहिना बेटा पक्षसँ मधुश्रावणीमे दुल्हिन ओहिठाम नाना प्रकारक भारक ओरियान कय मैये-धीये हेतु कपड़ा-लत्ताक व्यवस्था कय भार पठौल जाइत अछि। मधुश्रावणीमे नव विवाहिता अपन सखी-बहिनपाक संग एक पखवारा फूल लोढ़ि पतिक दीर्घायु हेतु पूजा-पाठ करैत अछि। एतावता मिथिलाक संस्कृतिकेँ कायम रखबाक हेतु माय-बाप बेटाक शादी-बियाह खूब धूम-धामसँ करैत छैथ।

एहि रश्म-रिवाजकेँ निमाहैत केशव बाबू अपन एक मात्र सन्तान सुरेशक बियाह बड़ पैघ घरमे करौने छलाह। सुरेशक बियाहक रश्म सौराठक सभासँ श्री गणेश भेल छल। मिथिला छोड़ि ई परम्परा कतौ दोसर ठाम नहि देखना जाइछ। सुरेशक बियाहमे दान-दहेज सेहो बहुत रास भेटल छल। कनिया सुन्दरी छली। मुदा गौरवाहि सेहो छली।

कनिया सासुर अयलीह। घरक बनाबट, बारी-झाड़ी देखि खुश भेलीह। मकानक भव्यता देखि प्रफुल्लित भयलीह। दुनू पति-पत्नी

दामपत्य जीवन व्यतीत करय लगलाह।

केशव बाबू प्राइभेट टयूशन कय जीवन व्यतीत करैत छलाह। ओहि ट्यूशनक पैसाकेँ संचित करैत रहलाह। अपन परिवारक आवश्यक आवश्यकताक पूर्ति करैत अपन संचित राशिसँ खूब सुन्दर मकान बनौने छलाह। मकाने नहि घराड़ीक बगलमे जमीन सेहो खरीदने छलाह। कियैक तँ मरौसी घराड़ी मात्र तीन धूर हिस्सा पड़ल छलैन्ह। आब तीन धूरक बदला तीन कट्ठा घराड़ी बना लेलैन्ह। केशव बाबू सुरेशकेँ पढ़ावयमे सेहो जी-जान लगा देलैन्ह। मुदा एकलौता बेटा केकरो-केकरो ओरियाइ छैक। बहुतो एकलौता बेटा बिगरि जाइत छैक। सुरेशक जिनगी बापेपर आधारित छल। जाधरि केशव बाबूकेँ सामर्थ्य रहलैन ताबत तँ खूब मान-दान होइत रहल मुदा जखन शरीर घटलैन तँ सुरेश अपन माय- बापकेँ कष्ट देबय लगलैन्ह। सुरेशोकेँ दू-चारिटा बाल-बच्चा भऽ गेलैक। सुरेशक कनिया अपन सासु-ससुरकेँ कहियो मान-सम्मान नहि देलक। खेनाइ-पिनाइ तँ दूर जे नीक बातो नहि कहैत छल। जखन सुरेश छोट छल तखन बाप हुनका कहै छेलखिन पिता जीवन अछि, सम्बल अछि आ शक्ति अछि। पिता श्रृष्टिक निर्माणक अभिव्यक्ति अछि।

पिता उँगली पकरैत बच्चाक सहारा अछि।

पिता पालक अछि, पोषक अछि आ परिवारक अनुशासन अछि।

पिता रोटी अछि, कपड़ा अछि, मकान अछि

पिता अछि तँ बजारक सभ खिलौना अपने अछि।

पिता अछि तँ मायक बिन्दी आ सुहाग अछि।

पिताक महत्वकेँ सुरेश नहि बुझलक। पिता केशव बाबू ओकरा पढ़बैक लेल की की ने केलैन्ह। सुरेशक लेल माथपर चाउर आ दालि लऽ स्टेशन जाइत छलाह। बेटाक नीक पढ़ाई-लिखाईक लेल तत्पर रहैत छलाह। मुदा बेटाक पढ़ाई-लिखाईक तरफ कम आ हाई-फाई दिस बेसी

ध्यान रहैत छलैन्ह। सुरेशक ई दशा छल।

छात्र लोकनि केर कथे कोन,

मतलब हाजिरीसँ ना।

माय-बाप सभ पाई पठाबथि

भेल शुरू महीना।

पाई पाई लय खून बहल अछि,

एहि आशा लय ना।

बच्चा पढ़त नौकरी करत

टाका ककमायत ना।

बच्चा तँ सभ दिन घुमै छथि

नेशनल उमा सिनेमा।

की कहियौ गे बहिना।

ताहि मानसिकताक बच्चा सुरेश छल।

आब पढ़नाई छोड़ि-छाड़ि घर-गृहस्थी सम्हारय लगलाह। दू-चारिटा बाल-बच्चा सेहो भऽ गेलैन्ह। सुरेशक पत्नीक भावना सासु-ससुरक प्रति नीक नहि छल। सुरेशकेँ पत्नी कहलैन जे बाबूकेँ कहियौन जे एहि घरमे हमरा बाल-बच्चाक संग रहय दीअ, आ अहाँ घर खाली कय दीअ। हमरा लोकनिकेँ रहऽमे दिक्कत भय रहल अछि।

सुरेश पत्नीक मुँहसँ ई बात सुनितहि पत्नीकेँ बड़ फजहैत कयने छलाह। बाजल छल जे ई धर माय-बाबूक बनाउल अछि। हम कोना हुनका घर खाली करक लेल कहियौन। ओ दुनू जीव कतय जेताह। एतेक यत्नसँ घर बनौलैथ। आ बुढ़ाड़ीक समयमे हम हुनका घरसँ निकालि दीयैक। अहाँकेँ नीक बुझना जाइत अछि।

मुदा हठी पत्नी मानय बाली नहि छल। ओ बजलीह-

"सभ माय-बाप मकान अपना बाल-बच्चाक लेल बनबै छथि। कोनो अहींक बाप मकान बनौलथि। ई तँ माय-बापक कर्त्तव्य छैक।"

मुदा बाल-बच्चाक कर्त्तव्य की अछि तकर उल्लेख नहि कयलैन्ह। पत्नी 'खाली घर' ई बात बराबर सुरेशकेँ कहैत रहल। दू महीना चारि महीना छह महीना सुनि सुरेश अनठबैत रहलाह। मुदा हिनक पत्नी अपन जिद्द नहि छोड़लैन्ह। आब कहऽ कऽ धर्रा बदैल लेलक। आब सुरेशकेँ पितासँ कहबाक लेल उकसाबऽ लगलीह। आ कहैत कहैत कानय लगैत छलीह। पत्नीक आँखिक नोर पतिकेँ कोनो काज करबाक लेल बाध्य कय दैत अछि।

एक दिनक बात छल जखन सुरेश कतौ चल गेल रहथि तखन केशव बाबू सुरेशक बच्चाकेँ कोनो गलतीपर डाँट-फटकार आ एक थापर मारने छलाह। बच्चा कनैत-कनैत अपन माय लग गेल। सुरेशक पत्नी बच्चाकेँ पुछलक-

"बौआ, के मारलकौक?"

मुदा बच्चा किछु बाजल नहि, वल्कि खूब जोरसँ हबो-ढकार भय कानय लागल। मायक हृदय बच्चाक रूदनपर बेसी द्रबित भय गेल। एमहर पोता बाबाक अत्यन्त प्रिय होइत अछि। कहबियो छैक जे लोककेँ मूलधनसँ बेसी सूइदहिपर ध्यान रहैत छैक। बेटा भेल मूलधन आ पोता-पोती भेल सुइद।

बाबाक द्वारा पोता एतेक स्नेहिल भय जाइछ जे कनियो जोरसँ बिगरलापर जोर-जोरसँ कानय लागैत अछि। पोता-पोतीकेँ बेसी कष्ट बुझना जाइछ आ माय-बाप कतबो बिगड़ौ मारौ-पिटौ, तकरा वो अंगेज लेत, मुदा बाबाक डाँट-डपटकेँ बर्दाश्त नहि करत। सैह भेल सुरेशक बेटाकेँ। सुरेशक पत्नी जँ-जँ बेटासँ पुछथि जे के मारलकौ, तँ-तँ ओ जोर-जोरसँ कानय लागय। जेना बुझना जाइत छल जे कतेक ओकरा मारि

लागल छैक।

अन्तमे हिचुकैत बाजल-

"बाबा।"

आब तँ सुरेशक पत्नी केशव बाबूकेँ कोनो दशा बाँकी नहि रखलक। अन्तमे ओकरा मुँहसँ 'खाली घर' कहाइये गेल। केशव बाबू अपन पुतोहुकेँ कहय लगलाह जे हमरे बनौल घर आ हमहीं खाली कय दीअ। एना कियैक बजैत छह?

ई घोल-फचक्का होइते छल आकि सुरेशक अरोसिया-परोसिया जमा भऽ गेल। आब तँ तेहेन ने स्थिति भऽ गेल जे एक तरफ सासु-ससुर आ दोसर तरफ पुतोहु। दुनू पक्ष जोर-जोरसँ चिकैर-चिकैर झगड़ा करय लागल। बुधन काका गामक जेठरैयति छलाह। ओ आबि दुनू पक्षक बीच झगड़ाकेँ छोड़ौलक। मुदा पुतोहु मानऽ बाली नहि, ओ बेर-बेर यैह शब्दकेँ दोहराबय जे 'घर खाली कय दीअ।'

बुधन काका सुरेशक पत्नीकेँ कहलनि-

"केशव बाबू कियैक घर खाली करतह, तूँ सभ घर खाली करहक।"

घोल-फचक्का भेयै रहल छल कि सुरेश बाध दिससँ आबि गेल। सुरेशक पत्नी कानि-कानि कऽ कहय लगलीह-

"देखू तँ बौआकेँ बुढ़बा कतेक मारलक जे अखन धरि ओ कानि रहल अछि। हम कहलियैन तँ हमरेसँ लड़य लागल। आ बिखैन-बिखैन गारि देमय लागल। तँ हमहूँ कहलियैन जे घर खाली कऽ दीअ।"

केशव बाबू अपन सफाइ देमय चाहलनि मुदा पत्नीक नोर सुरेशक क्रोधाग्निक ज्वालामे घी ढारबक काम कयलक। ओकरा माथामे छह-माससँ खाली घरक शब्द घुरिया रहल छल। तेँ ओहो ग्रामीणक बीच चिकरि कऽ बाजल तँ कनिया ठीके ने कहैत अछि। अहाँ जल्दी घर खाली

कय दीअ। हमरा लोकनिकेँ दिक्कत भय रहल अछि।

ताहिपर केशव बाबू बजलाह-

“रौ सुरेश, घर बनायल अछि हमर आ हमहीं घर खाली कऽ दीअ।”

सुरेश बाजल-

“एहिना सभ बाप बेटाक लेल घर बनाबैत छै। कोनो अहींटा बनौलौं अछि। ई तँ संसारक नियमे छैक जे नालायको बेटाकेँ बाप रोटी, कपड़ा आ मकान दैत अछि। तँ अहाँ कहू जे घर कहिया खाली कय देब?”

केशब बाबू विचारवान पुरुष छलाह। हुनका पुतोहुक बातपर ओतेक कष्ट नहि भेल छल जतेक सुरेशक गप्पपर भेल। ओ सुरेशकेँ कहलक-

“काल्हि हम सभ घर खाली कय देबह।”

बात सल्टिया गेल। दरबाजा परहक भीड़ हटल। गौंआँ-घरुआ टिक्का-टिप्पणी करैत अपन-अपन घर गेल।

रातिमे केशब बाबू पति-पत्नी बिनु भोजन-साजन केनहि सुतक लेल चलि गेलाह।

राति भरि बेटाक बातपर खूब कनलाह। आ दुनू प्राणी निर्णय केलैन जे काल्हि सदाक लेल घर खाली कय देब। खूब नीक जे घरमे गाम-गमैती जयबाक हेतु धोती-कुर्ता छल से पहिर लेलक। पत्नीकेँ सेहो नीक साड़ी ब्लाउज पहिरा देलनि। घरक पछुआरमे अपने हाथक लगाओल आमक गाछ छल। ओहि गाछमे दूटा रस्सीमे फँसरी लगौलक। एकमे पत्नीकेँ फाँसी लगा देलक आ दोसरमे अपने फाँसी लगा अपन बनाओल सुरेशक घर सदाक लेल खाली कय देलक। कुर्त्ताक जेबीमे एकटा अपने हाथसँ लिखल पत्र राखि देने छल। पत्रमे लिखल छल-

"बेटा सुरेश,

शुभाशीष।

हमरा पुतोहु किछु दिन पहिनहि कहने छल जे घर खाली कय दीअ। मुदा हम एकरा गंभीरतासँ नहि लेलहुँ। आ हमरा कनियो एहि बातसँ कष्ट नहि भेल। मुदा आई जखन तों कहलह जे घर खाली कय दीअ तखन हमरा असह्य कष्ट भेल कियैक तँ बाप, बेटाक सम्बल अछि, सहारा अछि, रोटी कपड़ा और मकान अछि, ऊँगली पकड़ि मनुष्य बनाबयबला भगवान अछि। तेकर आई ई दुर्दशा। तैँ हम सोचलहुँ जे बेटा, जे जिगरक टुकड़ा अछि ओकरा पर हम केश-मुकदमा करी आकि पर-पंचैती करी, ई उचित नहि। तें हम सदाक लेल तोहर घर खाली कय रहल छीह।"

तोहर अभागल बाप-

केशब

भोरे-भोर गाममे घोल-फचक्का होमय लागल। फेकना जखन पर-पैखाना करक हेतु गामसँ बाहर गेल छल। वापसी बेरमे फरीच भऽ गेल छलैक। केशब बाबूक घर आ बाड़ी-झाड़ी ओहि रास्तामे छल। तँ ओ देखलक जे आमक गाछमे ई की लटकल अछि। फेकना नजदीकमे पहुँचल। तँ दुनू प्राणीक गरदैन आमक गाछक डारिमे लटकल देखलक। ओ जोर-जोरसँ हल्ला करय लागल-

"बाप रे! जुलुम भय गेलै। हौ लोक सभ, केशब बाबूकँ फाँसी लगा देलकै हो लोक सभ।"

गामक लोक जमा भऽ गेल। भीड़मे गामक चौकीदार सेहो छल। ओ घटनाक जानकारी थानाध्यक्षकेँ फोनसँ सेहो दय देलक। शीघ्रहि दरोगा घटना स्थलपर पहुँचल।

गाछमे लटकल दुनू लाशकेँ नीचा कयलक। छानवीन करय

लागल। गामक जेठरैयति बुधन काका सभ बात फरिच्छा कऽ बता देलकन्हि। तावत् चौकीदार केशब बाबूक जेबीसँ एकटा कागज निकालि दरोगाक हाथमे दय देलकन्हि।

दरोगा पत्र पढ़लक आ सुरेश आ सुरेशक पत्नीकेँ धारा 302 भा. द. वि.केर अन्तर्गत गिरफ्तार कय जहल भेज देलक। घर सदाक लेल खाली भय गेल। ❑

परिवारक महत्व

राम एक नीक विद्वान व्यक्ति छलाह। गत वर्ष सरकारी कर्मचारीसँ सेवा निवृत भेल छलाह। एकटा बेटीक शादी बाँकी रहि गेल छल। मनमे हर-हमेशा ई चिन्ता बनल रहल छेलैन्ह जे बेटीक शादी कतय करावी। बर खूब सुन्दर, सरकारी नौकरीबला, डॉक्टर वा इंजीनियर होयबाक चाही। सेवान्त लाभसँ जे दान-दहेज देबय परत तकर भरपाई करब। रिटायरमेन्टबला पैसा प्रयाप्त छलैन्ह। तेँ मनसूवा खूब बढ़ल छल।

राम अपन सेहत बुलन्द रखबाक हेतु सुबह-शाम टहलैत रहैत छलाह। एक दिन शहरक नीक पार्कमे बैसल छलाह। ताबत हिनक एकटा पुरान मित्र- घनश्याम पार्कमे पहुँचलाह। दुनू मित्रक बीच घरेलू बात-चीत होमय लागल। राम कहलनि-

“मित्र, की कहू अपना घरक किरदानी। हमर जेठकी पुतोहु जे छैथ से ततेक ने पोता-पोतीकेँ मारै-पीटै छै आ जँ कहियौ तँ हमरेसँ लड़ाइ-झगड़ा करय लागैत अछि।”

घनश्यामजी जवाब देलैन्ह-

“की करबै कनेक वर्दाश्ते कय कऽ चलू। देखू ने हमर सभ बाल-बच्चा तँ नौकरीमे अछि। एतए दुनू पाणी रहैत छी। बाल-बच्चा नहि रहलासँ मने नहि लागैत अछि।”

दुनू मित्र जेना महिला-मण्डली सभ एक जगह भय जाइत तँ ततेक

ने एक दोसराक अदखोई-बदखोई करत से जल्दी गप्प ओरेबे नहि करै छैक। तहिना एहि दुनू मित्रक गप्प भय रहल छल। राम बजलाह-

“मित्र, हमरा एक बेटी बियाहक लेल रहि गेल अछि। से एकटा नीक लड़काक भाँज लगा दिअ। हमर बेटी बी.ए. पास अछि। नौकरी सेहो करैत अछि।”

घनश्यामजी बजलाह-

“रंग केहेन अछि?”

राम कहलैन-

“मिल्की ह्वाइट अछि।”

घनश्यामजी बजलाह-

“हाइट कते छैन्ह?”

राम-

“पाँच फिट तीन इंच छैक। कोनो लड़का नजैरपर हुए तँ कहब।”

घनश्याम-

“अहाँक बेटीकेँ कोन तरहक परिवार चाही?”

राम-

“कोनो खास नहि। बस लड़का एम.टेक, डॉक्टर बा पी.ओ. होयबाक चाही। अपना रहक लेल नीक मकान होइ, चढ़य लेल कार होइ, घरमे ए.सी. लागल होइ। अपन बाग-बगीचा होइ, नीक जॉव होइ, बढ़िया सैलरी से भेटैत होइ।”

घनश्याम-

“आओरो किछु खासियत होइ से बाजू।”

राम-

"असल बात तँ छुटिये गेल जे ओ घरमे अकेला होयबाक चाही। माय-बाप भाए-बहिन नहि होय से नीक। एहि लेल जे ई सभ रहलापर लड़ाइ-झगड़ाक सम्भावना बनल रहैत छैक।"

धनश्यामजीक आँखि भरभरा गेलैन। मनहि-मन सोचलनि एहेन विचारबला लोकसँ कहियो भेँट नहि भेल छल। ओ आँखि पोछैत बजलाह-

"हँ हमरा मित्रकेँ एकटा पोता छैन्ह। जकरा भाए-बहिन नहि छैक। माय-बाप एकटा दुर्घटनामे स्वर्ग सिधारि गेल। बढ़िया नौकरी छैन्ह। तकरीबन डेढ़ लाख टाका तन्खाह सेहो छैन्ह। चारि चक्का गाड़ी छैन्ह। बंगला छैन्ह। नौकर-चाकर छन्हि।"

राम-

"तँ मित्र, करा ने दीअ ई कथा। हमरा बड़ नीक लागल।"

घनश्यामजी बजलाह-

"हुनक एक मात्र दादा जे जीबित छथि हुनकर शर्त्त छन्हि जे लड़की नीक पढ़ल-लिखल आ बिना माए-बाप, भाए-बहिन यानी ओकरा रिश्तेदारमे कोइ नहि होएबाक चाही।"

कहैत-कहैत घनश्यामजीक आँखिसँ नोर बहय लगलैन्ह। फेर बजलाह-

"जँ अहाँ ई कथा करब तँ परिवारकेँ आत्म हत्या करय पड़त।"

ई सुनतहि राम तमसाइत बजलाह-

"ई की बकबास करै छी। हमर परिवार कियैक आत्म हत्या करत। काल्हि ओकरा सुखमे, दुःखमे के साथ देतैक।"

घनश्यामजी बजलाह-

"वाह हमर दोस्त, वाह! अपन परिवार परिवार अछि आ दोसराक

परिवार परिवार नहि।”

मित्र राम अपन बाल-बच्चाकेँ परिवारक महत्व बुझाऊ, घरमे पैघ, छोट, सभ परिवारक सम्बल आ जरूरी होइत अछि। वरना इंसान खुशी आओर गमक महत्व भूलि जेतैक। जिनगी नीरस बनि जाइत।

राम शर्मसँ मस्तक नीचा झूका लेलक। किछु नहि बाजल। परिवार अछि तँ जीवनमे खुशी अछि। जँ परिवार नहि रहत तँ खुशी आ गम ककरा साथ बाँटी। तेँ परिवारमे माय-बाप, दादा-दादी, भाय-बहिन रहनाई जरूरी छैक। तखने ने परिवारक महत्व रहैत छैक। ❑

भैयारी दुश्मनी

भाई-भाईमे दुश्मनी समाजक बीच बेमनस्यता एक दोसराक बीच मन-मुटाव आदिमे युगसँ होइत आबि रहल अछि। धोबी आ ओकर पत्नीक बीच झंझटक कारणे रामचन्द्रजी सीताकेँ फेर बनवास देलैन्ह। सम्राट अशोक नर संहार कय महान राजा भेलाह। पूर्वहि जमानासँ ई राग, द्वेष, दुश्मनी, भेद, भाव मानसिक दुर्भावनाक दौड़ आबि रहल अछि। कलियुगमे ई भावना आओरो बढ़ि गेल।

मोतीलालकेँ दू पत्नीमे तीन लड़का छल। प्रथम पत्नीकेँ एक बालक राम लाल छल। राम लाल जखन छोट छलाह, तकरीवन 8-10 वर्षक तखनहि ओकर माय मरि गेलखिन्ह। मोतीलालक पत्नीक देहान्त भेलाक कारणे ओ किछु दिन बिधुर बनल रहलाह। किछु दिनक बाद पुन: बियाह करबाक लेल हित-अपेक्षितक कहलापर तैयार भेलाह। ओना, मातीलालक चालि-चलन-स्वभाव नीके छलैन्ह। पत्नीक स्वर्गवास भेलाक कारण बड़ दु:खी रहय लगलाह। दु:खी एहि लेल जे जीवन साथी सभ मनोरथ पूरा करैत छलैन्ह, भरपूर सेवा शुश्रुषा करैत रहैत छलखिन्ह। घरबालीकेँ मुइलाक बाद छोट बाल-बच्चाक भरण-भोषण आ लालन-पालनक चिन्ता अधिक छलैन्ह। एकटा सरोकारीमे मोतीलालक चाचा छलाह ओ बजलाह-

“औ बौआ मोतीलाल, कनिया स्वर्गक सुख पाबि रहल अछि आ अपना सभ नर्कक भोग भोगि रहल छी। जे सभ काम काज छोड़ि एतेक

चिन्तित रहैत छह से अनेरे ने। जे दिनक दोख छल से भेल।”

तेँ हित-अपेक्षितक बात मानि दोसर शादी कयलैह। नहि करबह तँ बाल-बच्चाक पालन-पोषण के करतह। ओना उमेरो अधिक नहि भेलह। ई सभ सोचि दोसर बियाह कयलैन। बियाह भऽ गेल। पत्नी अतिसुन्दरी आ रूपवती छलथिन्ह। बिबाहक किछु दिन तक तँ खूब नीक जकाँ घर चलल। जखन मोतीलालक सगही घरबालीकेँ बाल-बच्चा भेलैक तँ बियाहीक बाल-बच्चाकेँ दु:ख तकलीफ देबय लगलैक। माय मुइने बाप पित्ती भय जाइत छैक से चरितार्थ होमय लागल।

रसे-रसे बियाही पक्षक बाल-बच्चा बिरान सन लागऽ लगलैक। छोट-छोट बातपर ओहि बाल-बच्चाकेँ डाँट-फटकार आ मारि-पीट पड़य लगलैक। जकरा लाड़-प्यार भेटक चाही। तकरा डाँट-फटकार सहय पड़ैत छैक। ओना, उतानपाद जे पैघ राजा छलाह। ओहो सगही घरबालीयैक कथनानुसार चलैत छलाह। जखन कि बियाही पत्नी जीबित छलथिन्ह। एहि कारणे उतानपाद बियाही पत्नीसँ जनमल बेटा ध्रुवकेँ गोदीसँ उतारि सगही पत्नी सुरूचि अपना कोखिसँ जनमल बेटा उत्तमकेँ बापक गोदीमे बैसा देने छल। जे से...। ई द्वेषात्मक भाव आबि रहल अछि। तेँ ई कोनो नव बात नहि छल। ओना तँ कतौ-कतौ ठीक एकर विपरीत देखना जाइत अछि। बियाही मायसँ बेसी सतमाईये मानैत छथि। दुनियाँमे सभ तरहक नर-नारी होइत छैक।

समयक गति तीव्र होइत अछि। मोती लाल ओहि गतिक प्रवाहमे बहय लगलाह। आब समदाही पत्नीमे सेहो दूइटा बेटा आ एकटा बेटी भेलैन्ह। मोतीलालक बाल-बच्चा जबान भेल। सबहक बियाह-शादी क्रमिक रूपे होमय लागल। समदाहीक बेटा जकर नाम भाईलाल आ शोभी लाल छल, ओहो जबान भेल। जहिना मोतीलाल हट्ठा-कट्ठा आ छड़हड़गर जबान छलाह तहिना तीनू भाई भेलाह। पछाति मोलीलाल खूँखार आ बदमाश टाइपक लोक भऽ गेलाह। तहिना तीनू बेटो छल।

गाँव-घरक लोक हिनका लोकनिसँ त्रस्त रहैत छल। दिनुका आ रौतका बदमाश सेहो छलाह। कमाई नीक होमय लगलैन्ह। मोतीलालक खूब उन्नति भेल। खूब नीक जकाँ जमीन-जथा खरीदय लगलाह। मोतीलाल बूढ़ भेलाह। किछु दिनक बाद बीमार भय एहि संसारसँ जयबाक तैयारी करय लगलाह। बीमार भेलाक बाद ओकर इलाजक खर्चक बास्ते तीनू भाईमे मारि-पीट होमय लागैक। भगवान रैछ रखलैन्ह जे ओ एहि संसारसँ चल गेलाह। रामलाल कर्त्ता छलाह आ छोटका शोभीलाल पाचक। खूब नीक जकाँ भोज-भात भेल। जबारी (सभा लय) भोज भेल छल। सभाबला नोतहारीकेँ लोटा सेहो बाँटल गेल छल।

मोतीलालक जय-जयकार भेल। भाईलाल आ शोभीलालकेँ जन्महिसँ पूर्व मोतीलाल अपन जेठ बेटा रामलालक नामे करीब पाँच बीघा जमीन खरीदने छलाह। जखन भाईलाल आ शोभीलाल बालिग भेला तँ तीनू बेटाक नामसँ जमीन-जथा खरीदैत छलाह। मोतीलालक स्वर्गवास भेलाक बाद जेठका भाईक नामसँ जे जमीन खरीदल गेल छलैक, ताहिमे सँ छोटका दुनू भाँई हिस्सा देबक लेल कहलकैक। मुदा जेठका भाई ओहि पाँच बीधा जमीनमे सँ देबाक लेल तैयार नहि भय रहल छलाह।

आब जेठका भाई अलग भय गेल छथि। मझिला आ छोटका एकठाम अपन माईक संग रहय लगलाह। सभ कारोवार दू ठाम भय गेल। एकठाम तीन हिस्सा आ एकठाम एक हिस्सा। बँटवारा भय गेल। सभ अपन कमाय-खटाय लगलाह। जखन खराव समय अबैत छैक तँ बुद्धियो खराब भय जाइ छैक।

एक दिनक बात छल। सभसँ छोटका भाई शोभीलाल आ सबसँ बड़का भाई रामलालक बीच कोनो बातक लेल झगड़ा-झंझट भेल छल। राम लाल आ ओकर बेटा सभ मिलि छोटका भाई शोभीलालकेँ बड़ मारि मारलक। शोभीलाल मारि खा कय घर चलि आयल। जखन

शोभीलालक मझिला भाय भाईलाल घर पर अयलाह तँ मारि-पीटक पता लागल। छोटका शोभीलाल मारि खयने छल। तेँ बेसी गुस्सैल छल। शोभीलालक बियाह एहि साल भेले छल। कोनो बाल-बच्चा नहि भेल छलैक। मझिला भाई भाईलालकेँ एकटा बेटा आ दूटा बेटी भेल छलैन्ह। बेटा-बेटी नवालिक छल। शोभीलाल अपन जुटान कय भाईलालकेँ संग कऽ अपने हाथमे भाला लय जेठका भाईपर वदला लेबाक लेल चढ़ाई कय देलक। आब दुनू तरफसँ मारि होमय लागल, छोटका भाई-शोभीलाल अपन वेमातर भाई जे तीनूमे जेठ छल राम लालपर भाला चला देलक। भाला रामलालक छातीमे लागल। घटनास्थलेपर राम लालक मौत भय गेल। राम लालक बेटा अपन चाचा भाईलाल आ शोभीलाल बगैरहपर मुकादमा कयलक। शोभीलालक घरसँ किछु दूरीपर थाना छल।

थाना प्रभारी शोभीलाल आ भाईलालकेँ गिरफ्तार कय जेल लय गेल। दुनू गोरेपर 302 भा.द.वि.क अन्तर्गत मुकादमा दायर भेल। 302 भा.द.वि.क अन्तर्गत मुख्य मुदालह शोभीलाल भेलाह। दुनूकेँ जिलाक कारागृहमे डालि देल गेल। कोर्टमे मुदालहक तरफसँ जमानतक लेल अर्जी दायर केलक। भाईलालक जमानत होयबाक सम्भावना बनैत छल। जखन दुनू भाई जेल चल गेल तखन छोटका भाईक पत्नी जकर बियाह अही साल भेल छलैक। से कनिया कहय लगलीह जे हम आब एहि घरमे नहि रहब। कियैक तँ हमर घरबला मर्डर केशमे जहलमे छैथ। आब ओ 20 वर्ष धरि जेलमे रहत तँ हम सासुरमे रहि की करब। हम आब अपन नैहर जाइत छी।

श्यामलालक माय अपना पुतोहुकेँ किछु बोल-भरोस दय तत्काल रोकलैन। ओहि दिन जिला कारागृहमे बेटा भाईलालसँ भेँट करबा लेल गेलीह। एकटा पूर्जा ककरोसँ लिखा कय ओतय बैसल सिपाहीकेँ देलथिन। सिपाहीकेँ किछु नजराना सेहो देबय पड़लैन, तखन भाईलालसँ

भेँट भेलैन्ह। भाईलालक माय-बेटाकेँ कहलनि-

"बौआ, छोटकी कनिया कहैत अछि जे हमर बियाह एहि साल भेल अछि आब हम एहि घरमे रहि कऽ की करब। हमर घरबला 20 सालक बाद जेलसँ छुटि कऽ एतय औताह। ताबत हम अपन सौख-सेहन्ताकेँ डाहि लीअ। ई सम्भव नहि होयत। हम आब एहि घरक पुतोहु नहि रहब।"

ई बात सुनि भाईलाल छोट भाईक प्रति संवेदनशील भेलाह आ मनमे निश्चय कयलक जे मर्डर हमहीं कयलहुँ से जजक समक्ष कबुल करब आ छोट भाईक जमानत भऽ जाइत।

ओ ई बात मनमे सोचि मायकेँ ढाढ़स बन्हौलक आ अपना वकीलसँ भेँट करबाक इच्छा व्यक्त कयलक।

वकील साहेब जेलक गेटपर आबि भाईलालसँ भेँट कयलक। भाईलाल बाजल-

"वकील साहेब मर्डरक जिम्मा हम अपनापर लय लैत छी आ अहाँ शोभीलालकेँ बेकसूर साबित करा जमानत करा दियौक। जाहिसँ एकर घर बैसि जयतैक।"

वकील साहेब कतबो भाईलालकेँ समझौलक जे अहाँ यदि जूर्म कबूल कय लेब तँ आजीवन जेलमे रहय पड़त। मुदा भाईलालक भ्रातृ प्रेम अटल रहल। अन्तमे दुनू मुदालहकेँ कोर्टमे हाकीम बजौलक। वकील साहेब दुनू मुदालहक पैरवी दय चुकल छल। मजिस्ट्रेट साहव भाईलालसँ पुछलकन्हि-

"आप रामलाल को भाला से मारे थे?"

एहिपर भाईलाल जवाब देलक-

"जी हुजुर। हमहीं भाला चला कऽ रामलालकेँ मारि देलियैक।"

गुनाह कबूल केलाक बाद शोभीलालक जमानत भय गेल आ भाईलालकेँ जेलमे डालि देल गेलैक। अन्तमे केशक ट्राइल भेल। एकोटा गवाही नहि कहलकैक जे भालासँ सोभीलाल रामलालकेँ मारि देलक। अन्तमे मजबूर भय मजिसट्रेट भाईलालकेँ 20 सालक सजा देलक।

आब सजायाप्ता भाईलाल जेलमे रहि सजा काटय लागल।

एमहर छोटका भाई शोभीलाल जमानतपर जेलसँ निकलि घर अयलाह। घरमे घरबालीकेँ तसल्ली भय गेलैक जे हमर घरबला आब हमरा सुख देत। घरक कारोवार अपना हाथमे लेलक। मुकादमाक पैरवी करय लागल।

भाईलाल जेलक बड़का नेता बनि गेल। जेलमे जे खून कय जाइत अछि ओकर डर सभ मानैत छैक। एतय तक कि जेलर आ जेलक सिपाही सेहो ओहि कैदीसँ मिलि कय रहनाई अपना लेल बढ़िया बुझैत अछि। जे कोनो कैदी जेलमे जायत ओ यथा साध्य ओहि कैदीसँ चुंगी वसुल करैत अछि।

भाईलालकेँ जेलसँ दस-पाँच हजार टाका महीनामे होमय लागल। ई दस-पाँच हजार टाका अपना भाईकेँ प्रति माह देबय लागल। छोटका भाई ऐश-मौज करय लागल जाहिसँ दू चारिटा बाल-बच्चा सेहो भय गेलैक। भाईलाल जे जेलमे छल ओ छोटका भाई शोभीलालकेँ घरमे गाड़ल सोना-चान्दीक विषयमे जानकारी दय देलक।

शोभीलाल एक दिन अधरतियामे ओहि जगहकेँ खोधि जतेक जे गहना-जेबर छल से हथिया लेलक। आब शोभीलालकेँ जेलक आमदनी, खेतक आमदनी होमय लगलैक। संगहि माटिक तरमे गाड़ल गहना-जेबरमे सँ किछु बेचि रूपैया व्याजपर लगबय लागल। बरावर जेलक सजा कटैत भाईसँ अपन मजबूरी आ केशक पैघ खर्चक जानकारी दैत रहल। एतय एहि बातक विरोध भय सकैत अछि जे जखन मर्डर केशमे

सजा भय गेलैक तँ फेर कोन केशक पैरवी शोभीलाल करैत छल। जखन मर्डर भेल ओहि समयमे राम लालक बेटा सभ बालिग छल। आ मर्डर केशक अतिरिक्त आओरो ढेर रास केश दुनू तरफसँ भेल छल। तकरे पैरवी छोटका भाई शोभीलाल करैत छल।

शोभीलाल बड़ पैघ चुस्त-चालाक आ धोखेबाज छल। जे आमदनी होइत छलैक ताहिसँ जमीन अपना बेटाक नामे लेबय लागल। जे भाई अपन जिनगी बर्बाद कय ओकरा घरकेँ बसौलक आई ओ अपन भौजाई आ भाजीतकेँ भिन कऽ देलक आ ओकरा सभकेँ नाना प्रकारक प्रताड़ना देमय लागल। कहावतो छई जे जानवरकेँ पोसी तँ किछु दय कऽ जायत आ आदमीकेँ पोसी तँ ओ किछु वर्वादी करैत रहत।

कैदी भाईलालकेँ बीस वर्षक सजा एगारहे वर्षमे समाप्त भय गेलैक। जेलर कैदी भाईलालकेँ अपना चैम्बरमे बजा कऽ कहलकन्हि-

“भाईलाल, काल्हि तोहर जेलक सजा समाप्त भय जयतह। स्वतंत्रताक स्वर्ण जयन्तीक अवसरपर प्रधानमंत्री जेलमे बन्द कैदी सभक सजामे कटौती कय देलक अछि जाहि कारणे सभ छुट्टी आ रविवार मिला तोहर बीस वर्षक सजा पूरा भऽ गेलह। तो घरपर संवाद दय दहक आ किछु आदमीकेँ बजा लैह।”

भाईलालक जेलमे तूती बजैत छलैक। तुरत ओ चौकीदारकेँ द्वारा घरपर ई शुभ समाचार भेजलक।

जेलसँ निकलबाक सूचना घरपर अपना भाई शोभीलालकेँ भेजलक। गद्दार शोभीलालक मन पहिनहिसँ उनटल छल। ओ ई शुभ संवाद घरक कोनो आदमीकेँ नहि कहलक। आ ने अपने जेलक गेटपर भाईकेँ आनक लेल गेल।

बीस वर्षक सजायाप्ता भाईलाल आई जेलसँ बाहर भय रहल छल। जेलर ओकर कमायल ढेर रास रूपैया आ दूटा पैघ एटैचीमे भरल

समानक साथ जेलसँ बाहर कयलक। भाईलाल सोचैत छल जे घरसँ किछु आदमी के लय छोट भाई शोभीलाल जेलक गेटपर हमर इन्तजार करैत हेताह। मुदा जेलक गेटपर कियो नहि पहुँचल छल। ओहि समयमे दूरभाषक व्यवस्थो नहि छल जाहिसँ घरपर खबर देत। किछु देर इन्तजार केलाक बाद जेलर दूटा सिपाहीकेँ एकटा जीपपर सभ समानक संग कैदी भाईलालकेँ ओकरा घर भेज देलक।

साँझक समय छल। दूटा सिपाहीक संग जे भाईलालक समान अपना कंधापर लय भाईलालक घरपर पहुँचल। भाईलालक बेटा आ घरबालीकेँ ई जानकारी नहि छल जे बीस वर्षक सजायाप्ता कैदी 9 वर्ष पहिनहि घर पहुँच जायत। तुरत सभ बाल-बच्चा सिपाहीक खातीरदारीमे जुटि गेल। नास्ता आ चाह-पानक व्यवस्था भेलैक। सिपाही लोकनि तुरत अपन वापसी गाड़ीसँ जेल गेटपर पहुँच गेल। गामक लोक सभक भीड़ लागि गेल। जतेक हित-अपेक्षित छल सभ दरबाजापर जमा भऽ गेल। भाईलालक संग कुशल-क्षेम भेल। मुदा छोट भाई शोभीलाल भाईक भेँट करय नहि आयल। अपन घरबाली आ बेटा-बेटीसँ सभ बातक जानकारी भेलैक।

रातिमे जखन बाजारसँ शोभीलाल आयल तँ भाईलाल ओकरा बजौलक। ओ बड़का भाईक बजौलापर सामने आयल। आ अपन भौजाई, भातीज आ भतीजीक विषयमे ढेर रास शिकायत करए लागल। अपनाकेँ निर्दोष बतौलक। घरमे गाड़ल सोना-चाँदीक विषयमे कहलक जे हम ओकरा नहि निकाललहुँ। ओ कतय छल से हमरा कहाँ पता छल। शोभीलाल बगाबतीक तेबरमे बाजल।

भाईलालकेँ अपन भाईपर कैल उपकारपर पश्चाताप होमय लागल। मुदा आब पश्चाताप कयलासँ कोनो लाभ नहि भय सकैत छल। अपन घरकेँ बर्बाद कय भाईक घरकँ बसौनिहार भाईलालकेँ बड़ कष्ट भऽ रहल छलैक। भाईलालकेँ अपन भाई शोभीलालपर घृणा होमय लागल।

घृणा एहि लेल जे जाहि भाईक बास्ते, ओकरा बदलामे जेलक सजा हम कटलहुँ से हमरा आ हमरा परिवारक हेतु महाकाल बनि जाइत से विश्वास नहि छलैक।

शोभीलाल एकसँ एक उपद्रव करय लागल। पाईक गर्मी छेबे छल। आब शोभीलाल अपन सहोदर भाई भाईलालपर छोट-छोट बातक लेल केश मुकादमा करए लागल।

एक दिनक बात छलैक। शोभीलाल अपना धानक खेतमे कीट-नाशक दबाईक छिड़काव कयने छल। पैसा अलेल रहलाक कारणे शोभीलाल आ ओकर बाल-बच्चा मदिरा-मांसक प्रयोग करय लगलाह। माँस खयबाक हेतु बकरी पोसने छल। ओहि बकरीकेँ चारि-पाँचटा बच्चा छलैक। शोभीलालक खेतमे धानक रोपनी भऽ गेल छल। खेतमे धान लहलहाइत छलैक। परोसीक माल-जाल धानक फसिल खा लैत छलैक। ओहि उपद्रवसँ शोभीलाल तंग आबि गेल छल। आ खेतमे लागल धानमे किछु कीड़ा लागि गेल छल। ओहि सभक बचाऊ बास्ते शोभीलाल अपना खेतमे कीट नाशक दवाई छिटने छल। संयोग एहेन भेल जे ओकर छोट-छोट बकरीक बच्चा आ बकरी ओही खेतक पानि पीब लेलक। सभ बकरी आ बच्चा मरि गेलैक। गाममे हाहाकार मचि गेल। दुष्ट शोभीलाल अपन भाई भाईलाल आ ओकर बाल-बच्चापर केश कय देलक। जे हमरा बकरी आ ओकर बच्चाकेँ जहर खुआ मारि देलक।

गामक लोक सभ तहकिताकत करय लागल। पौलक जे शोभीलाल अपनहि कीटनाशकक प्रयोग कयने छल। जे दवाई पानिमे मिल गेल छलैक। ओ पानि बकरी आ ओकर बच्चा पी गेल छल। जाहिसँ बकरी आ ओकर सभ बच्चा मरि गेल। गलती शोभीलालसँ अपने भेल छल आ मुकदमा भाईलाल आ ओकरा धिया-पुतापर कऽ देलक।

थाना अध्यक्ष छानवीन करय लागल। थानाकेँ शोभीलाल ततेक ने

रूपैआ दय देलक जे मुकादमाकेँ सत्य कय देलक। भाईलाल मुकादमा बाज छलाहे ओ अनुमण्डल आरक्षी पदाधिकारीक ओतय निरीक्षण आ जाँच करबाक लेल आवेदन देलक केश असत्य छल जाहि कारण मुदई शोभीलाल पर उलटे मुकादमाक आदेश कय देलक।

शोभीलालक ऊपर भा.द.वि. धारा 211 आ 182 क अन्तर्गत मुकादमा भय गेल। पुलिस आयल आ शोभीलालकेँ पकड़ि जेलमे डालि देल गेलैक। जेहने करनी आ तेहने भरणी भय गेल। आब शोभीलालक बाल-बच्चा आ भाईलालक पापक घैल भरि चुकल छल। भाईलालक पापक कारण जे जेठ भाईकेँ हत्या कयनिहारकेँ साथ देलक। हत्यारा-हत्यारा होइत छैक। तेँ ओकरा पराश्रय नहि देबाक चाही।

शोभीलालक पापक घड़ा तँ स्पष्टे अछि। जे अपने हत्यारा छल आ भाईलाल ओकरा बदलामे जेल कटलक। ओ भाईलालक बाल-बच्चाकेँ भिन कय प्रताड़ना देबय लागल। भाईलालक पापक प्रायश्चित 11 वर्ष जेलमे रहलाक कारणेँ कटि गेल। मुदा शोभीलालकेँ धारा 211 आ 182क अन्तर्गत कोर्टसँ वारन्ट जारी भेल। वारन्ट थाना पहुँचल आ पुलिस ओकरा पकड़ि जेलमे दय देलक। ❑

मित्रक हेतु बरदान

रघुवर दासक जीवन कठिन दौड़सँ गुजरल छल। माय-बाप बालपनहिमे स्वर्ग सिधारि चुकल छल। एक गोट बाल संगी महेश छलथिन्ह। दुनूक मित्रता अपूर्व छल। कतहुँ जाथि संगहि, भोजन करथि तँ संगहि, सुतैत तँ संगहि, पढ़ैत तँ संगहि। क्रमिके बालपनसँ किशोरावस्थाकेँ प्राप्त केलैन्हि।

रघुवर दास आध्यात्मिक लोक छलाह। बिनु स्नान-ध्यान आ पूजा-पाठ केने भोजन नहि करैत छलाह।

समय बितैत गेल दुनू मित्रमे घनिष्टता बढ़िते गेल। महेशक पिता रघुवरोकेँ अपना सन्तानसँ कम नहि मानैत छलथिन्ह। महेशक शादी करौलैन्ह। रघुवरोक शादी कराबक लेल प्रयासमे छलाहे। रघुवरकेँ एहि बातक जानकारी भऽ गेलैन्ह। रघुवर ई नहि सोचैत रहथि जे हम शादी-बियाह करी। आ शादी कय घर-गृहस्थी कायम करी। हिनकर ध्यान भगवानक पूजा-पाठपर सदिखन रहैत छलैन्ह। ओकरा जखन एहि बातक भनक भेलैन्ह तँ ओ घर छोड़ि बाहर चल गेल। कहियो घरसँ नहि निकलल छल। जेना-तेना, पुछैत-पाछैत रेलगाड़ी पकड़ि काशी विश्वनाथक दरबार पहुँच गेल। दिन-राति भोलानाथक कीर्तन-भजन आ पूजा-पाठमे समय बितबय लगलाह। एक दिन रातिमे सुतल छलाह आकि स्वप्न देखै छथि जे हमर मित्र महेश हमरा लग पहुँचलाह अछि। आ अपन दु:खनामा कानि-कानि कऽ कहि रहल छथि जे हमरा हेतु

भगवानकेँ कहियौन जे हम सपरिवार खुश रही।

रघुवर अपन मित्र महेशकेँ आश्वासन देलैन्ह जे बेस हम भगवानक भक्त छी जे मंगबनि से अवश्ये देताह। रघुवर भोरे स्नान-ध्यान कय बाबा विश्वनाथक मन्दिरमे पूजा-पाठ कय ध्यानपर बैसि गेलाह। बहुत देरक बाद बाबा विश्वनाथ दर्शन देलकन्हि आ कहलकन्हि-

"भक्त रघुवर तों मांग जे मंगवे से मांग, हम तोहरा भक्तिसँ बड़ खुश छी।"

रघुवर बजलाह-

"हमर एकटा मित्र छथि महेश, ओकरा सपरिवारकेँ खुश राखू।"

बाबा विश्वनाथ बजलाह-

"हम अहाँक मित्रकेँ जरूर खुश राखब मुदा सिर्फ चारि दिनक लेल। ओ चारि दिन तूँ बता जे कोन-कोन दिन... ।"

रघुवर बजलाह-

"चारि दिन, 1. गर्मीक दिन, 2. जाड़क दिन, 3. वर्षाक दिन, 4. वसन्तक दिन।"

बाबा विश्वनाथ असमंजसमे पड़ि गेलाह, ओ पुन: बजलाह-

"बस तीन दिन खुश रहत ओ दिन अहाँ बाजू।"

रघुवरजी बजलाह-

"1. Yesterday, 2. Today, 3. Tomorrow."

बाबा फेर असमंजसमे पड़ि गेलाह, कहलनि मात्र दू दिन खुश रहताह। ओ दू दिन अहाँ बाजू।

रघुवर बजलाह-

"1. Current day, 2. Next day."

बाबा फेर असमजसमे पड़ि गेलाह। ओ बजलाह-

“सिर्फ एक दिन अहाँक मित्र खुश रहताह, ओ एक दिन बाजू।”

फेर रघुवर बजलाह-

“हे बाबा विश्वनाथ, अहाँक हम परम भक्त छी। हमरा सिर्फ एक दिन खुश रहबाक बरदान दय दिअ। ओहिमे आनाकानी नहि होयबाक चाही। ओ दिन अछि- Every day.”

बाबा विश्वनाथ हँसए लगलाह। हँसैत बजलाह-

“भक्त अहाँक बुद्धिमता आ विचारक लेल हम खुश छी, अहाँक मित्र महेश हर हमेशा खुश रहताह।”

तैबीच रघुवरक निन्न टुटि गेलैन्ह आ ओ भगवानकेँ भवनकेँ षाष्टांग प्रणाम कयलैन्ह। ❑

प्रेम बिबाह

भोरे-भोर सुतले छलहुँ कि फोनक घन्टी बाजल। अकचका कऽ उठलहुँ। फोनकेँ रिसिभ कयलहुँ। फोनसँ अवाज आयल-

"भैया, गोर लगैत छी।"

हम बजलहुँ-

"के राम बाबू हौ? खूब आनन्द रहह।"

"भैया एकटा अद्भुत घटना घटि गेल।"

"की हौ की भेलैक अछि?"

राम बाबू बजलाह-

"अपन भागिन- शम्भु अछि ने, से एकटा छौड़ीकेँ लय भागि गेलैक अछि!"

"लड़की कतय के छै हौ?"

"ओहो आसे-पासक छिए। से ओकरा सभकेँ की करक चाही।"

हम पुछलियैन्ह-

"कोना की भेलैक से बाजह।"

राम बाबू एहि प्रकारसँ वृतान्तक वर्णन करय लगलाह। राम बाबूक सभसँ छोट बहिन सुनीता छैक। ओकरा दूटा बेटा छैक। जेठका बबलू, जे नेपालहिमे कनीय अभियंताक पदपर कार्यरत् छथि। बड़ सज्जन।

नीक बात बिचार। ओहिना छोटका शंभू बड़ चलता-पुरजा छैक। उम्र तकरीवन 20-25 सालक हेतैक। नेपालमे रोड-सड़क बनै छै तकर छोट-मोट ठीकेदारी कय किछु कमा लैत छैक। एकटा छोटका आ एकटा बड़का मोबाइल सदिखन संगेमे रखैत अछि। नीक-नीक काजक लेल मोबाइल तँ सहायक अछिए। मुदा अधलाहो काजक लेल ई ओहने घातक होइत छैक। आई-काल्हिक छोट-छोट नैना सभ जे मोवाइलक संचालन आ ओहिमे जतैक विधाक जानकारी रखैत अछि से बुजुर्गोकेँ नहि रहैत छैक। ओना तँ मोबाइलसँ सभ कार्य सम्पादित होइत अछि। बजारसँ खरीद-बिक्री, रेलक टिकट आदि इन्टरनेटक माध्यमसँ दुनिया भरिक जानकारी तत्काल भय जाइत अछि। मोबाइलक एहेन-एहेन कोड होइत छैक जे चलाक आ धूर्त्त व्यक्तिकेँ जानकारी भेलासँ बैंकमे जमा राशि सेहो निकैल जाइत छैक।

शम्भु एकपर एक मोबाइल रखने अछि। बाप परम शुद्ध व्यक्ति छथि। हुनका अनटेटल बात नीक नहि लगैत छैन्ह। ओ करवनो शम्भुपर विश्वास नहि करैत छैथ। मुदा करवनो-करवनो विश्वास करय पड़ैत छैन्ह। आ शम्भुक साहसपूर्ण काजसँ खुशो होइत छैथ। रोड-सड़कक पेटी कंट्रैक्ट्रीमे अपना घर-आंगनकेँ माटिसँ भरा देब। अपना घर लग रोड-सड़क बनबा देब। जाहिसँ हिनकर पिता सेहो अधहे मने खुश रहैत छैथ। शम्भु अपना घर लगहक बाटकेँ ठीक करा ओकरा मुख्य मार्गसँ जोड़ि देने छल। सुनीता पढ़ल लिखल आ माय-बापक सभसँ छोट सन्तान छल। ओकर बियाह बड़ धूम-धामसँ भेल छल। ओहि समयमे तकरीवन 25-30 हजार टाका खर्च भेल छल। सुनीताक पिताजी एक किसान छल। मात्र एकटा बेटा नौकरी करैत छल आ घरमे चारि-पाँचटा बाल-बच्चा पढ़ैत छल। जेना-तेना बाल-बच्चाकेँ पढ़ेनाइ, खेती-गृहस्थी आ पैघ काजक लेल जमीन बेचि काज करैत छलाह।

जाहि कारणे ओकरा कहियो कोनो कठिन समस्याक समाधान

करबाक मौका नहि भेटल छल।

शम्भु कोनो काजक हेतु मायकेँ तेना ने पोल्हा लैत छल। आ केहनो दुरूह कार्यक लेल मायकेँ अपना पक्षमे राजी कय लैत छल। पिताजीकेँ कोनो बातक जानकारी नहियोँ रहल आ ओ काम घरमे भय जाइत छल। तकर कोनो मेष-वृष शम्भुक पिता नहि रखैत छलाह। नजदीकक कॉलेजसँ इन्टरमीडिएट कयने छलाह। नेपालहिमे बी-एड कय रहल छलाह।

शम्भुक पिता तीन भाँइ छलथिन्ह। सभसँ जेठ भाईक बेटा जे बौर गेल छल। ओकर पत्नीक चचेरी बहिन बबिता जे पढ़य-लिखयमे तेज छल। शम्भुकेँ सरोकारीएमे रहलाक कारणे ओकरासँ मोबाइलक माध्यमसँ बात-चीत, हँसी-मजाक होमय लागल। दुनू सम-बयस्कक कारणेँ एक-दोसराक प्रति विशेष आकर्षण भय गेल छल। आकर्षणो स्वाभाविके छल। एहि उमरमे लोक की की ने कय लैत अछि। ई उम्र मानवक विकासक सीढ़ी छैक। ओ विकास संर्वांगीन होइछ। चाहे ओ नकारात्मक हो वा सकारात्मक। एहि उमरमे लोक बनितो अछि आ बिगैड़तो अछि। ई उमेर नदीक धारक समान होइत अछि। जँ ओहि धाराकेँ बान्हि देल जाइत छैक तँ उसर भूमि आ असिंचित भूमिक सिंचाई भय जाइत अछि आ नहि बान्हलासँ नीचा बहि जाइत अछि। मानबक मनोकेँ यैह दशा होइत छैक जँ ओकरा ऊपर बान्ध पड़लासँ मनुष्य उच्चसँ उच्च शिखरपर पहुँच जाइत अछि नहि तँ बहुत ऊँच पहाड़परसँ नीचा गिर जाइत अछि। यानि ओहि मानबक अधोगति भय जाइत अछि। मन आ पानि सदिखन नीचे तरफ जाइत अछि।

शम्भुक मन पढ़ाई-लिखाईक तरफ कम आ हाइ-फाइमे बेसी रहैत छल। ओ बराबर ओहि लड़की, जे एकर पितियौत भाईक पितियौत सारि छल- सँ भेँट करब, घन्टाक-घन्टा बात करब, रूटीन बनौने छल। कहबियो छैक जे करजा लय करजा लगावी, टुटल घरमे ताला लगाबी

आ सारक संगे बहिनकेँ पठाबी तँ ओ बुरले अछि। एक तँ सम-वयस्क आ दोसर साली, बहनोइक रिस्ता ओ नैया तँ डुमबे करत किने? लोक सभ कहैत छैक जे सुखाएल खड़ लग जँ आगि राखि दियौक तँ ओहिमे आगि लगबे करत किने। बकरी लग जँ घास राखि दियौक तँ बकरी घासकेँ सुंघि कऽ नहि छोड़ि देत, ओकरा खेबे करत। सैह बात शम्भुक साथ घटित भेल। पहिने तँ शम्भु बबिताक अभिभावकक पास बिबाहक प्रस्ताव भेजलक, जे दुनू गोटेक शादी करा दियैक। मुदा लड़कीक पिता जे एकटा अवकाश प्राप्त सरकारी कर्मचारी छल से अपना सगही पत्नीसँ विचार कयलक। बबिताक अपन माय एहि संसारसँ चलि चुकल छलीह। तेँ बेचारीक मनोरथ पूरा नहि करबाक चेष्टा कयल गेलैक। बबिताक घरमे ओकर पीसा आ पीसीक जुइत चलैत छलैक। तेँ पिता घरक किछु नहि छलाह। कमाई-खाइसँ मतलब रहैत छैन्ह। दुनियाँ-दारीसँ कोनो मतलब नहि, बबिताक पिसी दुनूक शादीक प्रस्तावकेँ नामंजूर कय देलक।

शम्भु, बबिताक पाछाँ लागि चुकल छल। आ बबितोकेँ नीक लगैत छलैक। ताली एक्के हाथे नहि बजैत छैक। बबिताक बी.ए.क परीक्षा चलि रहल छल। ओ सभ पेपरक परीक्षा दय देलक। आई अन्तिम पेपरक परीक्षा हेतैक। बबिता परीक्षा केन्द्रपर बससँ परीक्षा देबाक हेतु गेल छलीह। ओ शम्भुकेँ फोनसँ परीक्षा केन्द्रसँ घर पहुँचेबाक हेतु आग्रह कयलनि।

शम्भु हर हमेशा ओकरे फोनक इन्तजारमे रहैत छल। लाख आवश्यकताबला काजकेँ छोड़ि अपन प्रेमिकाकेँ घर पहुँचावय हेतु गेल। परीक्षा समाप्त भेल। शम्भु बबिताकेँ मोटर साइकिलसँ ओकरा घर पहुँचाबय हेतु गेल छल। दुनू मोटर साइकिलपर सवार भय अपन घरक तरफ विदा भेल। मुदा बाटमे शम्भुकेँ की फुरेलैक ओ ओकरा लय अपन माईक मसियौत बहिनक बेटा लग पहुँचल। ओतय घरवारी लोकनि एक राति रहय देलकनि। दोसर दिन सोचलक जे ई अपहरणक मामला अछि।

एहिमे हमरा सभक बदनामी होयत। तेँ ओकरा ओतयसँ चलि जयबाक आग्रह केलैन्ह।

पुन: ओतयसँ बबिताकेँ लय अपन मौसीक ओतय पहुँचल। मौसी ओकरा बड़ डाँट-डपट कयलक ओ ओतयसँ फेर भागल आ अपना मामा गाममे आबि शरण लयलक। ओकर एकटा मामा जे गामक छोट-छीन पंचैतिया छलाह। ओ मामलाक तहकिकात करय लागल। शम्भुसँ अधिक चुस्त-चालाक छल। ओकरामे विशेषता छलैक जे ओ स्पष्ट वादिता छल। जै चलते पंचैतियोमे एक पक्ष एकर खिलाफमे भय जाइत छल, ओ पक्षक पहाड़ छल। ओ अपना मापदंडसँ दुनूक परीक्षा लेबय लागल। अन्तमे पौलक जे दुनू एक दोसराक प्रति लैला-मजनू बनल अछि। शम्भुक मामा सोचलक जँ लड़कीबला जँ अपहरणक केश कय देत तँ बहिन-बहनोइ आ भागिन उजैर जाएत। आ अन्तिम रिजल्ट विवाहे हेतैक। तेँ ओ अपना माध्यमसँ अपन बहिन यानी शम्भुक मायकेँ कोनो बहन्ने अपना घरपर बजौकलक। ओकरा अयलाक बाद सभ बातसँ अबगैत करौलक।

शम्भुक माय एहि खेला-बेलाकेँ पहिनहिसँ जनैत छल। ई नहि जानि पौने छल जे शम्भु बबिताकेँ लय मामा गाम आबि गेल अछि। ओ पहिने अपन होबयबाली पुतोहुकेँ देखलक। बबिताक रंग बहुरूपियाक द्वारा बनल माँ कालीक सदृश छल। कद छोट, जेना बड़ बच्चा जकाँ बुझना जाइत छल। शम्भु कहैत छलैक जे बबिता पढ़अ-लिखअमे बड़ तेज अछि। ए.एन.एम.क पढ़ाई कय चुकल छल। शम्भुक माय पुतोहुकेँ देखि झमान भय खसलीह। आब करत तँ की करत। ओ शम्भुकेँ पहिनहिसँ डाँट-डपट केने रहैत, ओकरा छूट नहि भेटल रहितैक तँ आई ई दृश्य देखबामे नहि अबैत। मुदा जे भबितब्य छैक से हेबे करतैक।

सभक विचार भेल जे आब एहि दुनूक कोर्ट विवाह करा दियैक जे मामला अपहरणसँ हटि प्रेम प्रसंगपर चलि जाएत। आ एकर अन्तिम

निष्कर्ष यैह होइत छैक, तँ ओ सभ शम्भुक अपन जेठका मामा जे गामसँ बहुत दूर रहैत छल। ओतय भेज देल जाय। शम्भुक माय, बबिता आ शम्भु अपन मामाक ओतय पहुँच गेल। ओतय शम्भुक मामा अपन छोट बहिन आ भागिनपर बिगड़लाह। मुदा आब विगड़लोसँ कोनो सुधार नहि भय सकैत अछि। शम्भुक जेठ भाई एकरा दुनूक कोर्ट-विवाह कराबय हेतु एँड़ि-चोटी एक कयने छल। वकीलसँ राय विचार लय कोर्ट विवाहक तैयारी करय लागल। पहिने बबिताक मामासँ सम्पर्क कयल गेलैक। ओकरा कहल गेलैक जे आबो दुनूक शादी करा देल जाय। ओकर सहमति पाबि आगाँक काम शुरू होयतैक। बबिताक माय स्वर्गवासी भय चुकल छल। सतौली माय छलैक। बाप शुद्धमतिया। सरकारी कर्मचारीसँ सेवा मुक्त। कहबी छैक माय मुइने बाप पित्ती भय जाइत छैक। से जहियासँ बबिता घर छोड़ि शम्भुक संग भागि गेल छल। कहियो खोज-खबर नहि लेलक। शम्भुक मामा बबिताक मामासँ राय-विचारक प्रयोजनक आकांक्षा कयने रहथि। जे सौहार्दपूर्ण बाताबरणमे शादी भय जाय से बबिताक मामा कोनो जवाब नहि दय सकल। हारि पचता कऽ बबिताक आ शम्भुक कोर्टमे शपथ पत्र बनल। बबिताक उम्र विवाहक श्रेणीमे नहि अबैत छल। ओ नावालिग छलीह। किछु मास बाँकी छल वालिग होबयमे। कोटमे दुनू एक दोसराक राजी-खुशीक हेतु कागज बनल। मजिस्ट्रेट अगिला तारीख दय देलैन। आब दुनू भय मुक्त भऽ गेल। बबिताक शादीक तैयारी मन्दिरमे करबाक हेतु चलय लागल।

शम्भुक जेठ भाई सभ प्रक्रिया पूरा करैक हेतु सतत तैयार रहलाह। शम्भुक मामी, ममियौत भाई आ भाभी अन्य स्त्रीगण सभ मिलि समीपहिमे अबस्थित महादेवक मन्दिरमे शादी करेबाक हेतु पहुँचल। बाजारसँ सभ समान खरीदल गेल। लड़का-लड़कीक कपड़ा-लत्ता बियाहक हेतु शम्भुक मामी जे बियाह-शादी कराबयमे पहिनहिसँ दक्ष छलीह, ओ अपनहि नेतृत्वमे सभ काम सम्पन्न करौलक।

लड़का आ लड़कीक बियाह भेलाक बाद नीक तरहेँ भोज-भात भेल। मन्दिरमे विवाहक जे फीस छैक से जमा करय पड़लैक। सभ खर्च-बर्चक वहन शम्भुक जेठ भाई कयलक। मन्दिरसँ विवाह करेलाक बाद सभ मामाक डेरापर अयलाह। ओतयसँ अपना जन्म स्थान हेतु दुल्हा-दुल्हिन चलि चुकलीह। एहि प्रकारे प्रेम-विवाह सम्पन्न भेल। एहि अवसरपर शम्भुक आ बबिताक माय-बाप उपस्थित नहि भय सकलाह।



गामक एकता

माला एक सप्ताह पहिने अपन सासुर आलापुरसँ नैहर मझारी आयल छलीह। कियैक तँ ओकरा बच्चा होनिहारी छैक। सातम मास बित आठम चढ़ल छैक। बेटीक लेल माइये सभसँ अधिक आत्मीय होइत अछि। प्रसब बेदना माईक मुँहे देखलासँ कम भय जाइत अछि। प्राय: देखल गेल अछि जे संतानोत्पतिक समयमे नैहरे नीक होइत छैक।

रामधनी काका हकासल पियासल, दौगल दौगल घर अयलाह आ हँफसियैत अपन पत्नीसँ कहलैन्ह-

“आई अखन मालाकेँ सासुर आलापुर भेज दियौक। कियैक तँ बड़ जोर बाढ़ि आबि रहल छैक। अपना सभक घर कोसीक कछेर पर अछि। गामक चारू कात रिंग बान्ध अछि। ओ रिंग बान्ध पर पानि लापलप कय रहल अछि। करवनो रिंग बान्धकेँ तोड़र अपना गामकेँ दहा देत। तेँ मालाकेँ सासुर भेज दियौक। कमसँ कम ओतय तँ ओकर जान बाँचि जेतैक। नदीक पानि बढ़ि रहल अछि। जेमहर ताकू ओमहर पानिये-पानि देखा रहल अछि।”

एहि इलाकामे सभ साल बाढ़ि अबैत अछि। बाढ़ि की औतैक, आफद् विपत आ मुसिवत आबि जाइत अछि। कोशीकन्हा लोकक जीवन बरसात भरि बड़ कष्टप्रद भय जाइत अछि। जान माल सदिखन खतरेमे रहैत अछि। कोशीकन्हामे खेतीये सभक जीवनक सहारा अछि। सालमे तीनटा फसल नीक जकाँ उपजैत अछि। गेहुँ, मकई, धान आ

एकर अतिरिक्त सरसों, तोड़ी, राई, धनियाँ, प्याज, लहसून, तीसी आओर अजमाइनक खेतीसँ ओतुका लोक सभ समृद्ध रहैत छथि। नकदी फसलक महत्व किछु आओर छैक। केवल बरसातमे किछु कष्ट सहय पड़ैत छन्हि। खेतीक प्रधानता एतय मुख्य अछि। कहबी छैक उत्तम खेती, मध्यम वाण, निषिद चाकरी भीख निदान। ई बाढ़ि खेतीकेँ चौपट कय देलक अछि।

माला एक सप्ताह पहिनहि अपन सासुरसँ एतय आयल छलीह। ओकरा बच्चा होनिहारी छैक। सातम बित आठम चढ़ल छैक। बेटीक लेल माय सभसँ प्रिय आ आत्मीय लोक होइत अछि। प्रसव वेदना माइक मुँह देखलासँ कम भय जाइत अछि। प्राय: देखल जाइत अछि जे बेटीक संतानोत्पतिक समय नैहरे नीक होइत छैक।

माई जतेक यतनसँ देख भाल बेटीकेँ करैत अछि ओतेक सासु नहि। माय आ सासुमे बड़ अन्तर छैक। मायक ममता जतेक बेटी पर रहैत छैक ओतेक ममता सासुकेँ नहि रहैत छैक। कतौ-कतौ ओहो देखल गेलैक अछि जे सासु अपनो मायसँ पुतोहुकेँ प्रसवक समय बेसी देख-रेख करैत अछि।

एहेन कमे सासु अछि। अधिकत्तर सासुकेँ पुतोहुक प्रति भावना खराव रहैत अछि। तेँ मालाकेँ ओकर माय अपना ओहिठाम बजा लेलकन्हि। संगमे दू सालक एकटा बेटा सेहो छल। मालाक मायकेँ पता नहि छल जे एहेन भीषण बाढ़ि औतैक। नहि तँ बेटीकेँ नहि अनितथि। गर्भवती रहलाक कारणे मालाकेँ लौने छल। जे नैहरमे रहत। एतय अस्पतालमे भर्ती करा देबैक।

मुदा हाय रे देबक चक्र जे बाढ़िमे घरसँ निकलब कठीन भय गेल। माय गुमसुम बैसि सोचि रहल छलीह, जे आब की करक चाही? मालाकेँ सासुर भेज दियैक की नहि। एहि तारतम्यमे पड़ल छलीह। सासुर

भेजनाइक अर्थ भेल अपन मानहानि। बेटीकेँ सभ दिन सासु दियादनीक उपराग सुनय पड़तैन। सासु दियादनी ई कहितथि जे देखलियौ तोरा माय-बापकेँ जे बिना विदागरी करौनहि सासुर भेज देलकौ। किछुओ दिन नहि राखि सकलहुँ।

माय ई सोचि दृढ़ निश्चय कयलक जे अपने मरब तँ मरब मुदा बेटीकेँ सासुर नहि भेजब। ईहो सोचय लगलीह जे हरेक साल बाढ़ि अबैत अछि। सरकार आ प्रशासन बाढ़िक नाम पर लूट-खसोट करैत अछि। बाढ़ि नहि आओत ओकर स्थायी समाधान नहि करैत छथि। बाढ़िक जँ स्थायी समाधान भय जायत तँ आइ ई दिन देखबामे नहि अबैत।

मालाक बाबूजी फेर ओकरा मायकेँ टोकलक-

“जँ बाढ़ि चलियो जायत तँ पानिकेँ घटैमे एक दू मास लागि जायत। तँ मालाकेँ आइये सासुर भेज दियौक। दू-चारि दिनक झंझट नहि अछि। ई कैक दिनक संकट अछि।”

मुदा मालाक मायक मन नहि मानैत छल जे हम मालाकेँ सासुर भेज दी। ओ सोचैत छलीह जे अपने भुखले रहब तँ रहब मुदा बेटीकेँ कोनो कष्ट नहि होमय देबैक। बिना विदागरी करौनहि कोना सासुर जाय देबैक। जीबन भरि हमरा बेटीकेँ लोक उलहन उपराग देत।

मालाक माय अड़ल रहलीह। ओ मालाकेँ किन्नहुँ नहि सासुर भेजबाक पक्षमे छलीह। मालाक माय आ बाबूजीमे बतंगर होमय लागल। मालाक माय अड़ल रहलीह। इज्जत प्रतिष्ठाक सवाल अछि। हम कोना बेटीकेँ सासुर भेजब। दुनू प्राणीमे जोर-जोरसँ बात होमय लगलैक। आस-पासक परोसिया लोकनि जमा भय गेल। सभ दुनूक बात बुझलक।

समाजक लोको सभ मालाक मायक पक्षमे बोट देलक। किछु कालक बाद पूरा गामक स्त्री-पुरुष जमा भऽ गेल। सभक विचार भेल जे सभ कियो मिलि रिंग बान्धपर सँ जे पानि गाममे आबक लेल

झिरझिराइत छल तकरा रोकबाक उपाय करक चाही। सभ कियो मिलि खलिया सिमेंटक बोरामे माँटि भरि बान्ध पर जमा करय लागल। पानि जे बान्ध पर होइत गाममे अबैत छल से बन्द भय गेल। भरि राति पूरा गौंआँ जागल रहि गेल। बोरा-पर-बोरा देमय लागल रिंग बान्धकेँ ततेक ने मजगूत कयलक जे ने बान्ध टुटल आ ने एको रत्ती पानि गामयमे आयल। गौंआँ-घरूआ आ समाजक कठिन मेहनतसँ गाममे पानि नहि आयल।

दू-चारि दिनक बाद बाढ़िक पानि कम होमय लागल। गौंआँ सभ कहय लागल-

“माला हमरा गामक बेटी अछि। हमरा सभक बेटी अछि। ओकरा बिना सासुरबलाक बिदागरी करौने कोना सासुर जाय देबैक। गामक नर-हँसाय नहि होमय देबैक। एकरा रक्षाक हेतु जतेक राति जागय पड़त ओतैक राति जागब। मुदा अपना इज्जतकेँ बुरऽ नहि देब। माला हमरा गामक इज्जत अछि। हमर मर्यादा थिकीह।”

पूरा गाँवबला दू तीन दिन तक कठिन परिश्रम कय पानिकेँ गाममे नहि आबय देलक। रसे-रसे पानि कम भय गेल आ बान्ध सेहो मजगूत भऽ गेल। गौंआँ सभक विचार भेलैन्ह जे प्रसव काल धरि माला एतय रहतीह।

किछु दिनक बाद बाढ़िक पानि कम भय गेल। मालाकेँ बच्चा जन्म लेबाक समय लगिचा गेल। माला बड़ कमजोर छलीह। मालाक पिताक हालत दयनीय छल। ओकरा ओतेक उपाय नहि छलैक जाहिसँ मालाकेँ अस्पतालमे भर्ती कराओल जाय। जहिना गाममे बाढ़ि नहि आबय तकरा रोकक लेल ग्रामीण एकता प्रबल छल तहिना पूरा गाँव एक भय किछु आर्थिक मदद कय मालाकेँ अस्पताल पहुँचौलक। मालाकेँ पानि चढ़य लगलैक। मालाक स्वास्थ्यमे सुधार भेलैक आ ओ स्वभाविक रूपे बच्चाकेँ जन्म देलक। पूरा मझारी गामक लोक खुश छल। अस्पतालक डॉक्टरकेँ

सभ बातक जानकारी भेलैक। डॉक्टर साहेब सेहो भरपूर मदद कयलन्हि। दबाईक ब्यवस्था अस्पालेसँ भय गेलैक। डॉक्टर साहेब बजलाह जे ग्रामीण एकतामे ओ शक्ति छैक जे कठिनसँ कठिन कामकेँ आसान बना दैत अछि। ग्रामीण जीवनमे समाजिकताक यैह मतलब रहैत छैक जे अपने दु:ख काटि दोसरकेँ सुख प्रदान करी। ❑

भाग्य अपन-अपन

दादी अपना लग अपन पोता जीबितेश आ पोती हिमाक्षी के लय सुतबाक लेल ओछौवन पर पड़ल छलीह। पोता पोतीकेँ सुतयबाक हेतु लोरी सुनबैत ओकरा सभक पीठकेँ थपथपबैत छलीह। पोता पोतीक सुतबाक इच्छा नहि छल तेँ उछल-कूद करैत छल। समबेत स्वरमे दुनू बाजल-

"दादी एकटा खिस्सा कही।"

दादी भरि दिन लुरु-खुरुमे लागल रहैत छलीह। तेँ भरि दिनक थाकल ठहियैलक कारणे शीघ्रहि सुइत रहलीह। पोता पोती दादीकेँ देह डोलबैत बाजल जे दादी-दादी एकटा नीक खिस्सा सुना दे।

दादी उठलीह, आ दुनू नैनाकेँ उठा दादाजीकेँ कोठरीमे दय अयलन्हि। आब कहानी कहबाक लेल दादाजीकेँ तंग करय लागल। दादाजी कहानी नहि कहबाक बहाना बना रहल छलाह। मुदा पोता-पोतीक जिद्दक अनसुनी नहि कय सकलाह। दादाजी बजलाह-

"जँ संच-मच भऽ रहबे तँ कहानी सुना देबौ नहि तँ नहि सुनेबौ।"

पोता-पोती संच-मंच रहबाक हामी भरलैन्ह। दादाजी कहानी कहय लगलाह। एक गोट राजाकेँ तीन गोट बेटी छलन्हि। तीनू अपूर्व सुन्दरी, विदुषी, माय बापक परम दुलारू आ सर्बगुण सम्पन्न छलीह। जखन तीनू बेटी फूटि कऽ नवयुवती भेलीह। ओकरा सभक बियाहक

चिंता राजाकेँ होमय लागल। रानी हर-हमेशा बेटी सभक बियाहक हेतु राजासँ आग्रह करैत छलथिन्ह। एक समयमे राजा अपना तीनू बेटीकेँ अपना लगमे बैसा कऽ पुछलथिन्ह- जे बेटी अहाँ लोकनि हमरा प्रश्नक जवाब दीअ। बेटी सभ समबेत स्वरमे बाजलि- बाबूजी, पुछू जे की प्रश्न अछि। राजा सभसँ जेठ बेटीकेँ पुछलथिन्ह। जे अहाँ ककरा भाग्ये जीवन-बसर करैत छी? जेठ बेटी बजलीह-

बाबूजी अहाँक भाग्ये जीवन-बसर करैत छी। राजा जेठकी बेटीक जवाब सुनि अपनाकेँ गौरवान्वित महसूस कयलन्हि आ बेटीकेँ ढेर रास उपहार देलन्हि।

फेर मझली बेटीसँ पुछलन्हि-

जे अहाँ ककरा भाग्ये जीवन बसर करैत छी?

मझली बेटी बाजलि-

“बाबूजी, अहाँक भाग्ये जीवन बसर करैत छी।

राजा मझलियो बेटीक जवाब सुनि प्रफुलित मने उपहार दैत आर्शीवाद देलन्हि।

पुन: तेसर बेटीकेँ वैह प्रश्न पुछलथिन्ह- जे बेटी पुनिता तूँ ककरा भाग्ये जीवन बसर करैत छह।

पुनिता जवाब देलन्हि-

बाबूजी, जन्म दै छै माय-बाप, अपने भाग्ये सन्तान जीवन-बसर करैत अछि। तेसर बेटीक जवाब सुनि राजा बड़ दु:खी भेलाह। आ पुनिताकेँ कोनो उपहारो नहि देलन्हि। मनहि-मन सोचय लगलाह जे ई बेटी हमर अपमान कयलक अछि। आ ई अहंकारी सेहो अछि। तेँ एकर शादी कोनो अपंग भिखमंगासँ करा दियैक जाहिसँ एकरा हमर जरूरत रहिये जायत आ एकर घमण्ड सेहो टूटि जेतैक।

राजा मनहिमन ई बात सोचि जेठकी आ मझली बेटीक शादी राजकुमारक संग करौलथि। तेसर बेटीक शादी अपंग बिमरियाह लड़कासँ करेबाक हेतु निश्चय कयलैन्ह। नौआ ब्राह्मण के बर (दुलहा) खोजबाक आदेश देलन्हि। ओहि समयमे नौआ (हजाम) आ ब्राह्मण घटकक काज करैत छलाह। नौआ ब्राह्मण तेसर बेटीक लेल दुलहा खोजबाक हेतु राजासँ बटखर्चा लय बिदाह भेलाह। दू तीन दिन तक पद यात्रा कय अपंग वा बिमरियाह लड़का खोजय लगलाह। विधाताक विधनाकेँ कियो टारि नहि सकैत अछि। बगलबला देशक राजा जे पैघ प्रतापी, न्यायवादी आ भूत भविष्य जानयबला छलाह। हुनक इच्छा छल कि ओहि राजाक तेसर बेटीसँ हम शादी करी। ई राजा तांत्रिक सहो छलाह। ओ ओहि घटकक इच्छासँ अवगत भय, अपन तंत्र विद्याक प्रयोग कय अपनाकेँ अपंग आ बिमरियाह बना एकटा मैल धैल नूआ ओढ़ि बैसल छलाह। नौआ बा ब्राह्मण जेहने लड़का खोजबाक हेतु जाइत छलाह, तेहने लड़का सड़कक कातमे भेट गेलन्हि। दुनू बड़ खुश भय ओहि अपंगसँ पुछलन्हि जे अहाँ बियाह करब। ओ अपंगरूप धयनिहार राजा बाजल-

हमर बियाह के करा देत। हम तँ बिमरियाह आ कुष्ट रोगसँ पीड़ित छी।

घटक बाजल जे हम अहाँक बियाह करा देब। अहाँ हमरा संग चलू।

आगू-आगू नौआ आ ब्राह्मण आ पाछू-पाछू ओ अपंग कोढ़िया बिदाह भेलाह। सभ राजा दरबारमे पहुँचलाह।

दादा कहानी कहैत ओंघाय लगलाह आ कनेक काल कथा बाचन बन्द भय गेल आकि पोता-पोती एकहि स्वरमे बाजल दादाजी एकर बाद की भेलैक। सुतल दादाजी धरफरा कय उठलाह आ पानिसँ आँखि पोछि

कुरुर कय कहानी शुरू कयलन्हि।

दादाजी बजलाह-

राजा ओहि अपंग कोढ़ियाकेँ देखि खुश भेलाह। नौआ ब्राह्मण पर खुश भय यथोचित पुरस्कार सेहो देलैन्ह।

बियाहक दिन ठेकल गेल। राजाक तेसर बेटी- पुनिताक बियाह अपंग, कोढ़िया दुलहासँ सम्पन्न भेल। राजाक महलसँ सटले नदी बहैत छल ओहि नदीक ओहि पार एकटा घरमे दुनू प्राणी यानी बेटी जमायक रहबाक व्यवस्था कय देलथिन्ह।

आब पुनिता अपना पतिक संग सुखपूर्वक रहय लगलीह। पुनिता मनोयोगसँ अपन पतिक सेवा करय लगलीह। समय पर खाना खुआबथि। समय पर स्नान कराबथि। घावकेँ साफ करथि। दुनू प्राणी सुख पूर्वक रहय लगलाह।

किछु दिनक बाद राजाक बेटाक मुंडनक दिन तय भेल। तहिसँ पहिने राजारानी आ राजाक दुनू बेटीक विचार भेलैन्ह जे गंगा स्नान जाई। ओहि क्रममे रानी आ रानीक दुनू बेटी नदीमे स्नान करबाक हेतु आयल छलीह। ओहि समयमे पुनिता सेहो नदीक दोसर कछेरमे स्नान करैत छलीह। एहि कछेरमे रानी तीनू माय धी गंगा स्नान करबाक चर्चा कयलन्हि।

गंगा स्नानक बात सुनि, पुनिता सेहो गंगा स्नान करबाक इच्छा व्यक्त कैलन्हि। पुनिता अपना माय के कहलैन्ह जे माय हमहू गंगा स्नान जायब। एहि पर पुनीताक दुनू बहिन मजाक करैत कहलन्हि-

जे जो ने कोढ़ियाकेँ कहियैन्ह जे रूपया-पैसाक ओरियान कय देथुन्ह। तखन गंगा स्नान चलि यैहैं।

पुनिता नदीसँ स्नान करय चिंतित मुद्रामे पतिक समीप अयलीह। कोढ़िया राजा अपना पत्नीसँ पुछलैन्ह। जे अहाँ उदास कियैक छी।

अहाँकेँ की भेल?

कोढ़िया राजा अपन तंत्र विद्यासँ सभ बात बुझि चुकल छल। तथापि पुनिताक मुहसँ ई बात सुनबाक इच्छुक छलाह।

पुनिता बहिनसँ भेल गप्प आ गंगा स्नान जयबाक लेल इच्छा व्यक्त कयलन्हि। कोढ़िया राजा अपन पत्नी पुनिताकेँ बोल भरोस दय। एकटा पुर्जा पर एकटा श्लोक लिखि हाथमे देलकन्हि आ कहलैन् जे ई श्लोक बाजारमे मदन लाल सेठ जीक ओतय बेच आउ।।

पुनीता पतिक आदेशक पालन करैत मदनलाल सेठक ओतय पहुँचलीह। कोढ़िया राजा अपन तंत्र विद्यासँ सभ बातक जानकारी प्राप्त करैत छलाह। मदनलाल बड़ पैघ व्यापारी छलाह। ओ व्यापार करैक उद्देश्यसँ बाहर जयबाक शुर-सारमे छलाह। मदनलाल ओ श्लोक लय पढ़य लगलाह। आ ओ पुनीताकेँ श्लोकक एवजमे किछु ढौआ देलैन्ह। पुनीता ढौआ लय घर अयलीह आ माय बहिन संग गंगा स्नान गेलीह।

एमहर मदनलाल श्लोक खरीद पढ़लक। श्लोकमे लिखल छल-

“आसनम पहुँचाल नममद्व पंथ कन्या बिर्वजयेत।

पहिल रात्री जगन्नाथम पहिल क्रोध विबारनम्।”

श्लोक जेबीमे रखलन्हि। सेठ मदनलाल व्यापार करबाक हेतु कोनो महानगरमे गेलाह। व्यापार खूब नीकसँ चललैन्ह। काफी मुनाफा भेलैन्ह। ढेर रास रूपया लय घर वापस अयबाक तैयारीमे लागि गेलाह। किछु गुंडा हिनका संग लागि गेलैन्ह। गुंडा हिनक आगत-भागतमे लागि गेल। गुंडा मदनलालकेँ रातिमे रहबाक हेतु अपना अतिथिशालामे लय गेलाह आ रूमक चाभी दय देलकैन्ह। अतिथि भवन खूब नीक जकाँ सजल-धजल छल। कुर्सी, टेबुल, सोफा लागल छल।

अतिथि भवनसँ सटले आराम करबाक कोठरी सेहो छेलैक। गुंडा हिनका अतिथि भवनमे व्यवस्थिति कय रातुक इन्तजार करय लागल।

मदन सेठ मनही मन सोचय लगलाह। ई अंजान आदमी जकरा हम नहि पहचानैत छी आ ने ओ हमरा पहचानैत अछि। तखन एतेक खातिरदारी कियैक। मदन सेठ जेबसँ श्लोकबला पूर्जा लय पढ़लैथ। श्लोकमे लिखल छल-

"आसनम पहुचालनम्" कोनो बैसबाक जगह के बैसऽसँ पहिनहि ओकरो हिला-डोला कऽ देख लेबाक चाही। सेठजी श्लोककेँ मोरि जेबीमे रखलैथ। अन्दरबला कोठरीमे जे सोफा लागल छल ओकरा पैरसँ हिला देलक। हिलबैत देरी सोफा धरामसँ नीचा खसल। सेठजी ई दृश्य देखि अचंभित भय गेलाह। आ चुपकहि ओतयसँ भागि गेलाह। राति कोहुना कोनो सार्वजनिक स्थानमे बितौलाह। सबेर उठि ओहि शहरकेँ छोड़ि दोसर शहर गेलाह। रास्तामे एकटा जनानी अभरलन्हि। मनमे भेलन्हि जे एहि जनानीसँ पुछियैक जे अगिला कोन गाम छियैक। ओ जनानी राक्षसनी छल। राक्षसनी जनानीक भेष धारण कय बाटपर चलनिहार बटोहीकेँ बातमे उलझा मारि दैत छल। मदन सेठ फेर जेबीसँ श्लोक निकालि पढ़लैथ। लिखल छल-

"पथ कन्या विर्वजयेत।"

रास्तामे भेटल जनानीकेँ नहि टोकबाक चाही। सेठजी ओहि जनानीकेँ बिनु टोकनहि आगा बढ़लाह। ओ जनानी देखलक जे ई हसामी हमरा जालमे नहि फँसलाह। तखन ओ दोसर रास्तासँ हिनका मारबाक जोगार लगौलन्हि।

जनानी मदनसेठक पाछू लागि गेल। जनानी लोक सभकेँ कहय लगलीह-

"जे ई हमर पति थिकाह। अपना दुनू प्राणीमे झगड़ा-झाँटी भेल छल। तेँ ई हमर पति भागल जाइत छथि। लोक सभ मदनलाल सेठकेँ समझाबय-बुझाबय लागल। कहय लागल- 'अपना दुनू प्राणीमे ककरा

नहि झगड़ा-झाँटी होइत छैक। तँ की लोक घर छोड़ि भागि जायत। धुरि कऽ घर जाऊ। ओ जनानी कानि कानि कऽ लोक सभकेँ कहय लगली। मदन सेठक बात बुझिनिहार कियो नहि छल। अन्तमे निर्णय भेल जे एहि दुनू गोटे केँ राजाक दरबारमे उपस्थित कयल जाए। राजा मदन सेठक बात सुनलन्हि। जनानीक बातकेँ सेहो सुनलन्हि। राजा दुनू स्त्री-पुरुषकेँ एकटा पैघ हाँलमे भरि-राति सुतक लेल देलन्हि। कमराकेँ उत्तर पश्चिम कोनमे आ एकटाकेँ दक्षिण-पूरब कोनमे बिछाबनक व्यबस्था कयल गेल। चारू पहर रातिक लेल चारिटा पहरुदारकेँ नियुक्त कय देलैनहि। चारू पहरूदारकेँ कहि देल गेल जे एहि दुनूक हरेक गतिविधिपर ध्यान दय सुबहमे रिपोर्ट करू। मदन सेठ एकटा बिछाबनपर आ दोसर बिछाबनपर ओ जनानी जा कय सुती रहल। मदन सेठ जेबीसँ श्लोक निकाललैन आ पढ़लैथ जे 'पहिल रात्री जगन्नाथम्।'

मदन सेठक जे समस्या छल से बड़ भयाबह। ओ भरि राति जागल रहबाक निर्णय लेलन्हि। पहिल पहर राति बितलाक बाद ओ जनानी चाहलक जे मदनलाल सेठकेँ गरदैन पकड़ि दाबि दिऐक आ ओकरा मारि दियैक।

ओ उठि मदनलालक बिछौन लग पहुँचल आ अपना हाथसँ मदनलालक गरदैनकेँ दाबबाक प्रयास कयलक।

मदनलाल जागले छलाह। ओ जोर-जोरसँ चिकरय लगलाह-

"बचाऊ, बचाऊ मारि देलक।"

पहरूदार गेटपर छलाहे ओ ओहि जनानीक किरदानीकेँ देख रहल छलाह। दौड़ कऽ मदनलालक लग गेल। जनानी तुरत भागि कऽ अपना ओछौनपर आबि गेलीह। फेर दुपहर रातिमे दोसर पहरूदारक ड्यूटी छल। किछु कालक बाद फेर ओ जनानी मदनसेठपर जान लेबा हमरा कयलक। मदन लाल जागल छलाहे। ओ फेर जोर-जोरसँ चिकरय

लगलाह। बचाऊ-बचाऊ ई जनानी हमरा मारि देलक।

फेर दोसर पहरूदार मदन लालक तरफ दौगल। देखलक जे ओ जनानी मदन लाल सेठक ओछौन लग ठाढ़ छथि। ओकर रूप भयावह छल। एहि प्रकारे चारू पहर रातिमे चारि बेर जान लेबा हमरा कयलक। चारू पहरूदार मदन लालकेँ बचौलक।

भिनसरमे चारू पहरूदार जनानीक संग मदनलालकेँ लय राजाक दरबारमे पहुँचलाह।

राजा चारू पहरूदारसँ सफाई देबाक हेतु कहलथिन्ह। पहरूदार रातुक घटित घटनाक गबाही देलैन्ह। राजा संतुष्ट भय मदन सेठकेँ अभयदान दय अपना गाँव जयबाक आदेश देलन्हि। आ ओहि जनानीकेँ जहल भेज देलथिन्ह।

मदन लाल अपन घर आबय लगलाह। जखन अपना गामक नजदीक अयलाह तँ तखन बाटमे एकटा उचक्का गौंआसँ भेँट भेलन्हि। ओहि गौंआँक नाम राधाकान्त।

मदनसेठ ओहि आदमीकेँ पुछलन्हि-

“यौ राधा भाई गामक हाल-चाल कहू।”

राधा भाई बजलाह- की कहूँ? कहैत लाज भऽ रहल अछि।

मदन सेठ बजलाह-

“कहू ने एहिमे लाजक कोन गप्प।”

राधाकान्त बजलाह-

“मदन भाई अहाँ कतेक दिन पर घर आबि रहल छी?”

मदनलाल-

“तकरीवन साल भरिपर।”

राधाकान्त कनेक काल धरि चुप भय गेलाह।

मदनलालक जिज्ञासा प्रबल भय गेल। ओ अधिक जिज्ञासु होइत बजलाह-

“राधा भाई चुप कियैक भय गेलहुँ। बाजू ने?”

राधा अफसोस करैत बजलाह-

“अहाँ व्यापार करबाक हेतु बाहर गेलहुँ आ अहाँक परोक्षमे लखनाक अहाँ घर आबाजाही बढ़ि गेल। लखना अँहि ओहिठाम रातिक-राति आ दिनक-दिन रहय लगलाह। लखनाक चारित्रक विषयमे अहाँ जनिते छियैक जे ओ केहेन लम्पट अछि। अहाँक पत्नीकेँ अपना जालमे बझा लेलक। अहाँक पत्नीसँ लखनाक प्रेमालाप होयम लागल जाहिसँ ओ गर्भवती भय गेलीह।”

मदनलालकेँ अपना पत्नीपर बड़ क्रोध भेलन्हि ओ विचार करय लगलाह जे एहेन धोखेबाज पत्नीकेँ कियैक नहि जाइते देरी यमलोक पहुँचा दी। तखन चैनक साँस लेब। तमशैले मने घर पहुँचलाह। जेबीसँ पुर्जा निकालि केँ पढ़लैथ लिखल छल- पहिल क्रोध निवारणम्’

मदनलाल क्रोधकेँ शान्त कयलन्हि। बातक तहकिकात करय लगलाह। ओ लखनाक विषयमे छान-बीन करय लगलाह। पता चलल जे लखना तँ अहिंक सामने जे घरसँ बाहर गेल से अखन धरि घुरि कऽ नहि अयलाह। धूर्त्त राधाक गप्प मिथ्या छल। मुदा मदनलाल राधाकान्तकेँ अपना घरपर बजौलैथ।

मदनलाल राधा भाई तूँ जे बाटमे जे अशुभ समाचार कहलह से कियैक?

राधाकान्त बाजल-

“भाई देखलियह जे तोरा हिचुकी आबि गेल छल। तूँ जोर-जोरसँ हुचैक रहल छह। तेँ तोहर ध्यान मोरबाक हेतु ई टोटमा केलियह। ई तँ सत्य थोरे छल। एकरा टोटमा कहल जाइत अछि। दुनू जोरसँ ठहक्का दय

हँसय लगलाह।"

आब मदनलाल ओहि श्लोक वेचनिहारिणी पुनीताकेँ खोजय लगलाह। मुदा ओहि महिलाक अता-पता नहि लागल।

एमहर राधाक छोटकी बेटी पुनीता अपन तन मन आ धनसँ कोढ़िया पतिक सेवामे लागल रहैत छलीह। किछुए दिनक बाद पुनीता भाईक मुंडन संस्कारक दिन निर्धारित भेल। राजा सभ सर-कुटुम्बकेँ नौत हकार देलथिन्ह। कोढ़िया जमायकेँ सेहो नौत-हकार भेटल। संगहि पुनीताक विदागरी सेहो।

राजाक सभ सर-कुटुम्ब नाना प्रकारक उपहार, लत्ता-कुपड़ा, भार लय नौत पुरलकिन्ह। पुनीता अपन कोढ़िया पतिसँ आग्रह केलन्हि जे हमहू अपना भाईक मुंडनमे नौत पूरबाक हेतु जायब से नौत पुरबाक हेतु लत्ता-कपड़ा, सोनाक चेन आ भारक ओरियान कय दीअ।

पुनीताक पति सभ किछुक ओरियान कय पुनीताकेँ अपन नैहर भेजलन्हि। पुनीता आगू-आगू आ भरिया सभ पाछू-पाछू जय लगलाह।

कोढ़िया घरसँ राजाक घर तक भारक उजाहि लाइग गेल। लोक सभ आश्चर्यचकित भय रहल छला। राजा एहि अद्भूत दृश्यकेँ देखि अचंभित भय गेलाह। राजाक घरमे समान रखबाक जगह नहि भेटि रहल छल।

पुनीताक भाईक मुंडन संस्कार सम्पन्न भेल। पुनीताक बहिन लोकनि जे पुनीताक मजाक कयने छलीह ओ लज्जीत छलीह। सभ सर-कुटुम्ब अपन-अपन घर गेलाह। राजा पुनीताकेँ सभसँ नीक लता-कपड़ा बिदाई देलक आ स्वयं अपन राजाबला रथ पर बैसा ओकरा घर पहुँचौलक। राज स्वयं अपन छोट दमाद यानि कोढ़िया राजा लग हाथ जोड़ि ठाढ़ भय कहय लगलाह-

"हे वत्स, अहाँ अपन परिचय दीअ। जे अहाँ के छी? की नाम

अछि, कोन देशक राजा छी? हमरा मन अछि जे हम अपन बेटी सभकेँ पुछने छलहुँ जे बेटी अहाँ लोकनि बाजू जे अहाँ सभ ककरा भाग्ये-तकदीरे जीवन बसर करैत छी।

पुनीता बाजल छलीह जे बाबूजी जन्म दै छै माय बाप मुदा लोक अपन अपन भाग्ये जीवन-वसर करैत अछि। आई ई बात प्रमाणित भय गेल। तेँ हम अहाँ पुनीताक लग लज्जित छी। हमरा दुनू गोटे क्षमा कय दीअ। कोढ़िया राजा अपन तंत्र विद्यासँ अपन असली रूपमे अठारह वर्षक राज कुमार बनि ससुर केँ प्रणाम कयलन्हि आ कहलन्हि-

हम मगध राजाक पुत्र थिकहुँ। हमर नाम रिषम कुमार अछि। हमरासँ अहाँक बेटी पुनीता केँ बड़ कष्ट भेलैन्ह, तेँ हम अहाँ दुनू गोटेसँ क्षमा याचना करैत छी। हमर इच्छा छल जे हम अहाँक बेटी पुनीता जे सभ गुणसँ सम्पन्न अछि, तेकरेसँ बियाह करी। मुदा अहाँक शर्त के पूरा करबाक हेतु हम अपन तंत्र विद्यासँ कोढ़ियाक रूप धारण कयलहुँ आ पुनीताक वचन सत्य करबाक हेतु हम ई नाटक कयलहुँ। पुनीता बाजल छलीह जे जन्म दै छै माय-बाप लेकिन लोक अपने भाग्ये जीवन जापन करैत अछि। से सत्य थिक।

पोता बाजल-

“दादाजी ई कहानी बड़ नीक लागल। आब रातियो बड़ भय गेलैक तेँ सुतै जाऊ।” ❑

परिणाम

भीषण गर्मीक अनुभव भय रहल छल। बिहार बोर्डक परीक्षाफल प्रकाशित भय गेल छलैक। मनमे धुकधुकी पैसल छल। धुकधुकी एहि लेल जे हमररा कोचिंगक रिजल्ट हरेक साल नीके होइत छल। हमरे छात्र अनुमंडल आ जिला स्तरपर सर्वाधिक अंक लबैत छल। प्रतिभा सम्मान समारोहमे हमरे कोचिंगक छात्र/छात्रा पुरस्कार प्राप्त करैत छल। तँ मनमे धुकधुकी पैसल छल जे एहि साल हमर छात्र लोकनिक रिजल्ट केहेन होयत। एहि बातकेँ मनमे सोचैत रही। नींद नहि आबि रहल छल। राति लगभग 12 बाजि गेल छलैक कहुना नीद्रा देवी अयलीह। अपना गोदमे सुता लेलीह। सुतलाक किछु देरक बाद एकटा स्वप्न देखय लगलहुँ। देश आजाद होमयसँ पहिनहि राजतंत्र छल। राजतंत्रक राजा निरंकुश होइत छल। ओहि समयमे एकटा राजा बड़ प्रतापी, निर्दय, प्रजापर अत्याचार करै वाला छलाह। ओ अपन प्रजा पर पैघ जुल्म आ अत्याचार करैत छलाह। राजतंत्रक राजाकेँ ककरो डरो नहि छल। ओ खुदकेँ ईश्वरसँ पैघ मानैत छलाह। सुरा आ सुन्दरीक पोषक छलाह। तँ अपन ऐशो आरामक लेल किछु कय सकैत छलाह। राजा बालक, जनानी आ बुजुर्गपर जुल्म करैत छलाह। निर्दोषोकेँ दंड दैत छलाह।

राजाक डरसँ प्रजामे हरकम्प मचल छल। प्रजा लोकनि राजाक बिरुद्ध किछु बाजि नहि सकैत छल। जँ कियो बजलाह तँ ओकरा हेतु जहलक दरबाजा खुजले रहैत छल। प्रजा लोकनि मनहि-मन राजाकेँ

बद-दुआ दैत छल। शीघ्र मरि जाऽ तकरा हेतु भगवानसँ प्रार्थना करैत रहैत छल।

एक समयक बात छल। राजा शिकार खेलबाक हेतु जंगलमे गेल छलाह। राजा देखलक जे एकटा कुकुर जे भूखसँ व्याकुल छल। भोजनक खोजमे एमहर-ओमहर घुमि रहल छल। ताबत एकटा हरिणक बच्चा सामने दृष्टिगोचर भेल। कुत्ता हरिणक बच्चाकेँ मारबाक हेतु खदेरऽ लागल। हरिणक बच्चा अपन जान बचेबाक हेतु भागल। कुकुर हरिणक बच्चाकेँ मारि तँ नहि सकल मुदा ओकरा जख्मी बना देलक।

जखन राजा ओतयसँ वापस अबैत छलाह तँ ओहि कुकुरकेँ एकटा समीपक गाँवमे देखलैथ। कुकुर एकटा आदमी पर भूकि रहल छल। ओ आदमी एकटा पाथर लय कुकुरकेँ मारलक। पाथर कुकुरक टांग पर लगल आ कुकुरक टांग टुटि गेल। किछु देरक बाद राजा घुमैत-फिरैत आगा बस स्टैण्ड तरफ बढ़लाह। तँ ओहि आदमीकेँ एकटा तांगा लग ठाढ़ भेल देखलैन्हि। घोड़ाकेँ भेलैक जे हमरा मारबाक हेतु ई आदमी हमरा पाँजरमे ठाढ़ अछि। घोड़ा निशाना बना ओहि आदमीकेँ जे कुकुरक टांग तोरि देने छल, जोरसँ लथार मारलक। जाहिसँ ओहि आदमीक घुटना टुटि गेल। घोड़ा लथार मारि भागल।

आँगा एकटा गड्ढ़ा छलैक। घोड़ा ओहि गड्ढ़ामे गिर गेल। घोड़ाक दुनू टाँग टूटि गेलैक। कोना एक दोसरापर नजाइज हमला कयला पर दंड भेटलैक एहेन दंड हमरो भेट सकैत अछि। राजा एहि सोचमे परि गेलाह। बैस, किछु सोचय लगलाह। ताबत् एकटा साधु राजाक नजदीक आबि ठाढ़ भय गेलाह। राजा कल जोड़ि साधुक अभिवादन कयलक। साधु पुछलन्हि-

“बच्चा तु क्या सोच रहे हो?

राजा सभ घटना साधुकेँ सुना देलक। साधु जवाब देलन्हि-

“बच्चा जे जेहेन कर्म करैत अछि ओहेने फल पबैत अछि। बबूरक पेड़ रोपनिहार आम खा सकैत अछि। कथमपि नहि।”

साधु ई कहैत आगा बढ़ि गेलाह। राजा मनहि-मन संकल्प कयलन्हि जे हम आब अपन प्रजाक संग कहियो खराव बर्त्ताव नहि करब। राजा, प्रजाक हेतु पितातुल्य होइत अछि। आब राजामे एकाएक बदलाव आबि गेलैक। राजा घोषणा कयलाह जे हम आब कहियो, ककरो कोनो तरहक कष्ट नहि देब। ककरो पर अत्याचार नहि करब।

ई फैसला सुनि प्रजागण हैरान होमय लगलाह। प्रजा लोकनि पहिनहुँसँ बेसी सतर्क भय गेलाह। सोचय लगलाह जे राजा कोनो नव चालि नहि तँ चललक अछि। मुदा राजा आब एकटा सफल आ नीक राजाक तरह अपन नियमक पालन करैत आफत्-विपत् आ मुसिबत् मे प्रजाक सहायता करैत रहलाह।

आब धीरे-धीरे प्रजाकेँ राजाक प्रति भावना बदलि गेलन्हि आ प्रजा खुश रहय लागल।

भोरमे सुतले छलहुँ, तखने हमर परम शिष्य रवि शेखर ‘सुमन’ आबि उठौलैन्ह। रवि शेखर बाजल-

“सर, हम एकटा जरूरी कामसँ मधुबनी जा रहल छी। साँझ धरि घुमि कय घर आबि जायब।”

नींद टुटल तँ सोचय लगलहुँ। जँ छात्र/छात्राकेँ नीक जकाँ पढ़ौने हेबैक तँ नीक परिणाम हेबे करत। नीक कर्मक नीक फल। ❑

पंचैती

रामपुरमे एकटा जमींदार छलाह। पैघ जमींदारी, नौकर-चाकर, खेती-पथारीक अम्बार लागल छल। हुनका तीन गोट बेटा छल। बहुत दिन धरि परिबारक भरण-पोषण करैत वृद्धावस्थाकेँ प्राप्त कयलन्हि। बुढ़ाड़ी अवस्थामे नाना प्रकारक बीमारी तंग करय लगैत अछि। जमींदार धातक बीमारीक इलाज करैत रहलाह। ओहि इलाजमे बहुतरास जमीन-जथा सेहो बिक गेलैन्ह। ठीक नहि भेलाह। स्वर्गवासी होइसँ पहिनहि गामक चारि-पाँच प्रतिष्ठित व्यक्तिकेँ बजाय कहलनि-

“हमरा सम्पति के दू भागमे बाँटि देबैक।”

श्राद्ध कर्म समाप्त भेल। गामक प्रतिष्ठित लोकनि सभ जमा भेलाह। बँटबारासँ पहिनहि। बुढ़ाक कहल बात पर मंथन होमय लागल। बेटा छन्हि तीन आ बँटवारा होयत दू भागमे। सभ सोचय लगलाह। बुढ़ाक मृत आत्माकेँ ठेंस नहि लागबाक चाही। बुढ़ाक बातक पालन होयबाक चाही। गणमान्य व्यक्ति के किछु फुरा नहि रहल छलन्हि। सभ कियो एहि तारतम्यमे लागल रहलाह, जे एहि बातक निराकरण कोना होई। गणमान्यमे सँ एक व्यक्ति बजलाह-

“नरारमे राम लषण बाबू बड़ पैघ पंचैतिया छथि। एहि विषय पर हुनकेँसँ राय विचार कय ली।”

चारू-पांचू गणमान्य व्यक्ति राम लषण बाबूसँ राय विचारक लेल

नरार पहुँचलाह। किनको हुनकर घर देखल नहि छल। राम लषण बाबूक घरक बगलमे एकटा इनार छल। ओहि इनार पर एकटा नव युवती पानि भरि रहल छलीह। युबतीक उम्र तकरीबन 17-18 वर्ष छलैक। गणमान्य व्यक्तिमेसँ एक व्यक्ति ओहि पानि भरैत नव युबतीसँ पुछलथिन्ह-

"दाई, राम लषण बाबूक घर कोन छैक।"

ओ युबती जवाब देलन्हि-

"जिनकर अहाँ नाम लैत छी ओ तँ मरि गेलाह।"

सभ कियो उदास भय गेलाह। ताबत् एकटा प्रौढ़ा इनारक नजदीक पहुँचलीह। ओ गणमान्य व्यक्ति सभकेँ देखि पुछलन्हि-

"अहाँ सभ की खोजैत छी?"

गणमान्य व्यक्तिमे सँ एक व्यक्ति कहलैन-

"राम लषण बाबूक घर खोजैत छी।"

प्रौढ़ा हाथसँ इशारा करैत घर देखबैत बजलीह-

"ओ तँ आन्हर भय गेलाह।"

गणमान्य व्यक्ति सभ आँगा बढ़लाह। कनेक दूर पर एकटा दरबाजा छल। ओतय राम लषण बाबू बैसल छलाह। गणमान्य व्यक्ति लोकनि राम लषण बाबूकेँ नमस्कार कय दरबाजापर राखल कुर्सी आ चौकी पर बैस रहलाह। हिनका लोकनिक मनमे नबयुवती आ प्रौढ़ाक जवाब पहेली बनल छल। होइत छलन्हि जे राम लषण बाबू जखन जीवित छथि तँ ओ नबयुवती कियैक बजलीह जे राम लषण बाबू एहि संसारमे नहि छैथ। प्रौढ़ा कियैक कहलीह जे राम लषण बाबू आन्हर छैथ।

गणमान्य व्यक्ति लोकनिकेँ एहि प्रश्नक जवाब हेतु जिज्ञासा बढ़ि गेलैन्ह। कुशल-क्षेम परिचय-पात भेलाक बाद राम लषण बाबू हुनका

लोकनिक स्वागत-सत्कारमे लागि गेलाह। नैना सभक सहयोगसँ पानि आ चाहक फरमाईश आंगनमे भेज देलन्हि।

राम लषण बाबू बजलाह-

“अहाँ लोकनि कोन प्रयोजनार्थ एतय अयलहुँ?”

गणमान्य व्यक्तिमे सँ एकटा बजलाह-

“सरकार हमरा लोकनिक समस्या बादमे कहब। ताहिसँ पहिनहि एकटा दोसर प्रश्न सामने आबि गेल। पहिने एकर समाधान करू।”

राम लषण बाबू बजलाह- “बाजू कोन तरहक समस्या अछि?”

गणमान्य व्यक्ति बजलाह- “एकटा बच्चिया इनार पर पानि भरैत छलीह। हुनकासँ अपनेक बारेमे पुछलयैन्ह। नबयुबती कहलैन- ओ तँ मरि गेलाह। एहि बातक कोनो अर्थ नहि लागल।”

राम लषण बाबू बजलाह-

“ओ बच्चिया तँ ठीके ने कहलक। ओहि बच्चियाक हम बाप छिऐक। ओ बियाहक योग्य भय चुकल छथि। हम ओकर बियाह नहि करा रहल छियैक तँ ओकरा लेल तँ हम मरियै ने गेलियै। ओ ठीके ने कहलक।”

पुन: गणमान्य व्यक्ति बजलाह-

“एकटा प्रौढ़ासँ पुछलयैन्ह तँ ओ बजलीह जे ओ आन्हर भय गेलाह तकर की रहस्य छैक?”

राम लषण बाबू बजलाह- “ओ प्रौढ़ा हमर पत्नी थिकीह। ओ साज श्रृगांरसँ रत रहैत छथि आ ओकरा दिश हम ताकितो नहि छियैक, ओकर अभिलाषाक पूर्ति नहि होइत छैक। तेँ ओकरा लेल तँ हम आन्हरे ने छियैक। आब अहाँ सभक मूल समस्या की अछि से बाजू।”

ताबत् आँगनसँ स्वागतक हेतु पानि आ चाह आबि गेल। सभ

गणमान्य व्यक्ति पानि चाह पीब बजलाह।

हमरा गाँवमे कपिल बाबूकेँ तीन गोट बालक छन्हि। ओ जखन स्वर्गवासी होमय लगलाह तखन हमरा लोकनिकेँ बजा कहने छलाह जे हमरा सम्पति के दू भागमे बाँटि देबैक। हमरा लोकनिकेँ कपिल बाबूक बातक अर्थ नहि लागल। बेटा तीन आ बँटबारा दू जगह। यैह समस्या लय हम सभ अपनेक शरणमे आयल छी। कोना दू भागमे बाँटि, से बुझाऊ।

राम लषण बाबू बजलाह- "एकर तँ सोझ हिसाव अछि। तीनू बेटामे सँ एकटा कपिल बाबूक बेटा नहि अछि। तेँ ओ कहि गेलाह जे हमर सम्पतिक बँटबारा दू भागमे करब। आब कोन बेटा कपिल बाबूक नहि छन्हि। ओकर पता लगेबाक उपाय बता दैत छी। एकटा कपिल बाबूक फोटो लय लेब आ ओहि फोटोकेँ एकटा कोनो घरमे कुर्सी या टेबुल पर राखि देबैक। तीनू भाईकेँ कोनो एकान्त जगहमे बैसा देबैक। बेरा बेरी कपिल बाबूक फोटो लग भेजब आ ओहि बेटाकेँ कहबैक जे एहि फोटोकेँ 10 जूता मारब ओकरा हिस्सा भेटत। जे बेटा बापक फोटोकेँ जूता नहि मारय ओकरा बुझब जे ओ कपिल बाबूक बेटा अछि। आ जे फोटो पर जूता मारत ओकरा बुझब जे ओ कपिल बाबूक बेटा नहि अछि। मुदा ई भेद दोसरकेँ नहि बुझय देब।"

गणमान्य व्यक्ति सभ ओतयसँ घर अबै गेलाह। राम लषण बाबूक कथनानुसारक पिलबाबूक फोटो एकटा घरमे राखल गेल। सभसँ छोट बेटाकेँ गणमान्य पंच लोकनि घरक अन्दर प्रवेश करौलन्हि आ कहल गेल जे बापक फोटो पर जूतासँ मारब ओकरा हिस्सा भेटत। घरक अन्दर छोटका बेटा प्रवेश कयलन्हि। फोटोक बगलमे जूता राखल छल। छोट बेटा बापक फोटो पर फूल चढ़ौलक आ प्रणाम् कय किछु सोचय लगलाह। सोचैत बाजल जे बाप हमरा जन्म देलैन्ह, पालन, पोषण कयलन्हि। हुनका हम जूतासँ नहि मारब। एहेन पाप हम नहि कय सकैत

छी, चाहे हिस्सा हुए वा नहि। बाहर जा नौकरी चाकरी कय जीवन बिता लेब।

बाजैत घरसँ बाहर भय गेलाह। पंच लोकनि छोटका बेटाकेँ दोसर कोठरीमे लय गेलाह।

आब मझिला बेटाक बारी एलैक। मझिला बेटा छोटका बेटा जकाँ कयलक ओहो अपन हिस्सा लेबसँ इन्कार कयलक। हिस्सा हुअ अथवा नहि मुदा बापकेँ जूता नहि मारब।

पंच लोकनि मझिलो बेटाकेँ दोसर कोठरीमे लय गेलाह। आब जेठका बेटाक बारी एलैक। जेठका बेटाकेँ बुझौल गेल। जे बापक फोटोकेँ जूतासँ मारत ओकरे जमीन-जयदादमे हिस्सा भेटतैक। जेठ बेटा कोठरीमे प्रेवश कयलक। फोटोक वगलमे राखल जूता लय तावर-तोर बापक फोटो पर जूता बरसाबय लागल।

आब पंचलोकनि एहि निष्कर्ष पर अयलाह जे जेठका बेटा कपिल देब बाबूक नहि अछि। पंच लोकनि कपिल देव बाबूक पत्नीसँ दरयाप्त केलन्हि। कपिल देव बाबूक पत्नीक कथन ई भेलैन्ह। हमर बियाह दोसर मर्दसँ भेल छल। पहिलुका घरबला स्वर्ग वास भय गेलाह। कपिल बाबू अबिबाहित छलाह। हमरे डेराक नजदीक हुनको डेरा छल। पतिक मुइलाक बाद कपिल बाबूसँ हेम-छेम बढ़ि गेल आ बादमे दुनू शादी कय ललहुँ। जेठका बालक पूर्वहि पक्षक अछि।

ई बात हमही दुनू प्राणी जनैत छलहुँ दोसर कियो नहि। जेठको बेटाक जे बाप छल हुनको ओहि शहरमे ढेर रास सम्पति अछि।

पंच लोकनि आश्वस्त भय कपिल बाबूक सम्पतिकेँ दू भागमे बाँटि जवाबदेहीसँ मुक्त भय गेलाह। ❑

स्वाद परिवर्तन

अवकाश प्राप्त कर्मचारीक जे क्रिया कलाप होइत अछि। ताहुसँ हमहु वंचित नहि छी। परिवारो छोट-छीन अछि। पेंशनक पैसासँ कहुना दिन काटिये लैत छी। चारि गोट बालक अछि। पहिल- डॉक्टर, दोसर- इंजीनियर, तेसर- मास्टर आ चारिम- नेता। पहिल डॉक्टर जे बीमार अछि, दोसर इंजीनियर जे बेकार अछि। तेसर- मास्टर जे लाचार अछि। चारिम जे मैट्रीक फेल ओ देशक कर्णधार अछि। प्राय: सभ शहर बाजारक जिनगी जी रहल अछि। दुनू जीव ग्रामीण परिवेशमे रहि रहल छी। किछु खेती-पथारी सेहो अछि। आब तँ खेतो-पथार लोककेँ जानक जंजाल भय गेल अछि। कियो बटाई करक लेल तैयारो नहि होइत अछि। बहुत रास खेतमे पेड़-पौधा लगा देलियैक। बाल-बच्चा ग्रामीण परिवेशमे रहबाक लेल तैयारे नहि अछि। नीक-नीक आमक गाछ, लीचीक गाछ आ कटहरक गाछ रोपि देने छियैक। गाछ सभ पैघ भऽ गेल, आब फरनाई शुरू भेल अछि। गाम घरमे किसानक हालत बड़ खराब जा रहल अछि। कोनो साल रौदी तँ कोनो साल दहारे भय जाइत अछि। धन रोपणीक लेल जन-मजदूर नहि भेटैत अछि। जँ भेटबो करैत छैक तँ उपजासँ बेसी मजदूरिये लय लैत अछि। वर्षा होबाक प्रतिशत बहुत कम भऽ गेल अछि। धानक उपज नहि भेल आ रबीक फसल गेहूँ, चना आ मसूरक उपज नीक भेल अछि। जे बेटा मास्टर अछि हुनक परिवार आ ओकर बाल-बच्चा गामेमे रहैत अछि। उपज नहि भेलाक कारण रोटी,

सत्तू, दालि खाय पड़ैत अछि। चनाक उपज नीक भेलाक कारण, बेसी खाय पड़ैत अछि। सत्तू खाइत खाइत मन अकछा गेल अछि। सत्तू जखने आँगामे अबैत अछि तँ देखि मन कोना दन करय लगैत अछि। करब की कोनहुना खा लैत छी। कहावत छैक जे अपन हारल आ बहुक मारल कियो कत्तौ थोरे बाजैत अछि। बाल-बच्चा अपन-अपन कमाईमे सँ एक पाई नहि खर्च करत। घरक सभ खर्च नून, तेल, हरदी, मिरचाई आ सब्जीसँ लय पोता पोतीक पढ़ाईक खर्च हमरे वहन करय पड़ैत अछि। तँए पैसा नहिये के बराबर बचैत अछि। तैयो कभी कभार दू-चारि किलो चावल खरीद स्वाद परिवर्तन कय लैत छी। सत्तू देखि मन भिन्ना जाइत अछि। पत्नीसँ कहलियैन- "हम काल्हि पटना जायब। पटनाबला बौआ आ बौआसीन, पोता-पोतीक आ ओतयसँ राँची बेटी आ नातीनकेँ सेहो भेंट घाँट कय लेब। मनमे तँ छल जे ओतय जायब तँ कमसँ कम सत्तूसँ पिंड छुटत आ स्वाद परिवर्तन सेहो भय जायत। इन्टर सीटी ट्रेनक टिकट कटेलौं। रेलगाड़ी छ: बजे जयनगरसँ खुजि मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, हाँजीपुर, सोनपुर होइत डेढ़-दू बजे पटना पहुँचैत छैक। मनमे बड़ पैघ आशा नेने ट्रेनमे बैसलहुँ। एहि गाड़ीमे भीड़ो भार कमे रहैत छैक। खिड़की लग जगह पकड़लहुँ। बाहरक दृष्यक आनन्द लैत आगा बढ़लहुँ। मनमे ई सोचैत छलहुँ जे पटना जायब तँ बेटा पुतोहु नाना प्रकारक फल, दूध, दही, बासमती चाबलक भात, अरहरिक दालि, आलू-परोरक तरकारी आ नाना प्रकारक तरूआ खूब खुऔत। पोता-पोतीक लेल मिठाई सेहो खरीद लेलौं। मनमे नाना प्रकारक ख्वाब देखैत पटना पहुँचलौं। मने मन सोचैत रही जे डेरा पर जायब तँ पहिने हाथ-पैर धोय चाह पीअब। किछु फल सेहो खायब। तकर बाद स्नान कय भात-दालि आ नाना प्रकारक स्वादिष्ट तरूआ, तिलौरी आ पापड़ खाइब। सत्तू खाइत खाइत मन अकछा गेल अछि तँ स्वाद परिवर्तन भय जायत।

स्टेशन पर उतरि टेम्पू पकड़लहुँ। टेम्पूसँ राजा बाजारक चौक पर

उतलहुँ। डेराक नम्बर पता संगेमे छल। पुछैत-पुछैत डेराक नजदीक पहुँचलहुँ। 10-15 मिनट प्रतिक्षा कयलहुँ। तरवन ऊपरसँ पुत्र-बधु देखलन्हि। तखन बेटा-पोता-पोती नीचा आबि झोरा हाथसँ लय सभ कियो पैर छू प्रणाम कयलक। सभक संगे ऊपर डेरा पर पहुँचलहुँ। पुत्र-वधु आबि पैर छू प्रणाम कयलन्हि। सौभाग्यवती भव: क आशीर्वाद दयलहुँ। तुरत एक गिलास पानि आयल। बाथ रूम जा हाथ-पैर धो पुन: कुर्सीपर आबि बैसलहुँ। फ्रीजसँ एक गिलास स्प्राइट टेबुल पर राखि देलक आ कहलक- "दादाजी, ठंढा पीब लिअ।"

ग्लास उठा मुँहमे लगेलहुँ। कोनादन स्वाद लागल। बुझना गेल जे हमरा दारू कियैक पिबैक लेल देलक। आई धरि एहेन पेय पदार्थसँ दर्शन नहि भेल छल। पोता कहय लागल- "दादाजी-दादाजी, ठंढा पीजिए। अच्छा है।"

हम पोता आ पोतीकेँ स्प्राइट पीआ देलहुँ। गिलास खाली भय गेल। पुतोहु खाली गिलास लय खूब नीमन नहाति एक गिलास सत्तू आगूमे टेबुल पर राखि देलन्हि। सत्तू देखि मनमे भेल जे हम तँ ट्रेनसँ पटना अयलहुँ मुदा ई सत्तू हमरासँ पहिनहि कोना एतय पहुँच गेल। बुझना गेल जे सत्तू हमरासँ पहिनहि शायद हवाई जहाजसँ एतय पहुँच गेल।

किछु देरक बाद मनमे आश लगेने रही जे भोजनमे भात-दालि आ तरकारी भेटत तँ स्वाद परिवर्तन भय जाइत। आधा घंटाक बाद सत्तूसँ भरल लिट्टी, सेबईक खीर, आलू-गोभीक तीमन आगामे टेबुल पर आयल। ओना, भोजन बड़ प्रेमसँ बनल छल। मनहि मन सोचलहुँ जँ जायब नेपाल तँ कपार संगहि जायत। जाहि डरे भिन भेलहुँ सैह पड़ल बखरा। स्वाद परिवर्तनक लेल अयलहुँ पटना मुदा स्वाद परिवर्तन भाग्यमे लिखलो रहे तखन ने। ❑

सगर राति दीप जरय कथा यात्रा

क्र.सं.	स्थान	तिथि	संयोजक	अध्यक्षता/उद्घाटन	पोथी लोकार्पण	लेखक/लेखिका
1.	मुजफ्फरपुर	21.01.1990	प्रभास कुमार चौधरी	श्री रमानन्द रेणु		
2.	डेओढ़	29.04.1990	जीवकान्त	श्री प्रभास कुमार चौधरी		
3.	दरभंगा	07.07.1990	डॉ. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिली पुत्र, बेवस्थापक- विजयकान्त ठाकुर	श्री गोविन्द झा	1. सामाक पौती 2. मोम जकाँ बर्फ जकाँ	गोविन्द झा अमरनाथ
4.	पटना	3.11.1990	गोविन्द झा बेवस्थापक- दमनकान्त झा	श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' एवं राजमोहन झा	-	-
5.	बेगुसराय	13.01.1991	प्रदीप बिहारी	प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'	3. हमर युद्धक साक्ष्य मे	तारानन्द वियोगी
6.	कटिहार	22.04.1991	अशोक	श्री उपेन्द्र दोषी	4. ओहि रातुक भोर 5. अदहन	अशोक शिवशंकर श्रीनिवास
7.	नवानी	21.07.1991	मोहन भारद्वाज	प्रो. सुरेश्वर झा	6. समाढ़	रमेश
8.	सकरी	22.10.1991	प्रो. सुरेश्वर झा, बेवस्थापक- डॉ. राम बाबू	श्री ए.सी. दीपक	7. साहित्यालाप	भीमनाथ झा
9.	नेहरा	11.10.1992	ए.सी. दीपक	श्री मन्त्रेश्वर झा	-	-
10.	विराटनगर	14.04.1992	जीतेन्द्र जीत	डॉ. गणेश प्रसाद कर्ण उद- गोविन्द झा	-	-
11.	वाराणसी	18.07.1992	प्रभास कुमार चौधरी	श्री मयानन्द मिश्र/ गंगेश गुंजन उद- ठाकुर प्रसाद सिंह एवं प. रमाकान्त मिश्र	-	-
12.	पटना	19.10.1992	राजमोहन झा	श्री सुभाषचन्द्र यादव	-	-
13.	सुपौल 1	18.10.1993	केदार कानन	श्री बुद्धिनाथ झा	8. पुनर्नवा होइत ओ छौंड़ी	विभूति आनन्द
14.	बोकारो	24.04.1993	बुद्धिनाथ झा	श्री गोविन्द झा	-	-
15.	पैटघाट	10.07.1993	डॉ. रमानन्द झा 'रमण'	प्रो. उमानाथ झा	9. विद्यापतिक आत्मकथा	गोविन्द झा
16.	जनकपुर	09.10.1994	रमेश रंजन	श्री गोविन्द झा उद- डॉ. रामावतार यादव	10. श्वेतपत्र 11. मिथिलावाणी- प्रत्रिका 12. गाम नहि सुतैत अछि 13. मर्सिनी- उपन्यास	स. वियोगी एवं रमेश मिलाप, जनकपुरधाम महेन्द्र मलंगिया अरूण कुमार झा
17.	इसहपुर	06.02.1994	डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू'	डॉ. भीमनाथ झा	-	-
18.	सरहद	23.04.1994	अमिय कुमार झा	श्री प्रेमलता मिश्र प्रेम	-	-
19.	झंझारपुर	09.07.1994	श्यामानन्द चौधरी	श्री जीवकान्त	-	-
20.	घोघरडीहा	22.10.1994	डॉ. नारायणजी	श्री राजमोहन झा	14. कथा कुम्भ	सं. बुद्धिनाथ झा
21.	बहेरा	21.01.1995	कमलेश झा	श्री श्यामानन्द ठाकुर उद- चन्द्रभानु सिंह	15. सत्य एकटा काल्पनिक विजय	सारस्वत
22.	सुपौल (दरभंगा)	08.04.1995	कमलेश झा	प्रो. रामसुदिष्ट राय 'व्याधा' उद- गोविन्द झा	-	-
23.	काठमांडू	23.09.1995	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	डॉ. धीरेन्द्र	16. नख दर्पण	गोविन्द झा
24.	राजविराज	24.01.1996	रामनारायण देव	डॉ. धीरेन्द्र, उद- डॉ. योगेन्द्र प्र. यादव, मुख्य- गजेन्द्रनारायण सिंह, मंत्री- नेपाल सरकार	-	-
25.	कोलकाता रजत जयंती	28.12.1996	प्रभास कुमार चौधरी	श्री गोविन्द झा, उद- यमुनाधर मिश्र	17. निवेदिता 18. कथाकल्प	सुधांशु शेखर चौधरी देवकान्त झा
26.	महिषी	13.04.1997	डॉ. तारानन्द वियोगी/ रमेश प्रायोजित	श्री मायानन्द मिश्र	19. अतिक्रमण 20. हस्तक्षेप 21. शिलालेश 22. परिचिति	तारानन्द वियोगी तारानन्द वियोगी तारानन्द वियोगी सुस्मिता पाठक

क्र.सं.	स्थान	तिथि	संयोजक	अध्यक्षता/उद्घाटन	पोथी लोकार्पण	लेखक/लेखिका
27.	तरौनी	20.06.1997	शोभाकान्त	श्री जीवनकान्त	-	-
28.	पटना	18.07.1997	प्रभास कुमार चौधरी	श्री हरिनारायण मिश्र/ रामचद्र खान	23. समानान्तर	रमेश
29.	बेगूसराय	13.09.1997	प्रदीप बिहारी	श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'	24. कुक्करूकू आ कसौटी	चन्द्रेश
30.	खजौली	04.04.1998	प्रदीप बिहारी	श्री रमानन्द रेणु	-	-
31.	सहरसा	18.07.1998	रमेश	डॉ. महेश	25. ओना मासी	देवशंकर नवीन
					26. चानन काजर	देवशंकर नवीन
					27. प्रतिक्रिया	रमेश
32	पटना	10.10.1998	श्याम दरिहरे	श्री राजमोहन झा, उद- गोविन्द झा	28. भरि राति भोर	के.डी. झा, श्याम दरिहरे एवं प्रदीप बिहारी
33.	बलाइन; नागदह	08.01.1999	पदम सम्भव	श्री जीवकान्त	-	-
34.	भवानीपुर	10.04.1999	डॉ. जिष्णु दत्त मिश्र	श्रीमती कामिनी	29. काल्हि आ आइ	धीरेन्द्र
35.	मधुबनी	24.07.1999	सियाराम झा 'सरस' बेवस्था- डॉ. कुलधारी सिंह	श्री राजमोहन झा, उद- जयधारी सिंह	30. काजे तोहर भगवान	शैलेन्द्र आनन्द
36.	अन्दौली	20.10.1999	कमलेश झा	श्री चन्द्रभानु सिंह	-	-
37.	जनकपुर	25.03.2000	रमेश रंजन	डॉ. धीरेन्द्र, उद- डॉ. राजेन्द्र विमल	-	-
38.	काठमांडू	25.06.2000	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	डॉ. रामानन्द झा 'रमण', उद- महेन्द्र कुमार मिश्र, सांसद	31. मकड़ी	प्रदीप बिहारी
					32. मिथिलांचलक लोक कथा	गंगा प्रसाद अकेला
					33. शिरीषक फूल- अनुवाद	गंगा प्रसाद अकेला
					34. हम मैथिल छी- कैसेट	सियाराम झा 'सरस'
					35. मंडनमिश्र अद्वैत मीमांसा	रमेश/ दीनानाथ/ सुरेन्द्रनाथ
39.	धनबाद	21.10.2000	श्याम दरिहरे एवं रामचन्द्र लालदास	राजमोहन झा, उद- कीर्तिनारायण मिश्र	36. मनक आड़ नमे ठाढ़	डॉ. भीमनाथ झा
40.	बिटठो	21.01.2001	डॉ. अक्क, बेवस्था- प्रो.विद्यानन्द झा	श्री बलराम, उद. कुलानन्द मिश्र	37. मातवर	अशोक
					38. दृष्टिकोण	सुरेन्द्रनाथ
41.	हटनी (घोघरडीहा)	19.05.2001	प्रो. योगानन्द झा/ अजित कु.आजाद	श्री सामदेव	-	-
42.	बोकारो	25.08.2001	गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर', बेवस्था- मिथिला सा. परिषद्	श्री दयानाथ झा, उद- हरेकृष्ण झा	39. निष्प्राण स्वप्न	दयाकान्त झा
					40. मिथिला दर्पण(1925/2001)	पुण्यानन्द झा, सं. रमानन्द झा 'रमण'
43.	पटना (किरणजयंती)	01.12.2001	अशोक, बेवस्था- चेतना समिति, पटना	श्री सोमदेव	41. प्रलाप	गोविन्द झा
					42. युगान्तर	विश्वनाथ
					43. एकैसम शताब्दीक घोष्णा पत्र.	रमेश/ श्याम दरिहरे/ मोहन यादव
44.	राँची	13.04.2002	कुमार मनीष अरविन्द	श्री साकेतानन्द, उद- परमानन्द मिश्र	44. चानन घन गछिया	विवेकानन्द ठाकुर
					45. शुभास्ते पन्थान:	परमान्द मिश्र
45.	भागलपुर	24.08.2002	धीरेन्द्र मोहन झा	श्री योगीराज, उद- डॉ. बेचन	46. कथा सेतु	सं. प्रशान्त
					47. पृथा	नीता झा
					48. आउ, किछु गप्प करी	कुलानन्द मिश्र
46.	विद्यापति भवन पटना	16.11.2002	अजित कुमार आजाद	श्री मोहन भारद्वाज उद- राजनन्दन लाल दास	49. काठ	विभुति आनन्द
					50. एक फाँक रौद	योगीराज
					51. तीन रंग तेरह चित्र	सुधाकर चौधरी
					52. उदयास्त	धूमकेतु
					53. साँझक गाछ	राजकमल,सं.देवशंकर नवीन
					54. सर्वस्वांत	साकेतानन्द
					55. अभियुक्त	राजमोहन झा
					56. यात्री समग्र	सं. शोभाकान्त

क्र.सं.	स्थान	तिथि	संयोजक	अध्यक्षता/उद्घाटन	पोथी लोकार्पण	लेखक/लेखिका
27.	तरौनी	20.06.1997	शोभाकान्त	श्री जीवनकान्त	-	-
28.	पटना	18.07.1997	प्रभास कुमार चौधरी	श्री हरिनारायण मिश्र/ रामचद्र खान	23. समानान्तर	रमेश
29.	बेगूसराय	13.09.1997	प्रदीप बिहारी	श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'	24. कुक्करूकू आ कसौटी	चन्द्रेश
30.	खजौली	04.04.1998	प्रदीप बिहारी	श्री रमानन्द रेणु	-	-
31.	सहरसा	18.07.1998	रमेश	डॉ. महेश	25. ओना मासी	देवशंकर नवीन
					26. चानन काजर	देवशंकर नवीन
					27. प्रतिक्रिया	रमेश
32	पटना	10.10.1998	श्याम दरिहरे	श्री राजमोहन झा, उद- गोविन्द झा	28. भरि राति भोर	के.डी. झा, श्याम दरिहरे एवं प्रदीप बिहारी
33.	बलाइन; नागदह	08.01.1999	पदम सम्भव	श्री जीवकान्त	-	-
34.	भवानीपुर	10.04.1999	डॉ. जिष्णु दत्त मिश्र	श्रीमती कामिनी	29. काल्हि आ आइ	धीरेन्द्र
35.	मधुबनी	24.07.1999	सियाराम झा 'सरस' बेवस्था- डॉ. कुलधारी सिंह	श्री राजमोहन झा, उद- जयधारी सिंह	30. काजे तोहर भगवान	शैलेन्द्र आनन्द
36.	अन्दौली	20.10.1999	कमलेश झा	श्री चन्द्रभानु सिंह	-	-
37.	जनकपुर	25.03.2000	रमेश रंजन	डॉ. धीरेन्द्र, उद- डॉ. राजेन्द्र विमल	-	-
38.	काठमांडू	25.06.2000	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	डॉ. रामानन्द झा 'रमण', उद- महेन्द्र कुमार मिश्र, सांसद	31. मकड़ी	प्रदीप बिहारी
					32. मिथिलांचलक लोक कथा	गंगा प्रसाद अकेला
					33. शिरीषक फूल- अनुवाद	गंगा प्रसाद अकेला
					34. हम मैथिल छी- कैसेट	सियाराम झा 'सरस'
					35. मंडनमिश्र अद्वैत मीमांसा	रमेश/ दीनानाथ/ सुरेन्द्रनाथ
39.	धनबाद	21.10.2000	श्याम दरिहरे एवं रामचन्द्र लालदास	राजमोहन झा, उद- कीर्तिनारायण मिश्र	36. मनक आड़ नमे ठाढ़	डॉ. भीमनाथ झा
40.	बिटठो	21.01.2001	डॉ. अक्क, बेवस्था- प्रो.विद्यानन्द झा	श्री बलराम, उद. कुलानन्द मिश्र	37. मातवर	अशोक
					38. दृष्टिकोण	सुरेन्द्रनाथ
41.	हटनी (घोघरडीहा)	19.05.2001	प्रो. योगानन्द झा/ अजित कु.आजाद	श्री सामदेव	-	-
42.	बोकारो	25.08.2001	गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर', बेवस्था- मिथिला सा. परिषद्	श्री दयानाथ झा, उद- हरेकृष्ण झा	39. निष्प्राण स्वप्न	दयाकान्त झा
					40. मिथिला दर्पण(1925/2001)	पुण्यानन्द झा, सं. रमानन्द झा 'रमण'
43.	पटना (किरणजयंती)	01.12.2001	अशोक, बेवस्था- चेतना समिति, पटना	श्री सोमदेव	41. प्रलाप	गोविन्द झा
					42. युगान्तर	विश्वनाथ
					43. एकैसम शताब्दीक घोष्णा पत्र.	रमेश/ श्याम दरिहरे/ मोहन यादव
44.	राँची	13.04.2002	कुमार मनीष अरविन्द	श्री साकेतानन्द, उद- परमानन्द मिश्र	44. चानन घन गछिया	विवेकानन्द ठाकुर
					45. शुभास्ते पन्थानः	परमान्द मिश्र
45.	भागलपुर	24.08.2002	धीरेन्द्र मोहन झा	श्री योगीराज, उद- डॉ. बेचन	46. कथा सेतु	सं. प्रशान्त
					47. पृथा	नीता झा
					48. आउ, किछु गप्प करी	कुलानन्द मिश्र
46.	विद्यापति भवन पटना	16.11.2002	अजित कुमार आजाद	श्री मोहन भारद्वाज उद- राजनन्दन लाल दास	49. काठ	विभुति आनन्द
					50. एक फाँक रौद	योगीराज
					51. तीन रंग तेरह चित्र	सुधाकर चौधरी
					52. उदयास्त	धूमकेतु
					53. साँझक गाछ	राजकमल,सं.देवशंकर नवीन
					54. सर्वस्वांत	साकेतानन्द
					55. अभियुक्त	राजमोहन झा
					56. यात्री समग्र	सं. शोभाकान्त

					57. मैथिली बाल साहित्य	दमन कुमार झा
					58. The Colonial Periphery Imaging Mithila (1875-1955)	पंकज कुमार झा
					59. मैथिल समाज पत्रिका, नेपाल	सं. धीरेन्द्र प्रेमर्षि
47.	कोलकाता	22.01.2003	कर्णगोष्ठी, कोलकाता	डॉ. रमानन्द झा 'रमण' उद- रमानन्द रेणु	60. आत्मालाप	गोविन्द झा
48.	खुटौना	07.06.2003	डॉ. महेन्द्र नारायण राम	सोमदेव/उद-. डॉ. खुशीलाल झा एवं रामलोचन ठाकुर	61. लाख प्रश्न अनुत्तरित	रामलोचन ठाकुर
49.	बेनीपुर	20.09.2003	कमलेश झा	डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' उद- प्रो. रामसुदिष्ट राय 'व्याधा'	-	-
50.	दरभंगा	21.02.2004	डॉ. अशोक कुमार मेहता	श्री गोविन्द्र झा उद- चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	62. दिदबल	प्रभास कुमार चौधरी
					63. चितकावर	हंशराज
					64. गंगा	यन्त्रनाथ मिश्र
					65. बाबाक विजया	उमाकान्त
					66. सरिसब मे भूत	श्याम दरिहरे
					67. गहवर	डॉ. महेन्द्र नारायण राम
					68. हाथी चलय बजार	डॉ. देवशंकर नवीन
					69. उगैत सूर्यक धमक	सियाराम झा 'सरस'
					70. आदमी कें जोहैत	कीर्तिनारायण मिश्र
					71. ओना कहबा लेल बहुत किछु हमरा लग	कुलानन्द मिश्र
					72. गाछ झूलझूल	जीवकान्त
					73. खंजन नयन निरंजन	अनंत बि.लाल. 'इन्दु'
					74. हम भेटब	मार्कण्डेय प्रवासी
					75. चिन्तन प्रवाह	धीरेन्द्रनाथ मिश्र
					76. दुर्वासा	जयनारायण यादव
					77. पाथर पर दुभि	रमेश
					78. कोशी घाटी सभ्यता	रमेश
					79. जागि गेल छी	महेन्द्र राम
					80. हमरा मोनक खंजन चिड़ैया	फूलचन्द्र मिश्र 'प्रवीण'
					81. जयमाला	जयानन्द मिश्र
					82. माटिक आवाज	मंजर सुलेमान
					83. इजोरियरक अंगैठी मोर	सं. माला झा
					84. बेसाहल	रमानन्द झा 'रमण'
					85. यदुवर रचनावली	रमानन्द झा 'रमण'
					86. सगर राति दीप जरयक इतिहास	रमानन्द झा 'रमण'
					87. अभिज्ञा	फूल चन्द्र मिश्र 'रमण'
					88. विमर्श	भीमनाथ झा
					89. स्मरणक संग	विभूति आनन्द
					90. कथा काव्य आ द्वादसी	अरूण कुमार कर्ण
					91. तात्पर्य	अशोक कुमार मेहता
					92. हेमलेट	प्रो. रमाकान्त मिश्र
					93. लोरिक मनियार	चन्द्रेश
					94. कनुप्रिया	अनु. श्याम दरिहरे
					95. मन्दाकिनी	प्रभाष कुमार चौधरी
					96. सीता व्याथा कथा	अनन्त बि. लाल दास 'इन्दु'
					97. नागार्जुन के उपन्यास	मोहित ठाकुर
					98. Sesected Poems of Jee	मुरारि मधुसुदन ठाकुर
					99. अंतरंग हिन्दी पत्रिका मैथिली विशेपांक	सं. प्रदीप बिहारी

51.	जमशेदपुर	10.07.2004	डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी	श्री सुरेन्द्र पाठक उद- राजनन्दनलाल दास मु. अति. सत्यनारायण लाल	-	-
52.	राँची	02.10.2004	विवेकानन्द ठाकुर	डॉ. रमानन्द झा 'रमण' उद- राजनन्दन लाल दास	100. स्वास स्वास मे विश्वास 101. सम्पर्क-4	विवेकानन्द ठाकुर स. सियाराम झा 'सरस'
क्र.सं.	स्थान	तिथि	संयोजक	अध्यक्षता/उद्घाटन	पोथी लोकार्पण	लेखक/लेखिका
53.	देवघर	08.01.2005	श्याम दरिहरे एवं अविनाश	श्री दयानाथ झा उद- यन्त्रनाथ मिश्र	-	-
54.	बेगूसराय	09.04.2005	प्रदीप बिहारी	श्री रामलोचन ठाकुर उद- सत्यनारायण लाल	102. भजारल 103. सरोकार 104. औरत 105. अन्तरंग पत्रिका	डॉ. रमानन्द झा 'रमण' प्रदीप बिहारी मेनका मल्लिक स. प्रदीप बिहारी
55.	पूर्णियाँ	20.06.2005	रमेश	श्री साकेतानन्द	-	-
56.	पटना	03.11.2005	अजीत कुमार आजाद	डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' उद- गोविन्द झा	106. अतीतालोक 107. गामक लोक 108. मैथिली कविता संचयन 109. मैथिली कथासंचयन ने.बु.ट्र. 110. बड़ अजगुत देखल 111. किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प	गोविन्द झा शिवशंकर श्रीनिवास सं. गंगेश गुंजन सं. शिवशंकर श्रीनिवास शरदिन्दु चौधरी कीर्तिनाथ झा
57.	जुनकपुर (नेपाल)	12.08.2006	रमेश रंजन	श्री महेन्द्र मलंगिया, डॉ. 'रमण' उद- डॉ. रेवती रमण लाल	-	-
58.	जयनगर	02.12.2006	श्री नारायण यादव	डॉ. कमलकान्त झा, उद- श्री रामदेव पासवान, मु.अ. भगीरथप्रसाद अग्रवाल	-	-
59.	बेगुसराय	10.02.2007	प्रदीप बिहारी	नवीन चौधरी	112. स्नेहलता	डॉ. योगानन्द झा
60.	सहरसा	21.07.2007	किसलय कृष्ण	डॉ. रमानन्द झा 'रमण' डॉ. मनोरंजन झा	113. अक्षर आर्केस्ट्रा	अनु- प्रदीप बिहारी
61.	सुपौल-2	01.12.2007	अरविन्द ठाकुर	अंशुमान सत्यकेतु डॉ. धीरेन्द्र धीर	114. अन्हारक विरोधमे	अरविन्द ठाकुर
62.	जमशेदपुर	03.05.2008	डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी	विवेकानन्द ठाकुर विद्यानाथ झा 'विदित'	-	-
63.	राँची	19.07.2008	कुमार मनीष अरविन्द	विवेकान्द ठाकुर/ डॉ. रमण उद- डॉ. विदित	115. समय शिलापर	सुरेन्द्रनाथ
64.	रहुआ संग्राम	08.11.2008	डॉ. अशोक अविचल	डॉ. रमण/डॉ. श्री शिवशंकर निवास उद- उग्रनारायण मिश्र 'कनक'	116. भिन्न-भिन्न अभिन्न 117. अन्तर ध्वनि 118. माइक चिट्ठी 119. ई भेटल तँ की भेटल 120. बुद्ध का दुख और मेरा	डॉ. रमण झा सुशीला झा अर्धनारीश्वर तारानन्द वियोगी तारानन्द वियोगी
65.	पटना कथा गंगा-3	21.02.2009	अजित कुमार आजाद/ चेतना समिति	अशोक प्रो. विजय बहादुर सिंह	121. गजल हमर हथियार थिक 122. कोढ़िया घर स्वाहा 123. टावर चौकसँ 124. मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा 125. हुगली उपर बहैत गंगा	सुरेन्द्रनाथ ऋषि बशिष्ट डॉ. भीमनाथ झा डॉ. रेवती रमण लाल राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'
66.	मधुबनी	30.05.2009	दिलीप कुमार झा	हीरेन्द्र कुमार झा डॉ. देवकान्त झा	126. घरमुहाँ 127. झुठपकड़ा मशीन	शैलेन्द्र आनन्द ऋषि बशिष्ट
67.	मानारायटोल नरहन-समस्तीपुर	05.09.2009	रमाकान्त रय 'रमा'	डॉ. रमानन्द झा 'रमण' डॉ. विपिन बिहारी ठाकुर	128. कविताक छाँहमे 129. कल्पनाक सागरमे 130. भाषा टीका 131. उद्वेलन (हिन्दी)	ललित कुमार झा ललित कुमार झा डॉ. विभूति आनन्द मुन्ना माधोपुरी

68.	सुपौल- 3	05.12.2009	अरविन्द ठाकुर	अशोक कुमार मेहता परमानन्द पाठक	132. मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य	डॉ. रमानन्द झा 'रमण'
					133. कहाँ गये मेरे उगना	उषा किरण खान
69.	जनकपुर	03.04.2010	राजाराम सिंह 'राठौर'	डॉ. रामानन्द झा 'रमण' उद- डॉ. रामावतार यादव	134. मिथिलाक बेटी (नाटक)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					135. मौलाइल गाछक फूल(उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					136. हम पुछैत छी (काव्य)	विनीत उत्पल
					137. अर्चिस (काव्य)	ज्योति सुनित चौधरी
					138. भाग रौ आ बलचन्द्रा	विभारानी
					139. नताशा (कौमिक्स)	देवांशु बत्स
					140. मैथिली कथा संग्रह	सं. रेवती रमण लाल
					141. विदेह मैथिली पद्य	सं. गजेन्द्र ठाकुर/उमेश मण्डल
					142. नेपथ्य	सं. रेवती रमण लाल
					143. विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबंध	सं. गजेन्द्र ठाकुर/उमेश मण्डल
					144. विदेह मैथिली लघु कथा	सं. गजेन्द्र ठाकुर/उमेश मण्डल
70.	कबिलपुर (दरभंगा)	12.06.2010	डॉ. योगानन्द झा	डॉ. रामदेव झा उद- चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'/ श्री शंकर झा विशेष अतिथि- डॉ. रमानन्द झा 'रमण'	145. मैथिली भाषा साहित्य 20म श.	प्रेमशंकर सिंह
					146. पिलपिलहा गाछ	मुरलीधर झा
					147. उत्थान-पतन (उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					148. जिनगीक जीत (उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					149. गामक जिनगी (लघु कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					150. गोनू झा आ आन मै. चि.कथा	प्रीति ठाकुर
					151. अमरजीक साहित्यमे हास्य-व्यंग्य	भाग्यनारायण झा
					152. विधकरी	विद्यानाथ झा 'विदित'
					153. मैथिली चित्रकथा	प्रीति ठाकुर
					154. मिथिलाक पंजी प्रबन्ध	सं. गजेन्द्र ठाकुर
					155. खसल	मनमोहन झा
					156. जमीनमे फुटै छै अंकुर	दयानन्द मिश्र
					157. हमरो लेने चलू	अमरनाथ चौधरी
					158. पक्षधर	शीतांशु काश्यप
					159. उचाट	आशा मिश्र
					160. कथा लोक कथा	योगानन्द झा
					161. समाचार कथा	धीरेन्द्रनाथ मिश्र
					162. भारती	वीणा ठाकुर
71.	बेरमा (झंझारपुर) स्थान- मध्य विद्यालय परिसर- बेरमा। (सार्वजनिक स्थलपर)	02.10.2010	जगदीश प्रसाद मण्डल ब्रेवस्था- स्थानीय साहित्य प्रेमी	डॉ. तारानन्द 'वियोगी' उद- उग्रनारायण मिश्र 'कनक'	163. निबन्ध तरंग	श्रीपति सिंह
					164. प्रलय रहस्य	तारानन्द 'वियोगी'
					165. जीवन-मरण (उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					166. तरेगन	जगदीश प्रसाद मण्डल
					167. जीवन-संघर्ष (उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					168. अलका	कमलकान्त झा
72.	सुपौल	04.12.2010	अरविन्द ठाकुर	डॉ. रमानन्द झा 'रमण' उद- डॉ. शचीन्द्रनाथ महतो	169. एकहि पच्छ इजोर	जीवकान्त
73.	महिषी कथा राजकमल	05.03.2011	विजय महापात्र	अरविन्द ठाकुर उद- साकार यादव, स्वामी रमेशानन्दजी महाराज	170. अघोषित युद्ध की भूमिका	मू. अजित कुमार आजाद
					171. कुदरत बेहुस्न नहीं हुइ है (उर्दू)	मू. अजित कुमार आजाद
74.	हजारीबाग	10.09.2011	श्याम दरिहरे	डॉ. रमानन्द झा 'रमण'	172.Survey of Maithili lite.	प्रो. राधाकृष्ण चौधरी
					173. मिथिलाक इतिहास	प्रो. राधाकृष्ण चौधरी
					174. धुंध के वाबजूद	अजित आजाद
					175. परती टूट रही है	मू. अजित आजाद
					176. कठिन समयमे शब्द	मू. अ.कु. सिन्हा
					177. कलानिधि	कालीकान्त झा 'बूच'
					178. रहए चाहैछ गाछ	जीवकान्त

75.	पटना हीरक जयन्ती	10.12.2011	अशोक एवं कमलमोहन 'चुन्नु'	श्री उग्रनारायण मिश्र 'कनक'	179. जुबैदा	उग्र ना. मिश्र 'कनक'
					180. समय साक्षी थिक	अनमोल झा
					181. गंगा नहौन	निशाकर
					182. बेटीक अपमान	बेचन ठाकुर
					183. अनचिन्हार आखर	आशीष अनचिन्हर
					184. सीतावरण	मू.सनेहलता, सं.योगानन्दझा
					185. गाममे	अनु प्रदीप बिहारी
					186. निबन्ध सुधा	सुधा कुमारी
					187. जखन-तखन (प्रेम क.वि.)	सं. विभूति आनन्द
					188. विहनि कथाक पो. प्रदर्शनी	मुन्नाजी
					189. ऐ अकाबोनमे	राज
					190. कोशी कातक गंगा	साकेतानन्द
					191. जेना जनलियनि	महेन्द्र नारायण राम
76.	चेन्नै	14.07.2012	विभा रानी	श्री रमानन्द झा 'रमण' उद- चन्द्रकान्ता गरियारी (IAS)	192. हिआओल	रमानन्द झा 'रमण'
77.	दरभंगा किरण जयन्ती	01.12.2012	अरविन्द ठाकुर	डॉ. भीमनाथ झा उद- राकेश कुमार मिश्र (IPS)	193. सी.डी. (37 गोट पोथीक)	श्रुति प्रकाशन दिल्लीसँ प्रकाशनाधिन विभिन्न रचनाकारक पोथी
78.	घनश्यामपुर	09.03.2013	कमलेश झा	श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, उद- डॉ. रमण, म.सं- डॉ. अशोक मेहता	194. वर्णित रस (कविता संग्रह)	उमेश पासवान (औरहा)
79.	औरहा (लौकही) (सार्वजनिक स्थलपर)	15.5.2013	उमेश पासवान	श्री जगदीश प्रसाद मण्डल/ रामचन्द्र पासवान उद- श्री लक्ष्मी नारायण सिंह (औरहा निवासी)	195. विदेह विहनि कथा, वि-स;5	सं. गजेन्द्र ठाकुर/ उमेश मण्डल
					196. विदेह मैथिली प्र.-नि.स.	सं. गजेन्द्र ठाकुर/ उमेश मण्डल
					197. विदेह मैथिली लघु कथा- 6	सं. गजेन्द्र ठाकुर/ उमेश मण्डल
					198. विदेह नाट्य उत्सव,वि-स;8	सं. गजेन्द्र ठाकुर/ उमेश मण्डल
					199. विदेह मैथिली शिशु उत्सव	सं. गजेन्द्र ठाकुर/ उमेश मण्डल
					200. विदेह मैथिली पद्य वि.स; 7	सं. गजेन्द्र ठाकुर/ उमेश मण्डल
80.	निर्मली (स्थान- मानिक राम-बैजनाथ बजाज धर्मशाला, सुभाष चौक, निर्मली- सुपौल)	30.11.2013	उमेश मण्डल **बेवस्था-** स्थानीय साहित्य प्रेमी एवं साहित्यकार, **विशेष सहयोग-** श्री धीरेन्द्र कुमार राय, श्री विनोद कुमार साह, श्री अखिलेश कुमार 'चिन्टुजी'; श्री अभिषेख पंसारी, श्री सीता राम चौधरी, श्री सुरेश कुमार महतो, श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री खड़ानन्द यादव, श्री रामदयाल भ्रमर, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' श्री राहुल कुमार	**अध्यक्ष-** डॉ. अशोक अविचल एवं डॉ. रामाशीष सिंह (प्राचार्य, ह.प्र.सा.म.वि.नि.) **उद्घाटन-** श्री सतीश साह (विधायक), श्री अरूण कुमार सिंह (अनुमण्डल पदाधिकारी), श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. अशोक अविचल। डॉ. रामाशीष सिंह (प्राचार्य) **मंच संचालक-** कथा सत्र- श्री दुर्गानन्द मण्डल **लोकार्पण सत्र-** उमेश मण्डल	201. देवीजी (बाल निबन्ध)	ज्योति झा चौधरी
					202. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक (विविधा)	गजेन्द्र ठाकुर
					203. अंग्रजी-मैथिली शब्दकोष	गजेन्द्र ठाकुर एवं अन्य
					204. मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोष-2	गजेन्द्र ठाकुर एवं अन्य
					205. बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					206. तरेगन (दोसर संस्करण)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					207. सखारी-पेटारी (लघु कथा)	नन्द विलास राय
					208. उलबा-चाउर (लघु कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					209. अर्द्धांगिनी (लघु कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					210. सतभैंया पोखरि (लघु कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					211. भकमोड़ (लघु कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					212. शम्भुदास (दीर्घ कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					213. बसुन्धरा (कविता)	राजदेव मण्डल
					214. राति-दिन (कविता)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					215. रथक चक्का उलटि चलै बाट	राम विलास साहु
					216. निश्तुकी (कविता संग्रह)	उमेश मण्डल
					217. इन्द्रधनुषी अकास (कविता)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					218. प्रतिक (कविता)	मनोज कुमार कर्ण 'मुन्नाजी'
					219. कियो जानि नै सकल हमरा	ओम प्रकाश झा
					220. माझ आँगनमे कतियाएल छी	मनोज कुमार कर्ण 'मुन्नाजी'
					221. मोनक बात (गजल)	चन्दन झा
					222. अंशु (गजल)	अमित मिश्र
					223. गीतांजलि (गीत)	जगदीश प्रसाद मण्डल

					224. तीन जेठ एगारहम माघ	जगदीश प्रसाद मण्डल
					225. सरिता (गीत संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					226. सुखाएल पोखरिक जाइठ	जगदीश प्रसाद मण्डल
					227. हमरा बिनु जगत सुना छै	रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
					228. क्षणप्रभा (पद्य)	शिवकुमार झा 'टिल्लू'
					229. पाखलो (कोंकणी, उपन्यास)	अनु शम्भु कुमार सिंह
					230. रिहर्सल (नाटक)	रवि भूषण पाठक
					231. बिसवासघात (नाटक)	बेचन ठाकुर
					232. बाप भेल पित्ती आ अधिकार	बेचन ठाकुर
					233. रत्नाकर डकैत (नाटक)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					234. स्वयंवर (नाटक)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					235. पंचवटी (एकांकी संचयन)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					236 कम्प्रोमाइज (नाटक)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					237. झमेलिया बिआह (नाटक)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					238. हमर टोल (उपन्यास)	राजदेव मण्डल
					239. जीवन-संघर्ष (दो. संस्करण)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					240. बड़की बहिन (उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					241. जीवन-मरण (दो.संस्करण)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					242. नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					243. सहत्रबाढ़नि (ब्रेल लिपिमे)	गजेन्द्र ठाकुर
					244. जगदीश प्र. मण्डल(वायोग्राफी)	गजेन्द्र ठाकुर
					245. मध्य प्रदेशक यात्रा (संस्मरण)	ज्योति झा चौधरी
81.	देवघर (स्थान- बिजली कोठी, बम्पासटॉन, देवघर)	22.03.2014	ओम प्रकाश झा	**अध्यक्ष-** श्री जगदीश प्रसाद मण्डल **उद्घाटन-** श्री ओ.पी. मिश्रा, (अ.प्र. अभियंता, झारखण्ड सरकार) **मंच संचालक-** श्री गजेन्द्र ठाकुर	246. अंशु (आलोचना)	शिवकुमार झा 'टिल्लू'
					247. मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोष-2	सं. गजेन्द्र ठाकुर
					248. ऊँच-नीच (नाटक)	बेचन ठाकुर
					249. अंग्रेजी-मैथिली शब्दककोष-1	सं. गजेन्द्र ठाकुर
					250. जीनियोलोजिकल मैपिंग-2	सं. गजेन्द्र ठाकुर
					251. जीनोम मैपिंग (मि. पंजी प्रबन्ध)	सं. गजेन्द्र ठाकुर
82.	मेंहथ (झंझारपुर) **कुथा बौध सिद्ध मेंहथपा**	31.05.2014	गजेन्द्र ठाकुर	**अध्यक्ष-** श्री अरविन्द ठाकुर **उद-** श्री जगदीश प्रसाद मण्डल डॉ. कमलकान्त झा श्री शिवकुमार मिश्र **स्वागत-** श्री काशीकान्त झा 'किरण' **मंच संचालन-** श्री उमेश मण्डल एवं श्री आनन्द कुमार झा	252. बैशाखमे दलानपर (गद्य-पद्य)	संदीप साफी
					253. नेपालक नोर मरुभूमिमे	विन्देश्वर ठाकुर
					254. उलहन (वि/ल.सं)	कपिलेश्वर राउत
					255. On the Dice Bord of the Millennium	अनु- ज्योति झा चौधरी गजेन्द्र ठाकुर
					256. सहस्त्राविदिक चौपड़पर (प.सं)	Gajendra Thakur
					257. The Science of Words (Short Story)	गजेन्द्र ठाकुर
					258. धांगि बाट बनेबाक दाम अगुवार पेने छैं (गजल)	गजेन्द्र ठाकुर
					259. सहस्त्रजित (पद्य संग्रह)	गजेन्द्र ठाकुर
					260. कुरुक्षेत्रम् प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना-2	गजेन्द्र ठाकुर

83.	**सखुआ-भपटियाही सार्वजनिक स्थान-** उत्क्रमित मध्य विद्यालयल परिसर।	30.08.2014	**नन्द विलास राय,** फागुलाल साहु, सूरज नारायण राय 'सुमन' **बेवस्था-** स्थानीय विद्वतजन **विशेष सहयोग-** डॉ. विमल कुमार राय, श्री धीरेन्द्र कुमार, श्री सूरज नारायण राय, श्री अशोक कुमार राय, श्री सुन्दर लाल साह, मो. रिजवान, श्री सियाराम साह, श्री शम्भू सिंह, श्री यादव, श्री उमाकान्त राय, श्री जगत नारायण राय, श्री ब्रजनन्दन साहु, श्री उमेश साह, श्री सुधीर साहु, श्री रामकुमार मण्डल, श्री सत्य नारायण सिंह आ श्री लक्ष्मी मण्डल, उमेश मण्डल तथा श्री गजेन्द्र ठाकुर।	**अध्यक्ष मण्डल-** डॉ. विमल कुमार राय, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री कमलेश झा आ डॉ. शिव कुमार प्रसाद **उद-** डॉ. विमल कुमार राय, श्री सुरज नारायण राय, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री ओम प्रकाश झा **संचालन समिति-** श्री ओम प्रकाश झा, श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री राजदेव मण्डल आ उमेश मण्डल	261.सुखलमन तरसल आँखि 'सॉ.कॉ.	मुन्नी कामत
					262. "कथा कुसुम" (क. संग्रह)	दुर्गानन्द मण्डल
					263. "भोंट" (नाटक)	बेचन ठाकुरक
					264. "पंचैती" (पटकथा)	राजदेव मण्डल
					265. "जाल" (पटकथा)	राजदेव मण्डल
					266. "अपन-बिरान" (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					267. "पतझाड़" (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					268. "रटनी खढ़" (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					269. "बाल-गोपाल" (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					270. "लजबिजी" (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					271. "संत करु खिरहरि" (जीवनी)	अयोधी यादव 'अमर'
					272. "कारु खिरहरि"	अयोधी यादव 'अमर'
84.	**बेरमा** मध्य विद्यालय परिसर (बेरमा,मधुबनी)	20.12.2014	शिवकुमार मिश्र बेवस्था- स्थानीय साहित्यकार एवं साहित्य प्रेमी	**अध्यक्ष मण्डल-** शिव कुमार प्रसाद, श्यामानन्द चौधरी, सच्चिदानन्द 'सचिद'। **संचालन समिति-** दुर्गानन्द मण्डल, ओम प्रकाश झा, उमेश मण्डल **उद्घाटनकर्ता-** श्यामानन्द चौधरी, जगदीश प्रसाद मण्डल, पं. सच्चिदानन्द मिश्र 'सचिद'	273. डीहक जमीन (कथा संग्रह)	ओम प्रकाश झा
					274 समरथाइक भूत (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					275 गामक शकल-सूरत (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					276 अप्पन-बीरान (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					277. बाल-गोपाल (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					278. लजबिजी (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					279. पतझाड़ (लघु कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					280. रटनी खढ़ (दी.क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					281. शिव दर्शन (पद्य)	पं. सच्चिदानन्द मिश्र
					282. अभिलाषा (भजनमाला)	पं. सच्चिदानन्द मिश्र
					283. मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (सी.डी.)	सं.सं- गजेन्द्र ठाकुर, आशीष अनचिन्हार
					284. सखुआवाली (सी.डी.)	सं.सं- उमेश मण्डल
					285. निर्मल सनेस (सी.डी.)	सं.सं- उमेश मण्डल
					286. देवघरक प्रसाद (सी.डी.)	सं.सं- उमेश मण्डल
					287. कथा बौद्धसिद्ध मेहथपा- सी.डी.	सं.सं- विदेह ग्रुप
85.	भागलपुर 'श्याम कुंज' (द्वारिकापुरी भागलपुर)	04.04.2015	ओम प्रकाश झा	जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, श्री डॉ. केष्कर ठाकुर, श्री विवेकानन्द झा 'बीनू' श्री राजदेव मण्डल, श्री श्यामानन्द चौधरी। **संचालन समिति-** श्री दुगानन्द मण्डल, श्री पंकज कुमार झा एवं उमेश मण्डल।	288. अपन मन अपन धन (क. सं.)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					289. उकडू समय (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
86.	**लकसेना**	20.06.2015	राजदेव मण्डल 'रमण'	उ- डॉ. खुशीलाल मण्डल,	290. पसेनाक धरम (ल.क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					291. मधुमाछी (लघु कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल

	उनमुक्त आश्रमक गांधी सभा कक्ष जिला- मधुबनी			डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री भोगेन्द्र यादव 'भाष्कर', श्री कमलेश झा। अ- श्री दुर्गानन्द मण्डल (बनरझूला), डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री जगदीश प्रसाद मण्डल।		
87.	श्यामा रेसिडेन्सी कॉम विवाह हॉल (एस.बी.आइ. कैम्पस) निर्मली (सुपौल)	19.09.2015	संयोजक. उमेश मण्डल, आयोजक: निर्मलीक स्थानीय साहित्य प्रेमी आ साहित्यकार।विशेष सहयोग: श्री सत्य नारायण प्रसाद साहु, श्री नारायण प्रसाद सिंह, श्री पिंकु पंसारी, श्री राम प्रकाश साहु, श्री प्रभाष कुमार कामत, श्री देवेश कुमार सिंह, श्री मनोज कुमार शर्मा, श्री रामनाथ गुप्ता, श्री राम लखन भण्डारी, श्री अखिलेश चौधरी, श्री राम सुन्द्रर साहु, प्रो. धीरेन्द्र कुमार तथा डॉ. विमल कुमार राय। श्री विनोद कुमार, श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव, श्री सुरेश महतो।	उद्घाटन : संयुक्त रूपे- डॉ. दुर्गा प्रसाद साहु, डॉ. राम अशीष सिंह, डॉ. विमल कुमार राय, श्री सुशील कुमार, श्री सत्य नारायण प्रसाद साहु, श्रीमती आशा देवी तथा प्रो. विलम कुमार राय। अध्यक्ष मण्डल- श्री नन्द विलास राय, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राम विलास साहु, प्रो. हेम नारायण साहु। स्वागत गीत : रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'। **स्वागत भाषण :** डॉ शिव कुमार प्रसाद, डॉ श्री मोहन झा।	292. गुड़ा खुद्दीक रोटी (कथा) 293. फलहार (कथा संग्रह) 294. लजबिजी(अगिला संस्करण) 295. गामक शकल-सुरत (कथा) 296. जाल (पटकथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल राजदेव मण्डल
88.	मध्य विद्यालय- डखराम (बेनीपुर)	30.01.2016	आयो. श्री अमर नाथ झा संयो. कमलेश झा	उद्घाटन : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, श्री राजदेश मण्डल, फागु लाल साहु, उमेश पासवान, शारदा नन्द सिंह, नन्द विलास राय, उमेश नारायण कर्ण। **स्वागत गीत :** राधाकान्त मण्डल	297. ठूठ गाछ (उपन्यास) 298. एगच्छा आमक गाछ (कथा)	जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल
89.	लौकही स्थान: सूर्य प्रसाद उच्च विद्यालय- लौकही	26.03.2016	संयोजक : उमेश पासवान एवं प्रेम कुमार साहु	उद्घाटन: श्री रामचन्द्र चौपाल, श्री राजदेव मण्डल 'रमण', श्री लक्ष्मी ना. सिंह, शम्भू सौरभ, अध्यक्ष मण्डल: श्री जदीश प्रसाद मण्डल, रवि कुमार एवं शम्भू सौरभ, राजदेव मण्डल। मंच संचालन : श्री उमेश मण्डल, श्री नन्द विलास राय, श्री दुर्गानन्द मण्डल।	299. चन्द्रमणि (काव्य संग्रह) 300. शुभचिन्तक (ल.क. संग्रह)	उमेश पासवान जगदीश प्रसाद मण्डल

90.	लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी)	18.06.2016	संयो. राम विलास साहु आयो. लक्ष्मीनियाँ गामक समस्त साहित्य प्रेमी।	उद/अ. श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री अरविन्द ठाकुर, डॉ. शिव कुमार प्रसाद	301. गाछपर सँ खसला (क.संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					302. डभियाएल गाम (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					303. अंकुर (क. संग्रह)	राम विलास साहु
91.	गोधनपुर (मिथिला दीपसँ उत्तर) जिला- मधुबनी	24.9.2016	संयोजक : दुर्गानन्द मण्डल	उद्घाटन: सम्मिलित रूपे अध्यक्ष मण्डल: डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, श्री राजदेव मण्डल मंच संचालन : संजीव कुमार समा, अजीत कुमार आजाद, नन्द विलास राय, उमेश मण्डल	304. कथा कुसुम (क. संग्रह)	दुर्गानन्द मण्डल
					303. गुलेती दास (क. संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
92.	नवानी (मधुबनी)	31.12.2016	अजय कुमार दास 'पिन्टु'	उद्घाटन : श्रीमती कुमकुम झा, श्री रघुवीर मोची, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री मनीकान्त दास इत्यादि। अध्यक्ष मण्डल : श्री रघुवीर मोची, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. शिव कुमार प्रसाद मंच संचालन- श्री उमेश मण्डल, श्री दुगानन्द मण्डल, श्री आनन्द कुमार झा	304. मडियाएल घर (क.सं)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					305. भोँट (नाटक)	बेचन ठाकुर
93.	रतनसारा (घोघरडीहा) जिला- मधुबनी	25.03.2017	संयो. राजदेव मण्डल बेवस्थापक : स्थानीय साहित्यानुरागी (रतनसारा-मुसहरनियाँ)	उद्घाटन : श्री नारायण यादव, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियागी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल अध्यक्ष : श्री नारायण यादव, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियागी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल मंच संचालन : उमेश मण्डल, दुर्गानन्द मण्डल, नन्द विलास राय	306. बीरांगना (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					307. स्मृति शेष (कथा संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल
					308. सुखल मन तरसल आँखि	मुन्नी कामत
					309. जल भँवर (उपन्यास)	राजदेव मण्डल

94.	लौफा (मधेपुर) जिला- मधुबनी	24.06.2017	संयो. डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी आयो. स्थानीय साहित्यानुरागी लौफा (मधुबनी)	उद्घाटन : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री अरविन्द्र ठाकुर, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, डॉ. योगानन्द झा। अध्यक्ष : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री अरविन्द्र ठाकुर, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, डॉ. योगानन्द झा', श्री नारायण यादव। संचालक : डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, उमेश मण्डल, दुर्गानन्द मण्डल	310. रोबो (नाटक) 311. बेटीक पैरुख (कथा संग्रह) 312. क्रान्तियोग (कथा संग्रह) 313. कोसीक कछेर (काव्यसंग्रह) 314. नबघर (नाटक संचयन)	डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल राम विलास साहु बेचन ठाकुर
95.	जलसैन डुमरा (मधुबनी)	09.9.2017	संयो. श्री नारायण यादव	उद्घाटन : श्री राम लखन राम रमण, डॉ. कमलकान्ता झा अध्यक्ष : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल **मंच संचालक :** दुर्गान्द मण्डल	315. पुनर्नवा (कथा संग्रह) 316. नवकी पुतोहु (कथा सं.) 317. फूलवाइर (काव्य सं.) 318. त्रिकालदर्शी (कथा सं.)	कपिलेश्वर राउत नारायण यादव राम लषण राम 'रमण' जगदीश प्रसाद मण्डल
96.	धबौली (लोकही)	16.12.2017	संयो.श्री राधाकान्त मण्डल	उद्घाटन : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. शिव कुमार प्रसाद,श्री नारायण यादव, श्री तुरन्त लाल मण्डल, श्री उमेश नारायण कर्ण।	319. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- क.सं. 320. इज्जत गमा इज्जत गमेलौं- उप.	जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल
97.	बेरमा (लखनौर)	24.3.2018	संयो. श्री कपिलेश्वर राउत आयो. बेरमा ग्रामवासी	उद्घाटन/अध्यक्ष मण्डल : डॉ. कमलकान्त झा, डॉ. शिवकुमार प्रसाद, प्रो. सदरे आलम गौहर, प्रो. प्रीतम कुमार निषाद, श्री उमेश नारायण कर्ण, पत्रकार रतन कुमार रवि, श्री राजदेव मण्डल 'रमण', प्रो. मो. खलील। **मंच संचालन :** श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री नन्द विलास राय, उमेश मण्डल	321. हमर गाम (उपन्यास) 322. पंचदीप (काव्य संग्रह) 323. लहसन (उपन्यास) 323. सतबेध (काव्य संग्रह) 324. सुभिमानी जिनगी(क. संग्रह) 325. कम्प्रोमाइज (नाटक, ते. सं) 326. दोहरी हाक (क.सं, दो.सं) 327. टुटैत मनक जुड़ाव (क.सं.)	डॉ. योगेन्द पाठक 'वियोगी' श्री कपिलेश्वर राउत जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल उमेश मण्डल
98.	सिमरा (झंझारपुर)	16.6.2018	सं. डॉ. शिव कुमार प्रसाद	उद्घाटन : श्री महावीर प्रसाद अध्य. डॉ.योगेन्द्र पा.'वियोगी' मंच संचालन : अनील ठाकुर, नन्द विलास राय, दुर्गानन्द मण्डल	328. कथा कुसुम (क.सं. ते.सं) 329. सोंहँति-अनसोंहँत (का. सं.) 330. पघलैत हिमखंड (अ.का.सं) 331. दुधबेचनी (कथा संग्रह) 332. मरजादक भोज 333. देखल दिन (कथा संग्रह) 334. पंगु (उपन्यास) 335. नमस्तस्यै (उपन्यास)	दुर्गानन्द मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद अनु. डॉ. शिव कुमार प्रसाद राम विलास साहु नन्द विलास राय जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल रबीन्द्र नारायण मिश्र

99.	मुरहद्दी (बड़की टोल)	22.09. 2018	प्रो. प्रीतम निषाद	उद्. श्री जगदीश प्र. मण्डल, आनन्द कुमार, श्री चण्डेश्वर खाँ, श्री डॉ. शिव कु. प्रसाद, श्री राम विलास साहु, श्री कमलेश झा	336. गपक पियाहुल लोक (क. सं) 337. विविध प्रसंग (प्र.नि.) 338. गावय मि.लो.प्रगीत (दो.सं.) 339. गामक सुख (पद्य संग्रह)	जगदीश प्रसाद मण्डल रबीन्द्र नारायण मिश्र प्रीतम कुमार 'निषाद' राम विलास साहु
100.	निर्मली (तेरापंथ भवन)	22_12_2018	सं. उमेश मण्डल एवं स्थानीय साहित्य प्रेमी एवं साहित्यकार **आयोजक :** नवरत्न वेंगानी (जैन इम्पोरियम- निर्मली)	उद्. अध्य: मंच सं. मुख्य अतिथि :	340. आमक गाछी (उपन्यास) 341. दिवालीक दीप 342. अप्पन गाम (क. संग्रह) 343. महराज (उपन्यास) 344. वापसी (एकांकी संग्रह) 345. मनक मैल (हैकू टनका संग्रह) 346. भरदुतिया (क. संग्रह) 347. छठिक डाला (पद्य संग्रह) 348. हमर चारू धाम (पद्य संग्रह) 349. चक्षु (आलोचना) 350. निवन्ध निकुंज (निवन्ध-प्रवन्ध) 351. गीतांजलि झारू (पद्य संग्रह) 352. खाली घर (क. संग्रह) 353. पंचदेव (कथा संकलन)	जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल रबीन्द्र नारायण मिश्र राजदेव मण्डल राम विलास साहु नन्द विलास राय नन्द विलास राय नन्द विलास राय दुर्गानन्द मण्डल डॉ. बचेश्वर झा रामदेव प्र. मं. 'झारूदार' नारायण यादव सं. उमेश मण्डल



नारायण यादव

लेखक परिचय

नाम : नारायण यादव

पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी।

जन्म : 14 जनवरी 1956

पिताक नाम : स्व. राजेश्वर यादव।

माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी।

दादाक नाम : स्व. भोला यादव।

नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सल्हैता। **जन्म स्थान :** डुमरा, **मूल गाम :** डुमरा, **पो.**-डुमरा, **भाया :** रूद्रपुर, **प्रखण्ड :** अन्धराठाढ़ी, **जिला**-मधुबनी (बिहार) **मातृक :** नरही, थाना : खुटौना, **पेशा :** अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आधारित जिनगी। **शिक्षा :** एम.ए. (मैथिली), **लेखन :** कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं. : 9939041116, 9430631993, 8541096004

सद्यः प्रकाशित कृति : खाली घर (कथा संग्रह)

प्रकाशित/अप्रकाशित अन्य कृति :

(1.) नाती दुसलक नानाकेँ (कविता संग्रह)

(2.) बाबा नाम केवलम (कथा संग्रह)

(3.) समझौता (कथा संग्रह)

(4.) नवकी पुतोहु (कथा संग्रह)

₹ 200



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

